Male

Model: C4,P6

SrNo: 101-108-101-1036 / 101 Date: 03/01/2017

लिंग	पुल्लिंग
जन्म तिथि	**17/09/1950**
दिन	रविवार
जन्म समय	**11:00:00 घंटे**
इष्ट	11:22:28 घटी
स्थान	**Mehsana**
राज्य	Gujarat
देश	India

अक्षांश	23:37:00 उत्तर
रेखांश	72:28:00 पूर्व
मध्य रेखांश	82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार	-00:40:08 घंटे
ग्रीष्म संस्कार	00:00:00 घंटे
स्थानिक समय	10:19:52 घंटे
वेलान्तर	00:05:16 घंटे
साम्पातिक काल	10:02:12 घंटे
सूर्योदय	06:27:00 घंटे
सूर्यास्त	18:42:20 घंटे
दिनमान	12:15:20 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन)	दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल)	उत्तर
ऋतु	शरद
सूर्य के अंश	00:35:30 कन्या
लग्न के अंश	01:09:41 वृश्चिक

चैत्रादि संवत / शक	2007 / 1872
मास	भाद्रपद
पक्ष	शुक्ल
सूर्योदय कालीन तिथि	6
तिथि समाप्ति काल	17:47:16
जन्म तिथि	6
सूर्योदय कालीन नक्षत्र	अनुराधा
नक्षत्र समाप्ति काल	00:09:25 घंटे
जन्म नक्षत्र	अनुराधा
सूर्योदय कालीन योग	विष्कुम्भ
योग समाप्ति काल	17:09:27 घंटे
जन्म योग	विष्कुम्भ
सूर्योदय कालीन करण	कौलव
करण समाप्ति काल	07:01:59 घंटे
जन्म करण	तैतिल

अवकहड़ा चक्र

लग्न–लग्नाधिपति	वृश्चिक – मंगल
राशि–स्वामी	**वृश्चिक – मंगल**
नक्षत्र–चरण	**अनुराधा – 2**
नक्षत्र स्वामी	शनि
योग	विष्कुम्भ
करण	तैतिल
गण	देव
योनि	मृग
नाड़ी	मध्य
वर्ण	विप्र
वश्य	कीटक
वर्ग	सर्प
युँजा	मध्य
हंसक	जल
जन्म नामाक्षर	नी–नीरज
पाया(राशि–नक्षत्र)	स्वर्ण – ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य)	कन्या

घात चक्र

मास	आश्विन
तिथि	1-6-11
दिन	शुक्रवार
नक्षत्र	रेवती
योग	व्यतिपात
करण	गर
प्रहर	1
वर्ग	गरूड़
लग्न	वृश्चिक
सूर्य	मकर
चन्द्र	वृष
मंगल	कुम्भ
बुध	वृश्चिक
गुरु	मीन
शुक्र	मेष
शनि	कर्क
राहु	वृष

ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			वृश्चि	01:09:41	315:05:27	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	मंगल	———
सूर्य			कन्या	00:35:30	00:58:33	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	सम राशि
चंद्र			वृश्चि	08:48:29	14:22:25	अनुराधा	2	17	मंगल	शनि	शुक्र	नीच राशि
मंगल			वृश्चि	00:55:47	00:40:45	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	मंगल	स्वराशि
बुध	व	अ	कन्या	00:47:05	01:02:47	उ०फाल्गुनी	2	12	बुध	सूर्य	राहु	मूलत्रिकोण
गुरु	व		कुंभ	06:35:41	00:06:32	धनिष्ठा	4	23	शनि	मंगल	चंद्र	सम राशि
शुक्र			सिंह	15:41:14	01:14:19	पू०फाल्गुनी	1	11	सूर्य	शुक्र	सूर्य	शत्रु राशि
शनि		अ	सिंह	29:39:05	00:07:30	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	राहु	शत्रु राशि
राहु			मीन	05:12:36	00:00:36	उ०भाद्रपद	1	26	गुरु	शनि	शनि	सम राशि
केतु			कन्या	05:12:36	00:00:36	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	शत्रु राशि
हर्ष			मिथु	15:57:27	00:01:29	आर्द्रा	3	6	बुध	राहु	शुक्र	———
नेप			कन्या	23:03:28	00:02:06	हस्त	4	13	बुध	चंद्र	सूर्य	———
प्लूटो			कर्क	25:44:44	00:01:34	आश्लेषा	3	9	चंद्र	बुध	राहु	———
दशम भाव			सिंह	05:13:20	--	मघा	--	10	सूर्य	केतु	मंगल	--

व – वक्री स – स्थिर
अ – अस्त पू – पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:10:07

लग्न–चलित

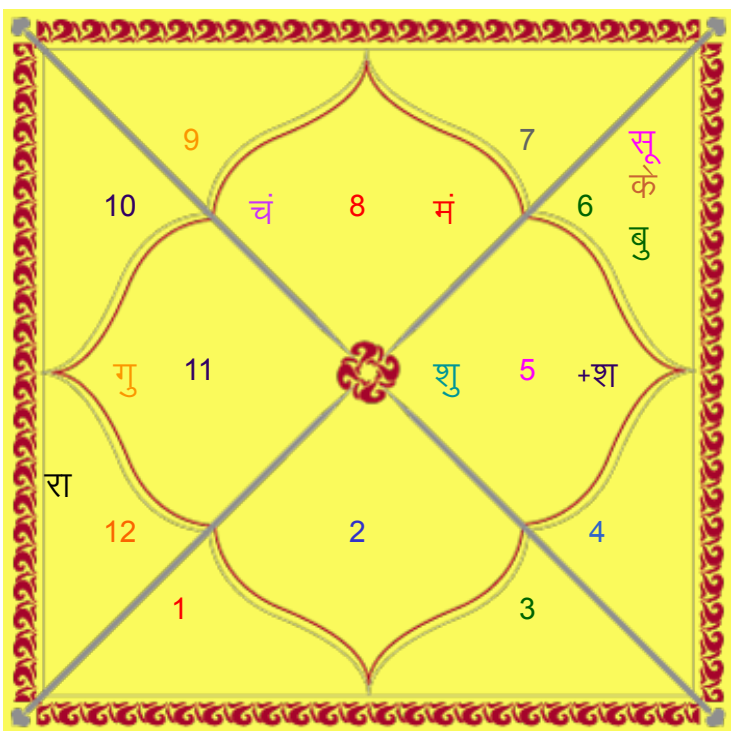

चन्द्र कुंडली

नवमांश कुंडली

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि		भाव मध्य	
1	तुला	16:50:18	वृश्चिक	01:09:41
2	वृश्चिक	16:50:18	धनु	02:30:54
3	धनु	18:11:31	मकर	03:52:07
4	मकर	19:32:44	कुम्भ	05:13:20
5	कुम्भ	19:32:44	मीन	03:52:07
6	मीन	18:11:31	मेष	02:30:54
7	मेष	16:50:18	वृष	01:09:41
8	वृष	16:50:18	मिथुन	02:30:54
9	मिथुन	18:11:31	कर्क	03:52:07
10	कर्क	19:32:44	सिंह	05:13:20
11	सिंह	19:32:44	कन्या	03:52:07
12	कन्या	18:11:31	तुला	02:30:54

निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	वृश्चिक	01:09:41
2	धनु	00:41:32
3	मकर	02:11:11
4	कुम्भ	05:13:20
5	मीन	07:23:46
6	मेष	06:07:19
7	वृष	01:09:41
8	मिथुन	00:41:32
9	कर्क	02:11:11
10	सिंह	05:13:20
11	कन्या	07:23:46
12	तुला	06:07:19

तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा	पू०भाद्रपद
उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा	पुनर्वसु
पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति	विशाखा

चलित कुंडली

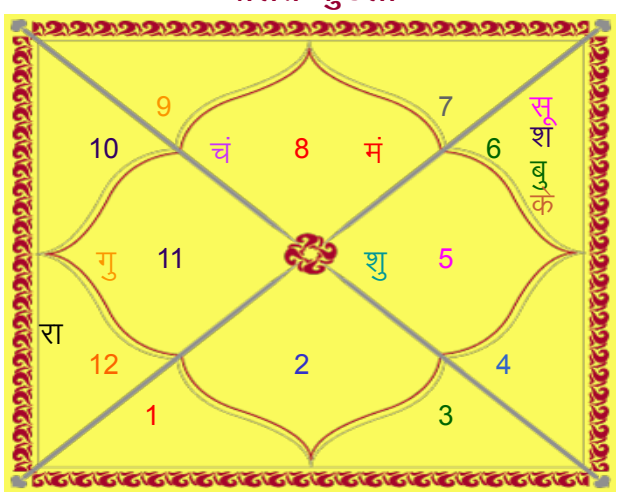

भाव कुंडली

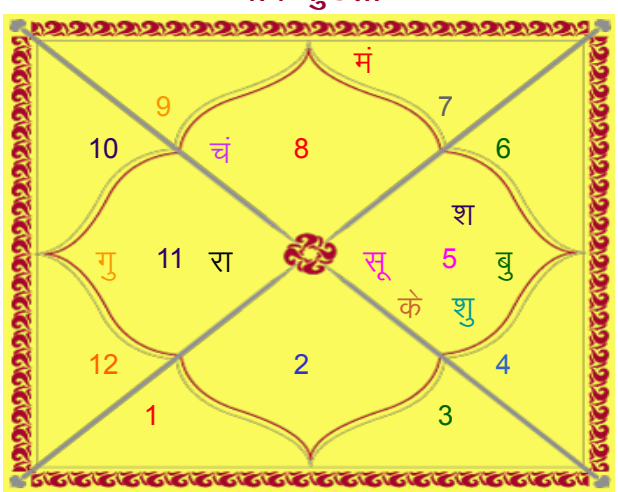

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

सुदर्शन चक्र

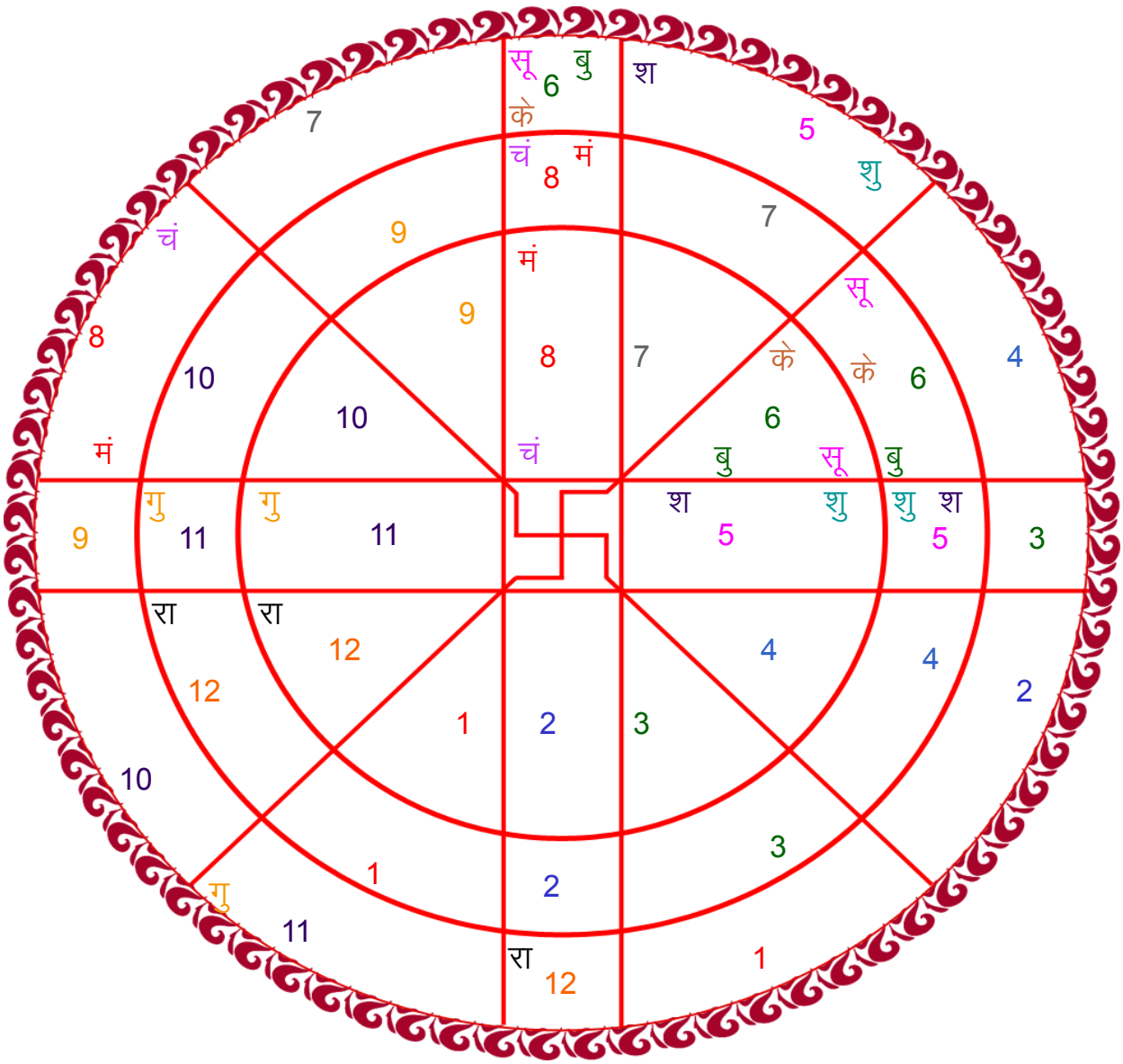

नोटः सुदर्शन चक्र क्रमानुसार बाहरी वृत से अन्तः वृत तक सूर्य, चन्द्र एवं जन्मांग कुंडलियों में ग्रहों की तुलनात्मक स्थिति दर्शाता है। किसी भाव का विचार करने के लिए उस भाव को प्रकट करने वाली तीनों राशियों का विचार करना चाहिए।

षोडशवर्ग चक्र

वर्गीय कुंडलियां लग्न कुंडली का विस्तार होती हैं। प्रत्येक कुंडली का एक विशेष लक्ष्य होता है, जैसा कि निम्न कुंडलियों के साथ वर्णन किया गया है। विस्तृत रूप से यह जानने के लिए कि ये कुंडलियां कौन से विषय का प्रतिनिधित्व करती हैं, इनका अध्ययन मूल लग्न कुंडली के साथ किया जाना चाहिए। बहरहाल, ये कुंडलियां विशेष सावधानी से देखी जानी चाहिएं, क्योंकि यहां ग्रहों की दृष्टि नहीं होती। सामान्यतः ग्रह का आचरण उस राशि या भाव तक सीमित रहता है जिनमें वे इन वर्गीय कुंडलियों में स्थित हैं।

सूर्य कुंडली

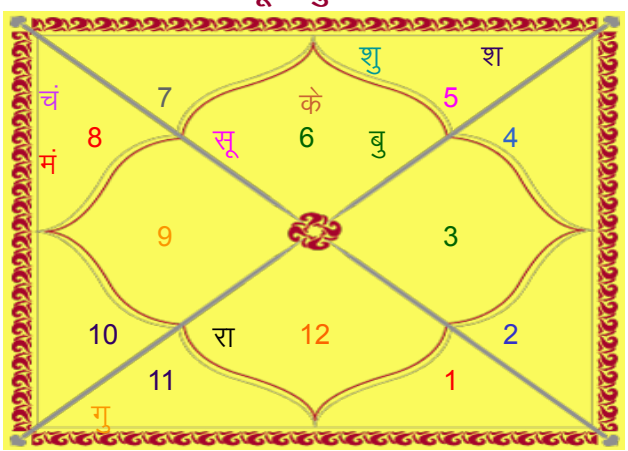

आत्मविचारः

चन्द्र कुंडली

मनोबलविचारः

लग्न कुंडली

देह विचारः

होरा कुंडली

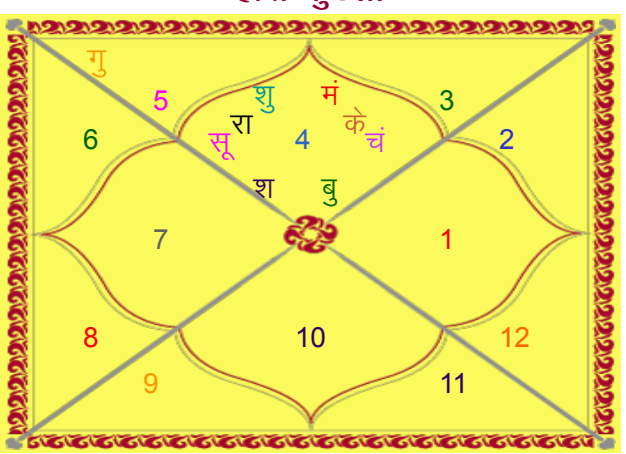

सम्पदाविचारः

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

षोडशवर्ग चक्र

द्रेष्काण कुंडली

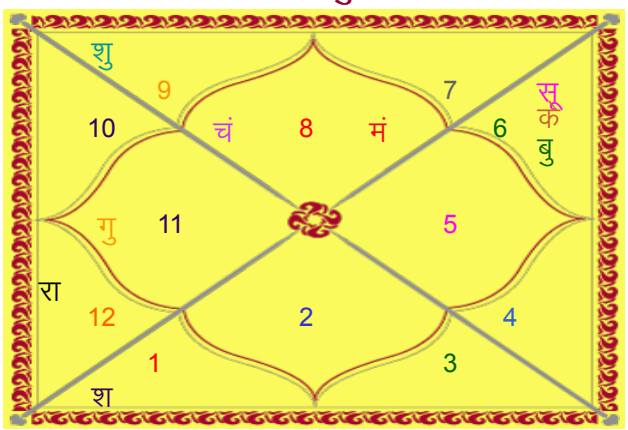

भ्रातृसौख्यम

चतुर्थांश कुंडली

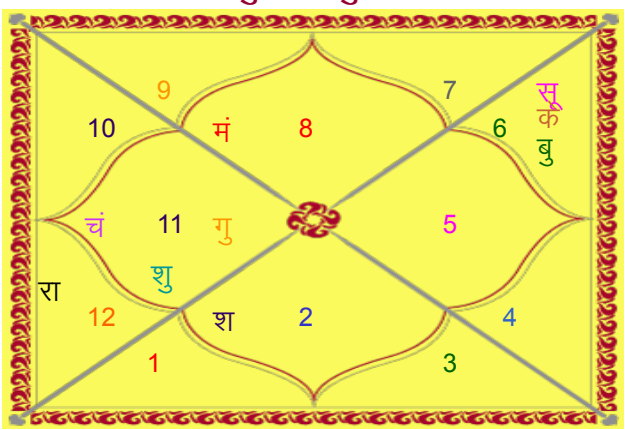

भाग्यविचारः

पंचमांश कुंडली

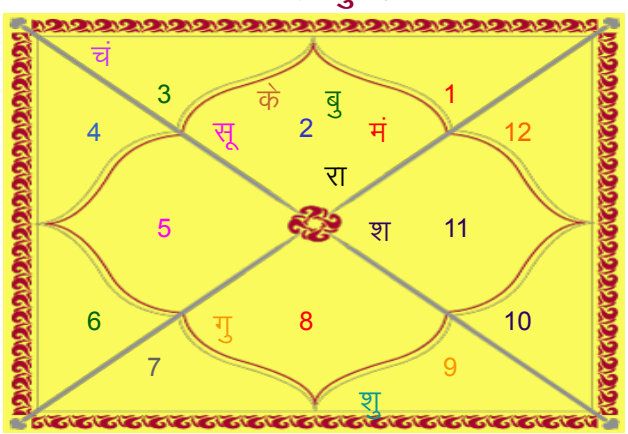

ज्ञानविचारः

षष्ठांश कुंडली

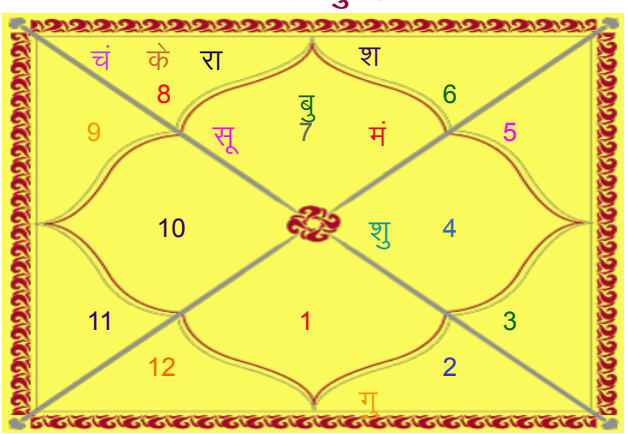

रिपुज्ञानम्

सप्तमांश कुंडली

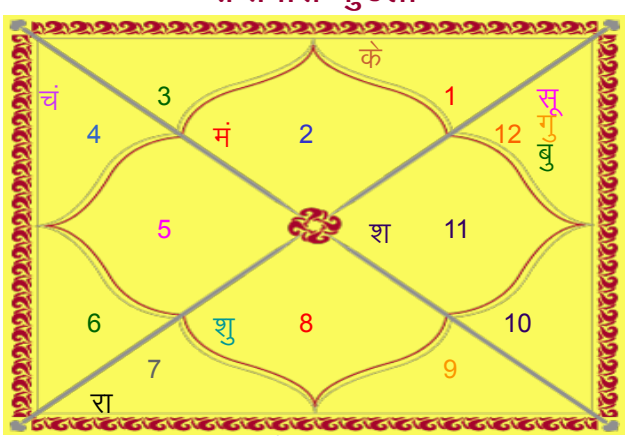

पुत्रपौत्रादिज्ञानम्

अष्टमांश कुंडली

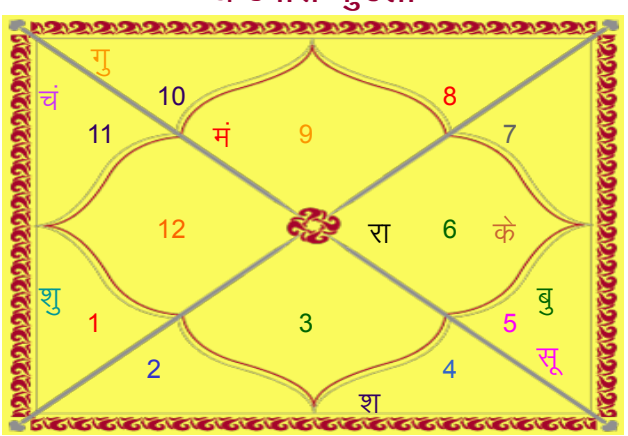

आयुविचारः

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

षोडशवर्ग चक्र

नवमांश कुंडली

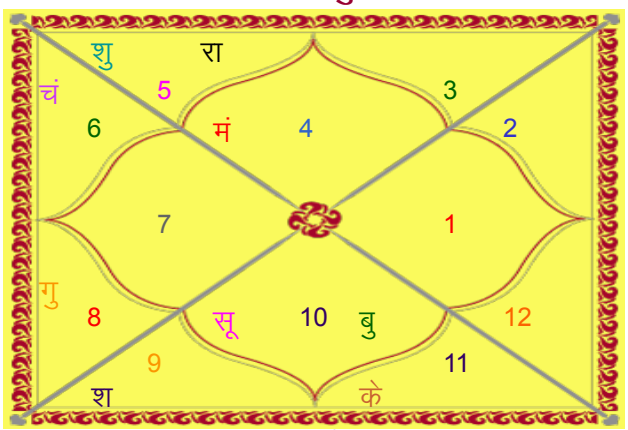

कलत्र सौख्यम

दशमांश कुंडली

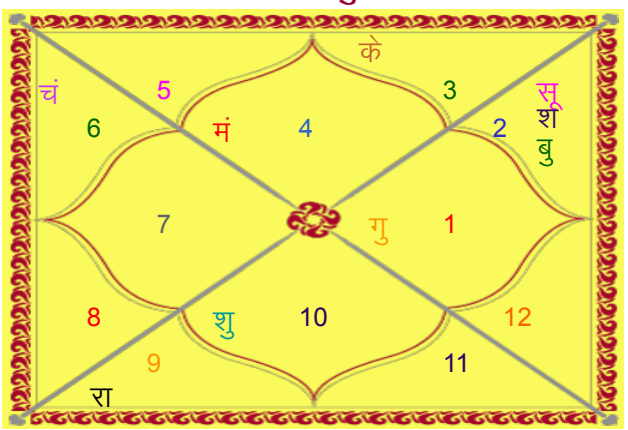

राज्यविचारः

एकादशांश कुंडली

लाभविचारः

द्वादशांश कुंडली

पितृसौख्यम

षोडशांश कुंडली

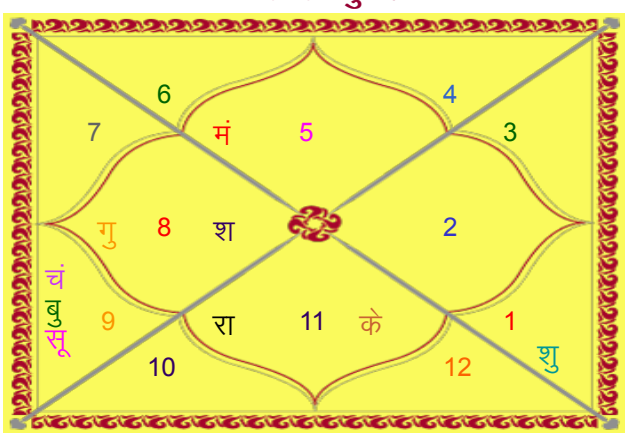

वाहनसुखविचारः

विंशांश कुंडली

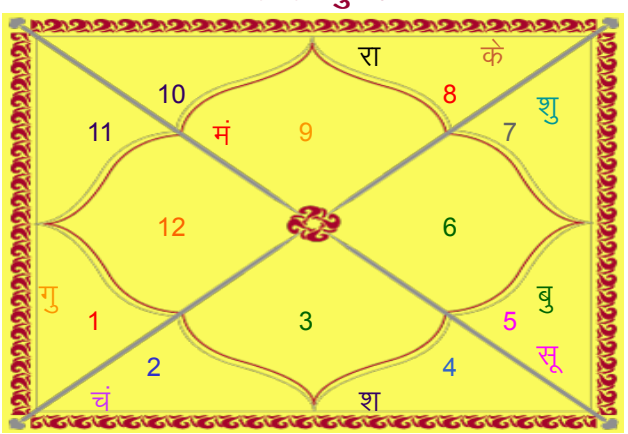

उपासनाज्ञानम्

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

षोडशवर्ग चक्र

चतुर्विंशांश कुंडली

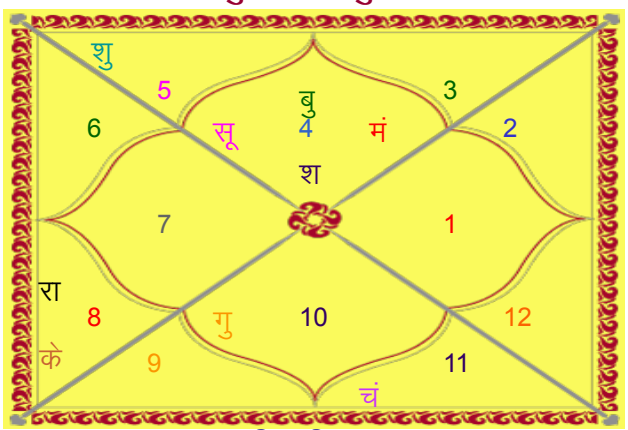

विद्याविचारः

सप्तविंशांश कुंडली

बलाबलज्ञानम्

त्रिंशांश कुंडली

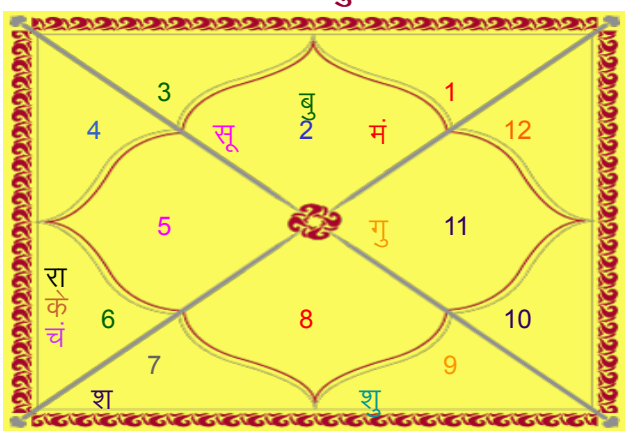

अरिष्टज्ञानम्

खवेदांश कुंडली

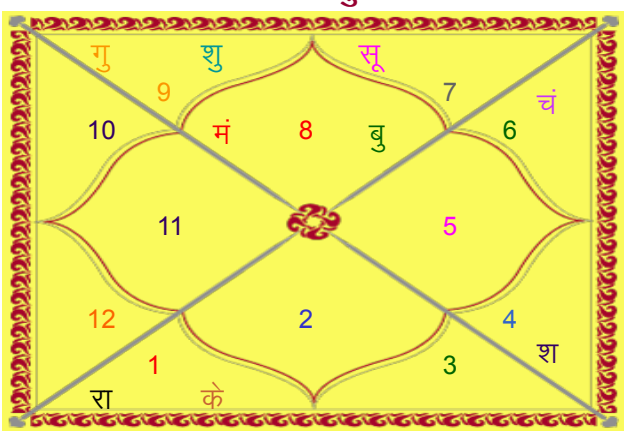

शुभाशुभज्ञानम्

अक्षवेदांश कुंडली

सर्वास्थितिविचारः

षष्ट्यंश कुंडली

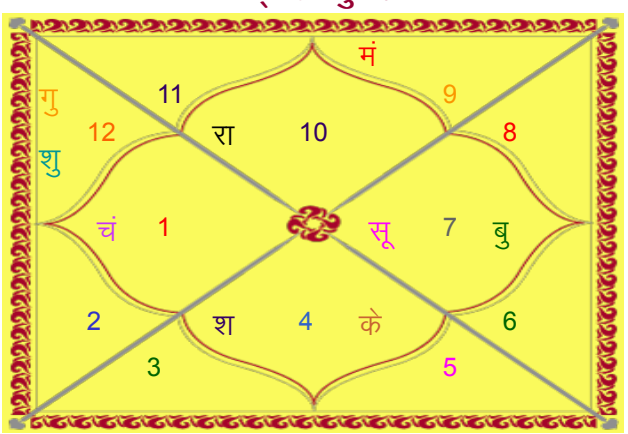

सर्वास्थितिविचारः

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

Male

नैसर्गिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	सम	मित्र	सम	सम	सम	शत्रु	शत्रु
मंगल	मित्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	सम	सम	शत्रु	मित्र
बुध	मित्र	शत्रु	सम	———	सम	मित्र	सम	सम	सम
गुरु	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	सम	सम	सम
शुक्र	शत्रु	शत्रु	सम	मित्र	सम	———	मित्र	मित्र	मित्र
शनि	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	मित्र	———	मित्र	शत्रु
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	सम	सम	मित्र	मित्र	———	शत्रु
केतु	शत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	मित्र	शत्रु	शत्रु	———

तात्कालिक मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
चंद्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
मंगल	मित्र	शत्रु	———	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	मित्र
बुध	शत्रु	मित्र	मित्र	———	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	———	शत्रु	शत्रु	मित्र
शनि	मित्र	मित्र	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	———	शत्रु	मित्र
राहु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु	शत्रु	———	शत्रु
केतु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु	मित्र	मित्र	शत्रु	———

पंचधा मैत्री

ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
सूर्य	———	अतिमित्र	अतिमित्र	शत्रु	सम	सम	सम	अधिशत्रु	अधिशत्रु
चंद्र	अतिमित्र	———	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	सम
मंगल	अतिमित्र	सम	———	सम	अतिमित्र	मित्र	मित्र	अधिशत्रु	अतिमित्र
बुध	सम	सम	मित्र	———	शत्रु	अतिमित्र	मित्र	शत्रु	शत्रु
गुरु	सम	अतिमित्र	अतिमित्र	अधिशत्रु	———	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	शत्रु
शुक्र	सम	सम	मित्र	अतिमित्र	शत्रु	———	सम	सम	अतिमित्र
शनि	सम	सम	सम	अतिमित्र	शत्रु	सम	———	सम	सम
राहु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	अधिशत्रु	शत्रु	मित्र	सम	सम	———	अधिशत्रु
केतु	अधिशत्रु	सम	अतिमित्र	शत्रु	शत्रु	अतिमित्र	सम	अधिशत्रु	———

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

षट्बल तथा भावबल सारिणी

षट्बल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
उच्च बल	13	2	31	55	11	14	43
सप्तवर्गज बल	56	128	135	154	94	53	71
ओजयुग्मक बल	0	30	0	0	15	0	30
केन्द्र बल	30	60	60	30	60	60	60
द्रेष्काण बल	15	0	15	0	15	0	0
कुल स्थान बल	114	219	241	239	194	126	204
कुल दिग्बल	52	31	31	40	28	3	21
नतोन्नत बल	52	8	8	60	52	52	8
पक्ष बल	37	75	37	37	23	23	37
त्रिभाग बल	60	0	0	0	60	0	0
अब्द बल	15	0	0	0	0	0	0
मास बल	0	0	0	0	30	0	0
वार बल	45	0	0	0	0	0	0
होरा बल	0	0	0	0	0	0	60
अयन बल	67	56	6	33	15	41	26
युद्ध बल	0	0	0	0	0	0	0
कुल कालबल	276	139	51	130	180	116	131
कुल चेष्टाबल	0	0	27	48	53	9	2
कुल नैसर्गिक बल	60	51	17	26	34	43	9
कुल दृग्बल	11	-16	-3	11	-24	9	11
कुल षट्बल	513	425	364	494	465	306	378
रूप षट्बल	8.5	7.1	6.1	8.2	7.8	5.1	6.3
न्यूनतम आवश्यकता	5	6	5	7	7	6	5
अनुपात	1.7	1.2	1.2	1.2	1.2	0.9	1.3
संबंधित पद	1	5	3	6	4	7	2

इष्ट फल

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
इष्ट फल	20.53	6.63	28.86	51.52	23.59	11.10	10.20
कष्ट फल	36.17	46.51	31.00	7.53	18.85	48.58	31.09

भाव बल

	1	2	3	4	5	6	7	8	9	10	11	12
भावाधिपति बल	364	465	378	378	465	364	306	494	425	513	494	306
भावदिग्बल	0	50	10	30	50	20	30	10	10	60	40	50
भावदृष्टि बल	51	33	9	-11	27	42	34	3	17	50	46	34
कुल भाव बल	415	549	397	397	543	426	370	507	453	623	580	391
रूप भाव बल	6.9	9.1	6.6	6.6	9.0	7.1	6.2	8.4	7.5	10.4	9.7	6.5
संबंधित पद	8	3	9	10	4	7	12	5	6	1	2	11

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	5	1	5	4	3	4	3	1	3	6	2	2	39
गुरु	4	7	4	5	3	7	3	4	8	3	4	4	56
मंगल	3	2	4	4	3	3	0	6	2	6	4	2	39
सूर्य	4	4	5	5	5	5	3	3	3	4	5	2	48
शुक्र	4	3	5	5	2	5	5	6	5	4	4	4	52
बुध	4	4	6	4	7	7	1	5	5	3	6	2	54
चंद्र	6	3	4	3	4	5	2	5	5	5	3	4	49
बिन्दु	30	24	33	30	27	36	17	30	31	31	28	20	337
रेखा	26	32	23	26	29	20	39	26	25	25	28	36	335

त्रिकोण शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	0	3	3	0	3	1	0	0	5	0	1	18
गुरु	1	4	1	1	0	4	0	0	5	0	1	0	17
मंगल	1	0	4	2	1	1	0	4	0	4	4	0	21
सूर्य	1	0	2	3	2	1	0	1	0	0	2	0	12
शुक्र	2	0	1	1	0	2	1	2	3	1	0	0	13
बुध	0	1	5	2	3	4	0	3	1	0	5	0	24
चंद्र	2	0	2	0	0	2	0	2	1	2	1	1	13
रेखा	9	5	18	12	6	17	2	12	10	12	13	2	118

एकाधिपत्य शोधन के पश्चात अष्टकवर्ग सारिणी

	मे	वृ	मि	र्क	सि	कं	तु	वृश्चि	ध	म	कुं	मी	कुल
शनि	2	0	0	3	0	3	1	0	0	5	0	1	15
गुरु	1	4	0	1	0	4	0	0	5	0	1	0	16
मंगल	0	0	3	2	1	1	0	4	0	0	4	0	15
सूर्य	0	0	1	3	2	1	0	1	0	0	2	0	10
शुक्र	0	0	0	1	0	2	1	2	3	1	0	0	10
बुध	0	1	1	2	3	4	0	3	1	0	5	0	20
चंद्र	0	0	0	0	0	2	0	2	0	1	1	0	6
रेखा	3	5	5	12	6	17	2	12	9	7	13	1	92

शोध्य पिंड

	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि
राशि पिंड	75	42	123	164	127	69	85
ग्रह पिंड	67	56	114	165	50	46	30
शोध्य पिंड	142	98	237	329	177	115	115

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

अष्टकवर्ग सारिणी

सर्वाष्टकवर्ग

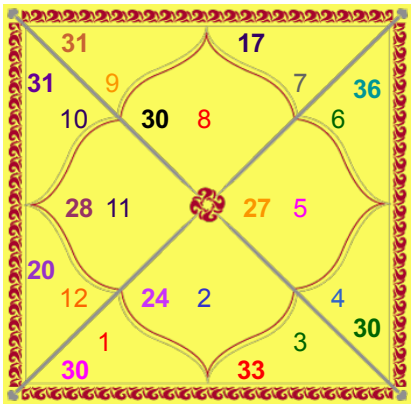

सूर्य का अष्टकवर्ग

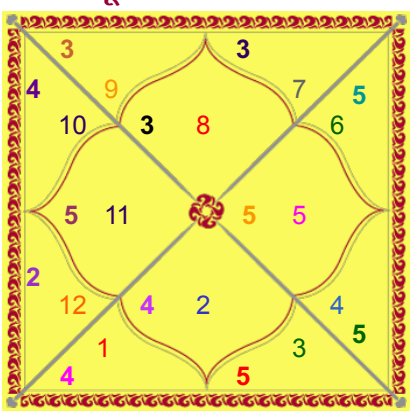

चंद्र का अष्टकवर्ग

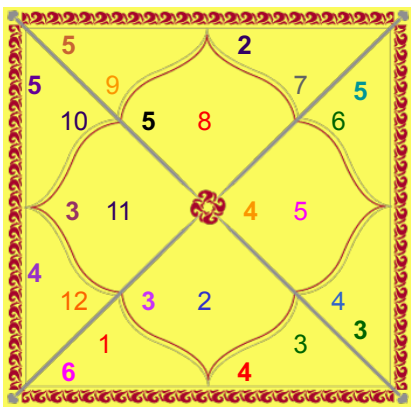

मंगल का अष्टकवर्ग

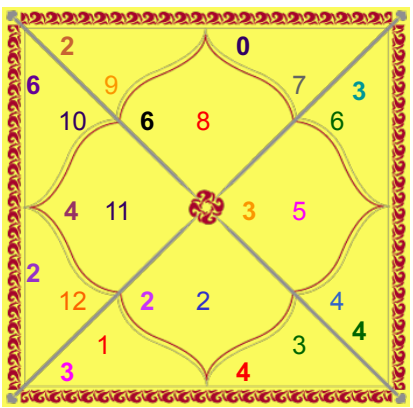

बुद्ध का अष्टकवर्ग

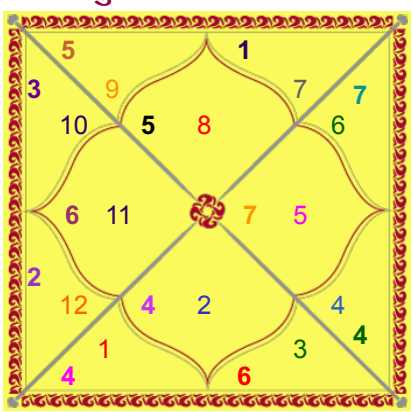

गुरू का अष्टकवर्ग

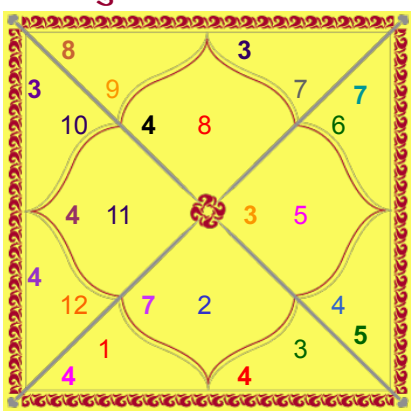

शुक्र का अष्टकवर्ग

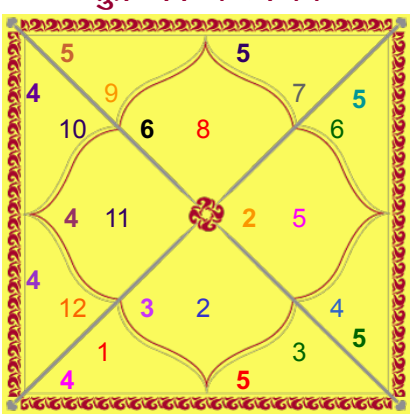

शनि का अष्टकवर्ग

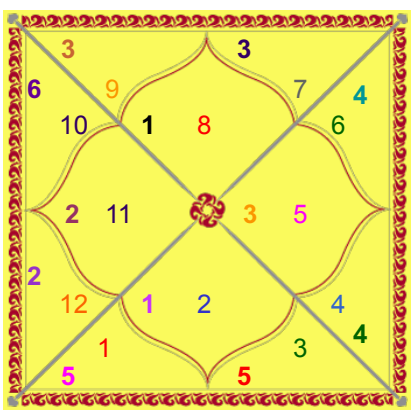

लग्न का अष्टकवर्ग

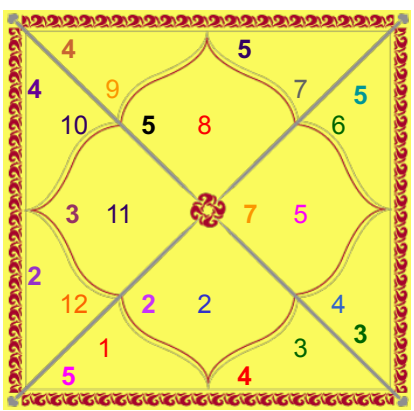

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : शनि 11 वर्ष 2 मास 11 दिन

शनि 19 वर्ष		बुध 17 वर्ष		केतु 7 वर्ष		शुक्र 20 वर्ष		सूर्य 6 वर्ष	
17/09/1950		28/11/1961		28/11/1978		28/11/1985		28/11/2005	
28/11/1961		28/11/1978		28/11/1985		28/11/2005		29/11/2011	
	00/00/0000	बुध	26/04/1964	केतु	27/04/1979	शुक्र	30/03/1989	सूर्य	18/03/2006
	00/00/0000	केतु	23/04/1965	शुक्र	26/06/1980	सूर्य	30/03/1990	चंद्र	16/09/2006
	17/09/1950	शुक्र	22/02/1968	सूर्य	01/11/1980	चंद्र	29/11/1991	मंगल	22/01/2007
शुक्र	19/11/1952	सूर्य	28/12/1968	चंद्र	02/06/1981	मंगल	28/01/1993	राहु	17/12/2007
सूर्य	01/11/1953	चंद्र	30/05/1970	मंगल	29/10/1981	राहु	29/01/1996	गुरु	04/10/2008
चंद्र	02/06/1955	मंगल	27/05/1971	राहु	16/11/1982	गुरु	29/09/1998	शनि	16/09/2009
मंगल	11/07/1956	राहु	13/12/1973	गुरु	23/10/1983	शनि	28/11/2001	बुध	24/07/2010
राहु	18/05/1959	गुरु	20/03/1976	शनि	01/12/1984	बुध	28/09/2004	केतु	28/11/2010
गुरु	28/11/1961	शनि	28/11/1978	बुध	28/11/1985	केतु	28/11/2005	शुक्र	29/11/2011

चंद्र 10 वर्ष		मंगल 7 वर्ष		राहु 18 वर्ष		गुरु 16 वर्ष		शनि 19 वर्ष	
29/11/2011		28/11/2021		28/11/2028		28/11/2046		28/11/2062	
28/11/2021		28/11/2028		28/11/2046		28/11/2062		00/00/0000	
चंद्र	28/09/2012	मंगल	26/04/2022	राहु	11/08/2031	गुरु	16/01/2049	शनि	01/12/2065
मंगल	29/04/2013	राहु	15/05/2023	गुरु	04/01/2034	शनि	30/07/2051	बुध	10/08/2068
राहु	29/10/2014	गुरु	20/04/2024	शनि	10/11/2036	बुध	04/11/2053	केतु	19/09/2069
गुरु	28/02/2016	शनि	30/05/2025	बुध	30/05/2039	केतु	11/10/2054	शुक्र	17/09/2070
शनि	28/09/2017	बुध	27/05/2026	केतु	17/06/2040	शुक्र	11/06/2057		00/00/0000
बुध	28/02/2019	केतु	23/10/2026	शुक्र	17/06/2043	सूर्य	30/03/2058		00/00/0000
केतु	29/09/2019	शुक्र	23/12/2027	सूर्य	11/05/2044	चंद्र	30/07/2059		00/00/0000
शुक्र	30/05/2021	सूर्य	29/04/2028	चंद्र	10/11/2045	मंगल	05/07/2060		00/00/0000
सूर्य	28/11/2021	चंद्र	28/11/2028	मंगल	28/11/2046	राहु	28/11/2062		00/00/0000

- उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल शनि 11 वर्ष 2 मा 19 दि होता है।
- उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शनि - शुक्र		शनि - सूर्य		शनि - चंद्र		शनि - मंगल		शनि - राहु	
17/09/1950		19/11/1952		01/11/1953		02/06/1955		11/07/1956	
19/11/1952		01/11/1953		02/06/1955		11/07/1956		18/05/1959	
	00/00/0000	सूर्य	06/12/1952	चंद्र	19/12/1953	मंगल	26/06/1955	राहु	14/12/1956
	00/00/0000	चंद्र	04/01/1953	मंगल	22/01/1954	राहु	26/08/1955	गुरु	02/05/1957
	17/09/1950	मंगल	24/01/1953	राहु	19/04/1954	गुरु	18/10/1955	शनि	14/10/1957
मंगल	08/11/1950	राहु	17/03/1953	गुरु	05/07/1954	शनि	22/12/1955	बुध	10/03/1958
राहु	30/04/1951	गुरु	03/05/1953	शनि	04/10/1954	बुध	17/02/1956	केतु	10/05/1958
गुरु	01/10/1951	शनि	27/06/1953	बुध	25/12/1954	केतु	12/03/1956	शुक्र	30/10/1958
शनि	02/04/1952	बुध	15/08/1953	केतु	28/01/1955	शुक्र	18/05/1956	सूर्य	21/12/1958
बुध	12/09/1952	केतु	04/09/1953	शुक्र	04/05/1955	सूर्य	07/06/1956	चंद्र	18/03/1959
केतु	19/11/1952	शुक्र	01/11/1953	सूर्य	02/06/1955	चंद्र	11/07/1956	मंगल	18/05/1959

शनि - गुरु		बुध - बुध		बुध - केतु		बुध - शुक्र		बुध - सूर्य	
18/05/1959		28/11/1961		26/04/1964		23/04/1965		22/02/1968	
28/11/1961		26/04/1964		23/04/1965		22/02/1968		28/12/1968	
गुरु	18/09/1959	बुध	02/04/1962	केतु	17/05/1964	शुक्र	13/10/1965	सूर्य	08/03/1968
शनि	12/02/1960	केतु	23/05/1962	शुक्र	16/07/1964	सूर्य	03/12/1965	चंद्र	03/04/1968
बुध	22/06/1960	शुक्र	17/10/1962	सूर्य	03/08/1964	चंद्र	28/02/1966	मंगल	21/04/1968
केतु	15/08/1960	सूर्य	30/11/1962	चंद्र	03/09/1964	मंगल	29/04/1966	राहु	07/06/1968
शुक्र	16/01/1961	चंद्र	11/02/1963	मंगल	24/09/1964	राहु	01/10/1966	गुरु	18/07/1968
सूर्य	03/03/1961	मंगल	03/04/1963	राहु	17/11/1964	गुरु	16/02/1967	शनि	06/09/1968
चंद्र	19/05/1961	राहु	13/08/1963	गुरु	04/01/1965	शनि	30/07/1967	बुध	20/10/1968
मंगल	12/07/1961	गुरु	09/12/1963	शनि	03/03/1965	बुध	24/12/1967	केतु	07/11/1968
राहु	28/11/1961	शनि	26/04/1964	बुध	23/04/1965	केतु	22/02/1968	शुक्र	28/12/1968

बुध - चंद्र		बुध - मंगल		बुध - राहु		बुध - गुरु		बुध - शनि	
28/12/1968		30/05/1970		27/05/1971		13/12/1973		20/03/1976	
30/05/1970		27/05/1971		13/12/1973		20/03/1976		28/11/1978	
चंद्र	10/02/1969	मंगल	20/06/1970	राहु	14/10/1971	गुरु	03/04/1974	शनि	23/08/1976
मंगल	12/03/1969	राहु	13/08/1970	गुरु	15/02/1972	शनि	12/08/1974	बुध	09/01/1977
राहु	28/05/1969	गुरु	01/10/1970	शनि	11/07/1972	बुध	07/12/1974	केतु	08/03/1977
गुरु	05/08/1969	शनि	27/11/1970	बुध	20/11/1972	केतु	25/01/1975	शुक्र	19/08/1977
शनि	26/10/1969	बुध	17/01/1971	केतु	14/01/1973	शुक्र	11/06/1975	सूर्य	07/10/1977
बुध	08/01/1970	केतु	07/02/1971	शुक्र	18/06/1973	सूर्य	23/07/1975	चंद्र	28/12/1977
केतु	07/02/1970	शुक्र	09/04/1971	सूर्य	04/08/1973	चंद्र	30/09/1975	मंगल	23/02/1978
शुक्र	04/05/1970	सूर्य	27/04/1971	चंद्र	20/10/1973	मंगल	17/11/1975	राहु	20/07/1978
सूर्य	30/05/1970	चंद्र	27/05/1971	मंगल	13/12/1973	राहु	20/03/1976	गुरु	28/11/1978

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - केतु		केतु - शुक्र		केतु - सूर्य		केतु - चंद्र		केतु - मंगल	
28/11/1978		27/04/1979		26/06/1980		01/11/1980		02/06/1981	
27/04/1979		26/06/1980		01/11/1980		02/06/1981		29/10/1981	
केतु	07/12/1978	शुक्र	07/07/1979	सूर्य	02/07/1980	चंद्र	18/11/1980	मंगल	10/06/1981
शुक्र	01/01/1979	सूर्य	28/07/1979	चंद्र	13/07/1980	मंगल	01/12/1980	राहु	03/07/1981
सूर्य	09/01/1979	चंद्र	01/09/1979	मंगल	20/07/1980	राहु	02/01/1981	गुरु	23/07/1981
चंद्र	21/01/1979	मंगल	26/09/1979	राहु	08/08/1980	गुरु	30/01/1981	शनि	15/08/1981
मंगल	30/01/1979	राहु	29/11/1979	गुरु	25/08/1980	शनि	05/03/1981	बुध	05/09/1981
राहु	21/02/1979	गुरु	25/01/1980	शनि	15/09/1980	बुध	04/04/1981	केतु	14/09/1981
गुरु	13/03/1979	शनि	02/04/1980	बुध	03/10/1980	केतु	17/04/1981	शुक्र	09/10/1981
शनि	06/04/1979	बुध	01/06/1980	केतु	10/10/1980	शुक्र	22/05/1981	सूर्य	16/10/1981
बुध	27/04/1979	केतु	26/06/1980	शुक्र	01/11/1980	सूर्य	02/06/1981	चंद्र	29/10/1981

केतु - राहु		केतु - गुरु		केतु - शनि		केतु - बुध		शुक्र - शुक्र	
29/10/1981		16/11/1982		23/10/1983		01/12/1984		28/11/1985	
16/11/1982		23/10/1983		01/12/1984		28/11/1985		30/03/1989	
राहु	25/12/1981	गुरु	01/01/1983	शनि	26/12/1983	बुध	21/01/1985	शुक्र	19/06/1986
गुरु	14/02/1982	शनि	24/02/1983	बुध	22/02/1984	केतु	11/02/1985	सूर्य	19/08/1986
शनि	16/04/1982	बुध	13/04/1983	केतु	16/03/1984	शुक्र	13/04/1985	चंद्र	28/11/1986
बुध	10/06/1982	केतु	03/05/1983	शुक्र	23/05/1984	सूर्य	01/05/1985	मंगल	08/02/1987
केतु	02/07/1982	शुक्र	29/06/1983	सूर्य	12/06/1984	चंद्र	31/05/1985	राहु	09/08/1987
शुक्र	04/09/1982	सूर्य	16/07/1983	चंद्र	16/07/1984	मंगल	21/06/1985	गुरु	18/01/1988
सूर्य	23/09/1982	चंद्र	13/08/1983	मंगल	08/08/1984	राहु	15/08/1985	शनि	29/07/1988
चंद्र	25/10/1982	मंगल	02/09/1983	राहु	08/10/1984	गुरु	02/10/1985	बुध	18/01/1989
मंगल	16/11/1982	राहु	23/10/1983	गुरु	01/12/1984	शनि	28/11/1985	केतु	30/03/1989

शुक्र - सूर्य		शुक्र - चंद्र		शुक्र - मंगल		शुक्र - राहु		शुक्र - गुरु	
30/03/1989		30/03/1990		29/11/1991		28/01/1993		29/01/1996	
30/03/1990		29/11/1991		28/01/1993		29/01/1996		29/09/1998	
सूर्य	17/04/1989	चंद्र	20/05/1990	मंगल	24/12/1991	राहु	11/07/1993	गुरु	06/06/1996
चंद्र	17/05/1989	मंगल	24/06/1990	राहु	26/02/1992	गुरु	04/12/1993	शनि	08/11/1996
मंगल	08/06/1989	राहु	24/09/1990	गुरु	22/04/1992	शनि	27/05/1994	बुध	26/03/1997
राहु	02/08/1989	गुरु	14/12/1990	शनि	29/06/1992	बुध	29/10/1994	केतु	22/05/1997
गुरु	19/09/1989	शनि	20/03/1991	बुध	28/08/1992	केतु	01/01/1995	शुक्र	31/10/1997
शनि	16/11/1989	बुध	14/06/1991	केतु	22/09/1992	शुक्र	03/07/1995	सूर्य	19/12/1997
बुध	07/01/1990	केतु	20/07/1991	शुक्र	02/12/1992	सूर्य	26/08/1995	चंद्र	10/03/1998
केतु	28/01/1990	शुक्र	29/10/1991	सूर्य	23/12/1992	चंद्र	26/11/1995	मंगल	06/05/1998
शुक्र	30/03/1990	सूर्य	29/11/1991	चंद्र	28/01/1993	मंगल	29/01/1996	राहु	29/09/1998

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

शुक्र - शनि	
29/09/1998	
28/11/2001	
शनि	31/03/1999
बुध	11/09/1999
केतु	17/11/1999
शुक्र	28/05/2000
सूर्य	25/07/2000
चंद्र	29/10/2000
मंगल	05/01/2001
राहु	27/06/2001
गुरु	28/11/2001

शुक्र - बुध	
28/11/2001	
28/09/2004	
बुध	24/04/2002
केतु	23/06/2002
शुक्र	13/12/2002
सूर्य	02/02/2003
चंद्र	30/04/2003
मंगल	29/06/2003
राहु	01/12/2003
गुरु	17/04/2004
शनि	28/09/2004

शुक्र - केतु	
28/09/2004	
28/11/2005	
केतु	23/10/2004
शुक्र	02/01/2005
सूर्य	23/01/2005
चंद्र	28/02/2005
मंगल	25/03/2005
राहु	28/05/2005
गुरु	23/07/2005
शनि	29/09/2005
बुध	28/11/2005

सूर्य - सूर्य	
28/11/2005	
18/03/2006	
सूर्य	04/12/2005
चंद्र	13/12/2005
मंगल	19/12/2005
राहु	05/01/2006
गुरु	19/01/2006
शनि	06/02/2006
बुध	21/02/2006
केतु	28/02/2006
शुक्र	18/03/2006

सूर्य - चंद्र	
18/03/2006	
16/09/2006	
चंद्र	02/04/2006
मंगल	13/04/2006
राहु	10/05/2006
गुरु	03/06/2006
शनि	02/07/2006
बुध	28/07/2006
केतु	08/08/2006
शुक्र	07/09/2006
सूर्य	16/09/2006

सूर्य - मंगल	
16/09/2006	
22/01/2007	
मंगल	24/09/2006
राहु	13/10/2006
गुरु	30/10/2006
शनि	19/11/2006
बुध	07/12/2006
केतु	15/12/2006
शुक्र	05/01/2007
सूर्य	12/01/2007
चंद्र	22/01/2007

सूर्य - राहु	
22/01/2007	
17/12/2007	
राहु	13/03/2007
गुरु	25/04/2007
शनि	16/06/2007
बुध	02/08/2007
केतु	21/08/2007
शुक्र	15/10/2007
सूर्य	31/10/2007
चंद्र	28/11/2007
मंगल	17/12/2007

सूर्य - गुरु	
17/12/2007	
04/10/2008	
गुरु	25/01/2008
शनि	11/03/2008
बुध	22/04/2008
केतु	09/05/2008
शुक्र	26/06/2008
सूर्य	11/07/2008
चंद्र	04/08/2008
मंगल	21/08/2008
राहु	04/10/2008

सूर्य - शनि	
04/10/2008	
16/09/2009	
शनि	28/11/2008
बुध	16/01/2009
केतु	06/02/2009
शुक्र	04/04/2009
सूर्य	22/04/2009
चंद्र	21/05/2009
मंगल	10/06/2009
राहु	01/08/2009
गुरु	16/09/2009

सूर्य - बुध	
16/09/2009	
24/07/2010	
बुध	30/10/2009
केतु	17/11/2009
शुक्र	08/01/2010
सूर्य	24/01/2010
चंद्र	18/02/2010
मंगल	09/03/2010
राहु	24/04/2010
गुरु	05/06/2010
शनि	24/07/2010

सूर्य - केतु	
24/07/2010	
28/11/2010	
केतु	31/07/2010
शुक्र	21/08/2010
सूर्य	28/08/2010
चंद्र	07/09/2010
मंगल	15/09/2010
राहु	04/10/2010
गुरु	21/10/2010
शनि	10/11/2010
बुध	28/11/2010

सूर्य - शुक्र	
28/11/2010	
29/11/2011	
शुक्र	28/01/2011
सूर्य	16/02/2011
चंद्र	18/03/2011
मंगल	08/04/2011
राहु	02/06/2011
गुरु	21/07/2011
शनि	17/09/2011
बुध	07/11/2011
केतु	29/11/2011

चंद्र - चंद्र	
29/11/2011	
28/09/2012	
चंद्र	24/12/2011
मंगल	11/01/2012
राहु	26/02/2012
गुरु	06/04/2012
शनि	24/05/2012
बुध	06/07/2012
केतु	24/07/2012
शुक्र	13/09/2012
सूर्य	28/09/2012

चंद्र - मंगल	
28/09/2012	
29/04/2013	
मंगल	11/10/2012
राहु	12/11/2012
गुरु	10/12/2012
शनि	13/01/2013
बुध	12/02/2013
केतु	24/02/2013
शुक्र	01/04/2013
सूर्य	11/04/2013
चंद्र	29/04/2013

चंद्र - राहु	
29/04/2013	
29/10/2014	
राहु	20/07/2013
गुरु	01/10/2013
शनि	27/12/2013
बुध	15/03/2014
केतु	16/04/2014
शुक्र	16/07/2014
सूर्य	12/08/2014
चंद्र	27/09/2014
मंगल	29/10/2014

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

चंद्र - गुरु	
29/10/2014	
28/02/2016	
गुरु	02/01/2015
शनि	20/03/2015
बुध	28/05/2015
केतु	25/06/2015
शुक्र	15/09/2015
सूर्य	09/10/2015
चंद्र	19/11/2015
मंगल	17/12/2015
राहु	28/02/2016

चंद्र - शनि	
28/02/2016	
28/09/2017	
शनि	30/05/2016
बुध	20/08/2016
केतु	22/09/2016
शुक्र	28/12/2016
सूर्य	26/01/2017
चंद्र	15/03/2017
मंगल	18/04/2017
राहु	13/07/2017
गुरु	28/09/2017

चंद्र - बुध	
28/09/2017	
28/02/2019	
बुध	11/12/2017
केतु	10/01/2018
शुक्र	06/04/2018
सूर्य	02/05/2018
चंद्र	14/06/2018
मंगल	14/07/2018
राहु	30/09/2018
गुरु	08/12/2018
शनि	28/02/2019

चंद्र - केतु	
28/02/2019	
29/09/2019	
केतु	12/03/2019
शुक्र	17/04/2019
सूर्य	27/04/2019
चंद्र	15/05/2019
मंगल	28/05/2019
राहु	29/06/2019
गुरु	27/07/2019
शनि	30/08/2019
बुध	29/09/2019

चंद्र - शुक्र	
29/09/2019	
30/05/2021	
शुक्र	08/01/2020
सूर्य	08/02/2020
चंद्र	29/03/2020
मंगल	04/05/2020
राहु	03/08/2020
गुरु	23/10/2020
शनि	28/01/2021
बुध	24/04/2021
केतु	30/05/2021

चंद्र - सूर्य	
30/05/2021	
28/11/2021	
सूर्य	08/06/2021
चंद्र	23/06/2021
मंगल	04/07/2021
राहु	31/07/2021
गुरु	24/08/2021
शनि	22/09/2021
बुध	18/10/2021
केतु	29/10/2021
शुक्र	28/11/2021

मंगल - मंगल	
28/11/2021	
26/04/2022	
मंगल	07/12/2021
राहु	29/12/2021
गुरु	18/01/2022
शनि	11/02/2022
बुध	04/03/2022
केतु	13/03/2022
शुक्र	07/04/2022
सूर्य	14/04/2022
चंद्र	26/04/2022

मंगल - राहु	
26/04/2022	
15/05/2023	
राहु	23/06/2022
गुरु	13/08/2022
शनि	13/10/2022
बुध	06/12/2022
केतु	28/12/2022
शुक्र	02/03/2023
सूर्य	22/03/2023
चंद्र	23/04/2023
मंगल	15/05/2023

मंगल - गुरु	
15/05/2023	
20/04/2024	
गुरु	29/06/2023
शनि	22/08/2023
बुध	10/10/2023
केतु	30/10/2023
शुक्र	25/12/2023
सूर्य	11/01/2024
चंद्र	09/02/2024
मंगल	29/02/2024
राहु	20/04/2024

मंगल - शनि	
20/04/2024	
30/05/2025	
शनि	23/06/2024
बुध	19/08/2024
केतु	12/09/2024
शुक्र	18/11/2024
सूर्य	09/12/2024
चंद्र	11/01/2025
मंगल	04/02/2025
राहु	06/04/2025
गुरु	30/05/2025

मंगल - बुध	
30/05/2025	
27/05/2026	
बुध	20/07/2025
केतु	10/08/2025
शुक्र	09/10/2025
सूर्य	28/10/2025
चंद्र	27/11/2025
मंगल	18/12/2025
राहु	10/02/2026
गुरु	30/03/2026
शनि	27/05/2026

मंगल - केतु	
27/05/2026	
23/10/2026	
केतु	05/06/2026
शुक्र	29/06/2026
सूर्य	07/07/2026
चंद्र	19/07/2026
मंगल	28/07/2026
राहु	19/08/2026
गुरु	08/09/2026
शनि	02/10/2026
बुध	23/10/2026

मंगल - शुक्र	
23/10/2026	
23/12/2027	
शुक्र	02/01/2027
सूर्य	23/01/2027
चंद्र	28/02/2027
मंगल	25/03/2027
राहु	28/05/2027
गुरु	23/07/2027
शनि	29/09/2027
बुध	28/11/2027
केतु	23/12/2027

मंगल - सूर्य	
23/12/2027	
29/04/2028	
सूर्य	29/12/2027
चंद्र	09/01/2028
मंगल	17/01/2028
राहु	05/02/2028
गुरु	22/02/2028
शनि	13/03/2028
बुध	31/03/2028
केतु	08/04/2028
शुक्र	29/04/2028

मंगल - चंद्र	
29/04/2028	
28/11/2028	
चंद्र	17/05/2028
मंगल	29/05/2028
राहु	30/06/2028
गुरु	28/07/2028
शनि	31/08/2028
बुध	30/09/2028
केतु	13/10/2028
शुक्र	17/11/2028
सूर्य	28/11/2028

AstroDevam
Ground Floor-39(Gate No-3)
Ansal Fortune Arcade,
Sector-18, Noida-201301
Ph: +91-0120-4233339
Helpline: +91-9650511113
www.astrodevam.com

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

राहु - राहु		राहु - गुरु		राहु - शनि		राहु - बुध		राहु - केतु	
28/11/2028		11/08/2031		04/01/2034		10/11/2036		30/05/2039	
11/08/2031		04/01/2034		10/11/2036		30/05/2039		17/06/2040	
राहु	25/04/2029	गुरु	06/12/2031	शनि	18/06/2034	बुध	22/03/2037	केतु	21/06/2039
गुरु	03/09/2029	शनि	23/04/2032	बुध	12/11/2034	केतु	15/05/2037	शुक्र	24/08/2039
शनि	07/02/2030	बुध	25/08/2032	केतु	12/01/2035	शुक्र	17/10/2037	सूर्य	13/09/2039
बुध	26/06/2030	केतु	15/10/2032	शुक्र	04/07/2035	सूर्य	03/12/2037	चंद्र	15/10/2039
केतु	23/08/2030	शुक्र	10/03/2033	सूर्य	25/08/2035	चंद्र	18/02/2038	मंगल	06/11/2039
शुक्र	03/02/2031	सूर्य	23/04/2033	चंद्र	20/11/2035	मंगल	14/04/2038	राहु	02/01/2040
सूर्य	24/03/2031	चंद्र	05/07/2033	मंगल	20/01/2036	राहु	31/08/2038	गुरु	23/02/2040
चंद्र	15/06/2031	मंगल	25/08/2033	राहु	24/06/2036	गुरु	03/01/2039	शनि	23/04/2040
मंगल	11/08/2031	राहु	04/01/2034	गुरु	10/11/2036	शनि	30/05/2039	बुध	17/06/2040

राहु - शुक्र		राहु - सूर्य		राहु - चंद्र		राहु - मंगल		गुरु - गुरु	
17/06/2040		17/06/2043		11/05/2044		10/11/2045		28/11/2046	
17/06/2043		11/05/2044		10/11/2045		28/11/2046		16/01/2049	
शुक्र	16/12/2040	सूर्य	04/07/2043	चंद्र	26/06/2044	मंगल	02/12/2045	गुरु	12/03/2047
सूर्य	09/02/2041	चंद्र	31/07/2043	मंगल	28/07/2044	राहु	29/01/2046	शनि	14/07/2047
चंद्र	11/05/2041	मंगल	19/08/2043	राहु	18/10/2044	गुरु	21/03/2046	बुध	01/11/2047
मंगल	14/07/2041	राहु	08/10/2043	गुरु	30/12/2044	शनि	21/05/2046	केतु	17/12/2047
राहु	26/12/2041	गुरु	21/11/2043	शनि	27/03/2045	बुध	14/07/2046	शुक्र	24/04/2048
गुरु	21/05/2042	शनि	12/01/2044	बुध	12/06/2045	केतु	05/08/2046	सूर्य	02/06/2048
शनि	10/11/2042	बुध	27/02/2044	केतु	14/07/2045	शुक्र	08/10/2046	चंद्र	06/08/2048
बुध	14/04/2043	केतु	17/03/2044	शुक्र	14/10/2045	सूर्य	28/10/2046	मंगल	21/09/2048
केतु	17/06/2043	शुक्र	11/05/2044	सूर्य	10/11/2045	चंद्र	28/11/2046	राहु	16/01/2049

गुरु - शनि		गुरु - बुध		गुरु - केतु		गुरु - शुक्र		गुरु - सूर्य	
16/01/2049		30/07/2051		04/11/2053		11/10/2054		11/06/2057	
30/07/2051		04/11/2053		11/10/2054		11/06/2057		30/03/2058	
शनि	11/06/2049	बुध	24/11/2051	केतु	24/11/2053	शुक्र	22/03/2055	सूर्य	25/06/2057
बुध	20/10/2049	केतु	12/01/2052	शुक्र	20/01/2054	सूर्य	10/05/2055	चंद्र	20/07/2057
केतु	13/12/2049	शुक्र	29/05/2052	सूर्य	06/02/2054	चंद्र	30/07/2055	मंगल	06/08/2057
शुक्र	16/05/2050	सूर्य	09/07/2052	चंद्र	06/03/2054	मंगल	25/09/2055	राहु	19/09/2057
सूर्य	02/07/2050	चंद्र	16/09/2052	मंगल	26/03/2054	राहु	18/02/2056	गुरु	28/10/2057
चंद्र	17/09/2050	मंगल	03/11/2052	राहु	16/05/2054	गुरु	27/06/2056	शनि	13/12/2057
मंगल	10/11/2050	राहु	07/03/2053	गुरु	01/07/2054	शनि	28/11/2056	बुध	23/01/2058
राहु	29/03/2051	गुरु	26/06/2053	शनि	24/08/2054	बुध	15/04/2057	केतु	09/02/2058
गुरु	30/07/2051	शनि	04/11/2053	बुध	11/10/2054	केतु	11/06/2057	शुक्र	30/03/2058

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांको से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	8
भाग्यांक	5
मित्र अंक	1, 2, 8, 5
शत्रु अंक	3, 7, 9
शुभ वर्ष	26,35,44,53,62
शुभ दिन	रवि, सोम, मंगल
शुभ ग्रह	सूर्य, चन्द्र, मंगल
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	कुम्भ, कर्क, कन्या
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	मोती
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी

रत्न चयन

किसी भी कुंडली में दशानुसार ग्रह का उपाय एवं रत्न धारण करने से शुभत्व में वृद्धि होती है। वैज्ञानिक रूप से विशिष्ट ग्रह का मंत्रोच्चारण करने से उस ग्रह की रश्मियों की मानव शरीर के चारों ओर सुरक्षा श्रृंखला बन जाती है एवं रत्न रश्मियों को सौंपकर मानव शरीर में प्रवाहित कर शुभत्व में वृद्धि करता है। अतः रत्न का बेदाग होना एवं शरीर से स्पर्श करना अत्यंत आवश्यक माना गया है।

सामान्यतया उपाय ग्रह दशा के फल की वृद्धि के लिए महादशा स्वामी का किया जाता है। उपाय में मंत्रोच्चारण, दान एवं व्रत ही प्रमुख हैं। रत्न निर्बल परंतु लग्नेश, भाग्येश या योगकारक ग्रहों का पहना जाता है। आपको कब कौन सा उपाय या रत्न धारण करना चाहिए नीचे तालिका में उसके कार्यसिद्धि क्षेत्र सहित दिया गया है। महादशाओं में रत्नों के तीन–तीन विकल्प दिए गए हैं। आपको कोई भी विकल्प उसकी कार्यसिद्धि क्षेत्र एवं क्षमता देखकर अपनी आवश्यकतानुसार पहन सकते हैं तथा अतिरिक्त उपाय भी अपनी क्षमतानुसार कर सकते हैं।

जीवन रत्नः	मूंगा		स्वास्थ्य,शत्रु व रोग मुक्ति,
भाग्य रत्नः	मोती		स्वास्थ्य,भाग्योदय,
कारक रत्नः	माणिक्य		धनार्जन,व्यावसायिक उन्नति,

दशा	रत्न	क्षमता	मंत्र–जप / व्रत / दान / लाभ
शनि	माणिक्य	73%	ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः (23000)
17/09/1950	पुखराज	61%	शनिवार,उड़द, कस्तूरी, कृष्ण गौ, उपानह, तेल
28/11/1961	मूंगा	51%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम, सुख
बुध	माणिक्य	83%	ऊँ ब्रां ब्रीं ब्रौं सः बुधाय नमः (9000)
28/11/1961	पुखराज	65%	बुधवार,मूँग, हाथी दाँत, कपूर, फल, घी
28/11/1978	मूंगा	56%	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, सुख
केतु	माणिक्य	77%	ऊँ स्रां स्रीं स्रौं सः केतवे नमः (17000)
28/11/1978	पुखराज	65%	मंगलवार,तिल, सप्तधान्य, नारियल, शस्त्र, तेल
28/11/1985	मूंगा	60%	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव, सुख
शुक्र	माणिक्य	73%	ऊँ द्रां द्रीं द्रौं सः शुक्राय नमः (16000)
28/11/1985	पुखराज	61%	शुक्रवार,चावल, मिसरी, दधि, श्वेतचन्दन, दूध
28/11/2005	मूंगा	55%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति, कम खर्च
सूर्य	माणिक्य	93%	ऊँ ह्रां ह्रीं ह्रौं सः सूर्याय नमः (7000)
28/11/2005	पुखराज	68%	रविवार,गेहुँ, मूंगा, केसर, रक्तचन्दन, घी
29/11/2011	मूंगा	60%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति, कम खर्च
चन्द्र	माणिक्य	77%	ऊँ श्रां श्रीं श्रौं सः चन्द्रमसे नमः (11000)
29/11/2011	मोती	76%	सोमवार,चावल, शंख, कपूर, श्वेतचन्दन, दही
28/11/2021	मूंगा	63%	स्वास्थ्य, भाग्योदय, कम खर्च
मंगल	मूंगा	77%	ऊँ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः (10000)
28/11/2021	माणिक्य	77%	मंगलवार,मल्का, केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन, तेल
28/11/2028	मोती	66%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति, कम खर्च

नवग्रह रत्न धारण विधि

रत्न का पूर्ण शुभ फल पाने के लिए इसे शुक्ल पक्ष में निर्दिष्ट वार एवं समय में ही धारण करना चाहिए। निर्दिष्ट नक्षत्र में धारण करने से रत्न और भी प्रभावशाली हो जाता है। इसे निम्नलिखित तालिका में दिये गये भार या उससे अधिक भार का लेकर जो किवाया हो एवं पौना न हो जैसे 4–1/4 रत्ती आदि, उसे निर्दिष्ट धातु में इस प्रकार जड़वाएं कि रत्न नीचे से अंगुली को स्पर्श करे।

धारण करते समय अपने इष्ट देव का श्रद्धापूर्वक ध्यान करना चाहिए। तत्पश्चात अंगूठी को कच्चे दूध एवं गंगाजल में धोकर शुद्ध करना चाहिए एवं धूप दीप जलाकर संबंधित ग्रह के मंत्र का कम से कम एक माला जप करना चाहिए। फिर अंगूठी को धूप देकर निर्दिष्ट अंगुली में दाएं हाथ में धारण करना चाहिए। स्त्रियों को बाएं एवं पुरुषों को दाएं हाथ में अंगुली धारण करना चाहिए। अंगूठी धारण के पश्चात यथाशक्ति संबंधित ग्रह के पदार्थों का दान करना चाहिए।

यदि आप अन्य कोई रत्न पहले से पहने हुए हैं तो यह ध्यान रखें कि परस्पर विरोधी रत्न एकसाथ न पहनें। उपरोक्त विधि से रत्न को पहनने से रत्न के शुभ फल प्रचुर मात्रा में शीघ्र मिलते हैं।

रत्न	रत्ती	धातु	अंगुली	दिन	समय	ग्रह	नक्षत्र
माणिक्य	4	सोना	अना	रविवार	सुबह	सूर्य	कृतिका, उ०फाल्गुनी, उत्तराषाढ़ा
मोती	4	चांदी	कनि	सोमवार	सुबह	चन्द्र	रोहिणी, हस्त, श्रवण
मूंगा	6	चांदी	अना	मंगलवार	सुबह	मंगल	मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा
पन्ना	4	सोना	कनि	बुधवार	सुबह	बुध	आश्लेषा, ज्येष्ठा, रेवती
पुखराज	4	सोना	तर्जन	गुरुवार	सुबह	गुरु	पुनर्वसु, विशाखा, पू०भाद्रपद
हीरा	1	प्लेटि	कनि	शुक्रवार	सुबह	शुक्र	भरणी, पू०फाल्गुनी, पूर्वाषाढ़ा
नीलम	4	पंचधातु	मध्य	शनिवार	शाम	शनि	पुष्य, अनुराधा, उ०भाद्रपद
गोमेद	5	अष्टधातु	मध्य	शनिवार	रात्रि	राहु	आर्द्रा, स्वाति, शतभिषा
लहसुनिया	6	चांदी	अना	गुरुवार	रात्रि	केतु	अश्विनी, मघा, मूल

रत्न	मंत्र	निषेध रत्न	दान पदार्थ
माणिक्य	ऊँ घृणि सूर्याय नमः	हीरा, नीलम, गोमेद	गेहूँ,चंदन,घी,लाल वस्त्र
मोती	ऊँ सों सोमाय नमः	गोमेद	चावल,चीनी,घी,श्वेत वस्त्र
मूंगा	ऊँ अं अंगारकाय नमः	हीरा, गोमेद, नीलम	गेहूँ,ताम्र,गुड़,लाल वस्त्र
पन्ना	ऊँ बुं बुधाय नमः	———	मूंग,कांसा,हरित वस्त्र
पुखराज	ऊँ वृं वृहस्पतये नमः	हीरा, गोमेद	चने की दाल,गुड़,पीला वस्त्र
हीरा	ऊँ शुं शुक्राय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	चावल,चांदी,श्वेत वस्त्र
नीलम	ऊँ शं शनैश्चराय नमः	माणिक्य, मूंगा, पुखराज	काला तिल,तेल,काला वस्त्र
गोमेद	ऊँ रां राहवे नमः	माणिक्य, मोती, मूंगा	तिल,तेल,कंबल,नीला वस्त्र
लहसुनिया	ऊँ कें केतवे नमः	———	सप्तधान्य,नारियल,धूम्र वस्त्र

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है । लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है । साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है ।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है । प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है । प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता–पिता पर पड़ता है । द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है ।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है ।

प्रथम चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	25/11/1952-24/04/1953	21/08/1953-12/11/1955	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	12/11/1955-08/02/1958	02/06/1958-07/11/1958	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	08/02/1958-02/06/1958	07/11/1958-02/02/1961	17/09/1961-08/10/1961
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	27/01/1964-09/04/1966	03/11/1966-20/12/1966	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	10/06/1973-23/07/1975	----------	----------

द्वितीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	06/10/1982-21/12/1984	01/06/1985-17/09/1985	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	21/12/1984-01/06/1985	17/09/1985-17/12/1987	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990	20/06/1990-15/12/1990	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993	10/11/1993-02/06/1995	10/08/1995-16/02/1996
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003	07/04/2003-06/09/2004	13/01/2005-26/05/2005

तृतीय चक्रः

साढेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012	04/08/2012-02/11/2014	----------
साढेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017	21/06/2017-26/10/2017	----------
साढेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017	26/10/2017-24/01/2020	----------
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022	17/01/2023-29/03/2025	----------
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	----------	----------

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार	फल	क्षेत्र
साढेसाती प्रथम ढैया	सम	कम खर्च
साढेसाती द्वितीय ढैया	अशुभ	बुरा स्वास्थ्य
साढेसाती तृतीय ढैया	सम	धन
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	शुभ	सुख
अष्टम स्थानस्थ ढैया	अशुभ	दुर्घटना से बचाव

साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म–पादुका, काला कपमुा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उमुद की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ऊँ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

ऊँ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय माऽमृतात।।

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ऊँ हों जूं सः ऊँ भूर्भुव स्वः ऊँ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें । लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डन्ट बनाकर धारण करें ।

ऊँ शं शनैश्चराय नमः।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है ।

योग कारक

किसी भी जन्मकुंडली में ग्रह, अपने स्वामित्व तथा स्थिति के अनुसार, सकारात्मक या नकारात्मक फल देते हैं। ये ग्रह विभिन्न दशा काल में भिन्न–भिन्न प्रकार से आचरण करते हैं, जो दशा स्वामी की स्थिति तथा उससे ग्रह के संबंध पर आधारित है। सुविधा के लिए हमने ग्रह के शुभ तत्वों की संगणना प्रतिशत में की है। 50 से अधिक अंक प्राप्त करने वाले ग्रहों को लाभकारक तथा उससे नीचे हानिकारक समझना चाहिए। इस सूचना को आधार बनाकर आप अपनी जन्मकुंडली में दशा के प्रभावों का अध्ययन स्वयं ही कर सकते हैं। इसी तरह इन आंकड़ों द्वारा गोचर के प्रभाव का भी अध्ययन किया जा सकता है।

योग कारक एवं मारक

लग्न के लिए	:	योग कारक	-	चंद्र, मंगल, सूर्य
		मारक	-	बुध, शुक्र, शनि
जन्मकुंडली के लिए	:	योग कारक	-	मंगल, चंद्र, सूर्य
		मारक	-	केतु, शुक्र, बुध

जन्मकुंडली में ग्रह बल

सूर्य	60%	धनार्जन, व्यावसायिक उन्नति
चन्द्र	79%	स्वास्थ्य, भाग्योदय
मंगल	82%	स्वास्थ्य, शत्रु व रोग मुक्ति
बुध	49%	धनार्जन, दुर्घटना से बचाव
गुरु	59%	सुख, धन, सन्तति सुख
शुक्र	45%	व्यावसायिक उन्नति, दम्पति, कम खर्च
शनि	51%	व्यावसायिक उन्नति, पराक्रम, सुख
राहु	57%	सन्तति सुख, सुख
केतु	39%	धनार्जन,

दशा काल में ग्रह बल

दशा	समाप्ति	सूर्य	चन्द्र	मंगल	बुध	गुरु	शुक्र	शनि	राहु	केतु
शनि	28/11/1961	36	58	59	55	48	85	88	59	25
बुध	28/11/1978	92	45	59	87	48	53	44	47	69
केतु	28/11/1985	67	45	72	74	48	53	31	34	82
शुक्र	28/11/2005	36	58	72	55	48	85	88	59	50
सूर्य	29/11/2011	92	70	72	74	60	28	31	34	57
चन्द्र	28/11/2021	61	102	91	55	60	55	58	51	25
मंगल	28/11/2028	61	102	103	30	73	55	58	51	50
राहु	28/11/2046	36	62	63	43	48	53	56	91	25
गुरु	28/11/2062	61	84	86	30	92	28	44	47	38

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे।
स्त्री भर्तुर्विनाशंच भर्ता च स्त्री विनाशनम्।।

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर–कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

****

आपकी जन्म कुंडली में मंगल लग्न में स्थित है। अतः आप एक मांगलिक पुरुष है इस मंगल के प्रभाव से आपका शारीरिक स्वास्थ्य सामान्यतया अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा पित या गर्मी से किंचित परेशानी हो सकती है लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा। आप स्वभाव से तेजस्वी रहेंगे तथा स्वपराक्रम के द्वारा अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करेंगे। इस मंगल के प्रभाव से आपके विवाह में न्यूनाधिक मात्रा में विलम्ब होगा तथा विवाह संबंधी कोई वार्ता भी असफल हो सकती है लेकिन विवाह अवश्य होगा तथा विवाहोपरांत आपकी पत्नी का स्वास्थ्य भी सामान्यतया अनुकूल ही रहेगा तथा सुखी दाम्पत्य जीवन पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं पड़ेगा।

आपकी कुंडली के प्रथम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ भाव पर दृष्टि होने से जीवन में आपको आवश्यक सुख संसाधनों की प्राप्ति में किंचित परिश्रम करना पड़ेगा साथ ही जमीन जायदाद तथा वाहन आदि से भी आप युक्त रहेंगे। सप्तम भाव पर पूर्ण दृष्टि के प्रभाव से जीवन साथी का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं परस्पर मधुरता के संबंध बने रहेंगे। मंगल की दृष्टि अष्टम भाव पर होने के कारण सांसारिक कार्यों में यदा कदा व्यवधान उत्पन्न होंगे परन्तु उनका सामना तथा समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। उर्पयुक्त योग के प्रभाव से यदा कदा पित जनित कष्ट की भी संभावना रहेगी लेकिन इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं होगा।

अतः मंगल के दुष्प्रभाव को कम करने तथा शुभ प्रभावों में वृद्धि करने के लिए आपको किसी मांगलिक कन्या से विवाह करना चाहिए जिससे मांगलिक दोष परस्पर भंग हो सके । इसके लिए कन्या की कुंडली में मांगलिक भावों अर्थात प्रथम, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम एवं द्वादश भाव में शनि राहु या अन्य पाप ग्रह की स्थिति होनी चाहिए। यदि इस प्रकार मांगलिक दोष भंग होने के

पश्चात आप विवाह करेंगे तो आपका शारीरिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा जीवन में समस्त सुखोपभोग की सामग्री को अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। साथ ही धन ऐश्वर्य से युक्त होकर आप सुख पूर्वक अपना दाम्पत्य जीवन व्यतीत करेंगे।

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय।।

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादाश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं–

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलार्द्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलार्द्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं । कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते है। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है।

नक्षत्रफल

आपका जन्म अनुराधा नक्षत्र के द्वितीय चरण में हुआ हैं। अतः आपकी जन्म राशि वृश्चिक तथा राशि स्वामी मंगल होगा। नक्षत्र के अनुसार आपका वर्ण विप्र, गण देव, नाड़ी मध्य, योनि मृग तथा वर्ग सर्प होगा। नक्षत्र के चरणानुसार आपके जन्म नाम का प्रथम अक्षर "नि" से प्रारम्भ होगा। यथा– निरंजन, नितिन आदि

आप पुरूषार्थ से सुसम्पन्न व्यक्ति होंगे तथा आपके सभी सांसारिक कार्य परिश्रम तथा ईमानदारी से पूर्ण होंगे। अपने कार्यों के संबंध में आप अधिकांश देश विदेश की यात्राएं करते रहेंगे तथा अपना अधिकांश समय घर से बाहर ही व्यतीत करेंगे। अपने समीपस्थ संबंधियों तथा अपने बन्धुवर्ग के हितकार्यों को सम्पन्न करने में आप सर्वथा तत्पर रहेंगे। साथ ही अन्य कार्यों में भी यथाशक्ति उनको अपना सहयोग प्रदान करेंगे। उनके लिए इतने कार्यों को करके आपके अर्न्तमन में अत्यन्त ही प्रसन्नता तथा सन्तुष्टि का भाव संचारित होगा तथा आप पूर्ण रूपेण प्रसन्नचित रहेंगे।

पुरूषार्थी प्रवासी च बन्धुकार्ये सदोद्यतः।
अनुराधोद्भवो लोके जायते हृष्टमानसः।।
जातक दीपिका

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक पुरूषार्थी, प्रवासी, बन्धुओं के कार्य को करने में तत्पर तथा हमेशा प्रसन्नचित रहता है।

आप प्रिय एवं मधुर वाणी का अपने सम्भाषण में प्रयोग करेंगे फलतः अन्य लोग आपसे प्रसन्न एवं सन्तुष्ट रहेंगे। आप धन धान्यादि से हमेशा परिपूर्ण रहेंगे तथा जीवन काल में कभी भी इसका अभाव महसूस नही करेंगे। समस्त भौतिक सुख संसाधनो की आपके पास प्रचुरता रहेगी तथा जीवन में आनन्दपूर्वक आप हमेशा उपभोग करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आप अपने समाज में एक आदरणीय तथा सम्माननीय होंगे तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि फैली रहेगी। साथ ही वैभव एवं ऐश्वर्य से युक्त रहकर आप सर्वसामर्थ्यवान पुरूष रहेंगे।

मैत्रे सुप्रियवाग्धनी सुखरतः पूज्यो यशस्वी विभुः।।
जातकपरिजातः

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र का जातक प्रिय तथा सुन्दर वाणी बोलने वाला, धनवान, सुखसंसाधनों में लिप्त रहने वाला, पूज्य, यशस्वी तथा सामर्थ्यवान व्यक्ति होता है।

आप एक धनाढ्य पुरूष होकर अपना अतिरिक्त समय विदेश या घर से बाहर व्यतीत करेंगे। कभी कभी आप अपने कार्य की अतिव्यस्तता के कारण या अन्य किन्ही सांसारिक कारणों से भोजन समय पर न लेने के कारण भूख से व्याकुलता की अनुभूति करेंगे। साथ ही घूमने फिरने

कें भी आप विशिष्ट शौकीन रहेंगे तथा पिकनिक आदि में अपना समय व्यतीत करेंगे।

आढ्यो विदेशवासी क्षुधालुरटनोऽनुराधासु।।
बृहज्जातकम्

अर्थात अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक धनवान, विदेश में वास करने वाला, भूख से व्याकुल रहने वाला तथा भ्रमण प्रिय होता है।

आपकी शारीरिक कान्ति हमेशा दैदीप्यमान रहेगी जो आपकी सुन्दरता में वृद्धि करेगी। उत्सव आयोजन करना आपका प्रिय कार्य होगा। अतः समय समय पर विभिन्न प्रकार की पार्टियों आदि का आप आयोजन करके अपने इस शौक को पूरा करेंगे। आपके शत्रु आपसे सदा पराजित तथा भयभीत दौरान आपकी– प्रति उनमें विरोध प्रकट करने की शक्ति का सर्वथा अभाव रहेगा। आपको कई प्रकार की कलाओं में भी उत्तम ज्ञान रहेगा तथा पर्याप्त धनैश्वर्य का अर्जन करके आप इनका सुखपूर्वक जीवन में उपभोग करेंगे।

सत्कान्तिकीर्तिश्च सदोत्सवः स्याज्जेतारिपूणां च कला प्रवीणः।
स्यात्संभवे यस्य किलानुराधा समृद्धिशाला विविधा च तस्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात् अनुराधा नक्षत्र में उत्पन्न जातक कान्तिमान, यशस्वी, सर्वथा उत्सव करने वाला, शत्रुओं को पराजित करने वाला, अनेक कलाओं में निपुण तथा बहुत सम्पति का भोगी होता है।

आपका जन्म स्वर्ण पाद में हुआ हैं। यद्यपि स्वर्ण पाद में उत्पन्न होने से जातक को कई प्रकार से दुःख एवं कष्ट प्राप्त होते हैं। उसका शारीरिक स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता तथा धनाभाव हमेशा रहता हैं। साथ ही जातक जीवन में सुखसंसाधनो से भी हीन रहता हैं। सांसारिक कार्यों में उसे अल्प मात्रा में ही सफलता अर्जित होती हैं। इसके अतिरिक्त जीवन के हर क्षेत्र में अत्याधिक परिश्रम के द्वारा उसे अल्प सफलता प्राप्त होती हैं। चूंकि आपका चन्द्रमा जन्म कुण्डली में अपनी शुभ राशि में स्थित हैं। अतः आपके लिए यह स्वर्ण पाद विशेष अशुभ नहीं रहेगा। अपितु आपके लिए अधिकांश रूप से शुभ ही रहेगा। अतः आपका शारीरिक स्वरूप देखने में सुन्दर तथा आकर्षक रहेगा। आप उदार स्वभाव के व्यक्ति होंगे तथा सभी लोगों के प्रति आपके मन में दयाभाव रहेगा। जीवन में समस्त प्रकार के सुख तथा धन सम्पत्ति से आप सुसम्पन्न रहेंगे तथा सु खपूर्वक इनका उपभोग करेंगे। साथ ही विभिन्न प्रकार के ऐश्वर्य तथा वैभव से भी आप युक्त रहेंगे। आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा तथा शारीरिक बल से आप पूर्ण रूपेण सुसम्पन्न रहेंगे। आप निर्भयता पूर्वक अपना सांसारिक जीवन व्यतीत करेंगे तथा किसी भी प्रकार का भय आपके हृदय में नहीं रहेगा। आप में चतुराई तथा बुद्धिमता का भाव भी रहेगा एवं आपके अधिकांश सांसारिक कार्य इसी तरह से सम्पन्न होंगे। इसके अतिरिक्त आप विविध प्रकार के सद्गुणों से भी सुशोभित रहेंगे।

वृश्चिक राशि में उत्पन्न होने के कारण आपका सीना विशाल तथा नेत्र बड़े बड़े होंगे। साथ ही आपके शारीरिक वर्ण में तनिक श्यामलता का समावेश दृष्टिगोचर होगा। आपके हाथ अथवा पैर में कहीं पर मछली का चिन्ह भी हो सकता हैं एवं हाथ की अधिकांश रेखाएं वज्र एवं प क्षी के आकार की तरह दृष्टिगोचर होंगी। आप अपने माता पिता तथा गुरूजनों से अल्प मात्रा में ही सम्बन्ध रखेंगे। अतः उनसे सहयोग तथा स्नेह भी अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। आप बचपन में काफी बीमार भी पड़ सकते हैं। आप तीव्रबुद्धि के पुरूष होंगे तथा अपने इसी तीव्र बुद्धि एवं अथक परिश्रम के कारण सरकार में किसी उच्चाधिकार प्राप्त पद को प्राप्त करने में सफलता प्राप्त करेंगे। आपकी प्रवृति कठोर कार्यों को करने के लिए उद्यत रहेगी। अतः सेना, पुलिस या सर्जरी आदि विभागों में आप कार्य कर सकेंगे। यदा कदा आप अपने स्वभाव से अन्य लोगों के प्रति दुष्टता का भी प्रदर्शन करेंगे। अतः कुछ लोग आपसे कष्ट प्राप्त करेंगे।

पृथुलनयनवक्षा वृहज्जङ्घोरूजानुः।
जनकगुरूवियुक्तः शैशवे व्याधितश्च।।
नरपति कुलपूज्यः पिंगलः क्रूरचेष्टो।
झषकुलिशखगाङ्कश्च छन्नपापोळलिजातः।।
बृहज्जातकम्

आप का पेट तथा मस्तक भी दीर्घाकार के होंगे। आप में लोलुपता की भावना प्रारम्भ से ही विद्यमान रहेगी तथा अन्य जनों की वस्तुओं के प्रति आप में यह भावना उत्पन्न होगी। आपका शरीर कोमलता एवं कान्ति से भी युक्त रहेगा। आपकी प्रवृति धार्मिक भी होगी तथा भगवान के प्रति आपके मन में आस्था रहेगी। आप अपने सम्पूर्ण जीवन में धन वैभव तथा ऐश्वर्यादि से सुशोभित रहेंगे तथा प्रसन्नतापूर्वक इसका उपभोग कर सकेंगे। स्वकार्यों को सम्पन्न करने में आप दक्ष होंगे तथा नित्यप्रति कार्य करने में हमेशा तत्पर रहेंगे। निष्क्रिय होकर बैठना आपको रूचिकर नहीं लगेगा। बन्धुवर्ग से आपको सहयोग प्राप्त होता रहेगा। आप एक पूर्ण पराक्रमी पुरूष होंगे तथा सभी लोग आपका प्रभाव स्वीकार करेंगे एवं मन से आपको सम्मान भी प्रदान करेंगे। आप के स्वभाव में क्रोध का भाव भी विद्यमान रहेगा तथा समाज में अन्य जनों के साथ भी आपके प्रेमपूर्वक संबंध रहेंगे। इसके अतिरिक्त सरकार के द्वारा आपको धनहानि भी सहन करनी पड़ सकती हैं।

लुब्धो वृतोरूजङ्घः कठिनतरर्तनुर्नास्तिकः क्रूरचेष्टः।
चौरो बालो रूगार्तो हतचिबुकनखश्चारूनेत्रः समृद्धः।।
कर्मोद्युक्तः प्रदक्षः परयुवतिरतो बन्धुहीनः प्रमत्तः।
चण्डराजो हृतस्वः पृथुजठरशिरा कीटभे शीतरश्मौ।।
सारावली

आप के पास धन की बहुलता रहेगी तथा अपने बृहद् परिवार के अतिरिक्त अन्य बन्धुजनों का भी आप पालन करने में तत्पर रहेंगे स्त्रियों के विषय में आप अत्यन्त ही भाग्यशाली

रहेंगे तथा इनसे पूर्ण सेवा सहयोग तथा लाभार्जन करने में सक्षम रहेंगे। सद्गुणों से आप सर्वथा युक्त रहेंगे तथा आदर्श मनुष्यता के गुण भी आप में स्पष्ट रूप से परिलक्षित होंगे। साथ ही आप सरकारी सेवा में भी सदैव तत्पर रहेंगे। आपके हृदय में हमेशा दूसरे के धन को अपना बना लेने की इच्छा व्याप्त रहेगी तथा आजीवन आप इसके लिए तत्पर भी रहेंगे। आप एक दृढ प्रतिज्ञ पुरूष होंगे तथा जिस चीज का एक बार संकल्प कर लेंगे उसे अन्त में पूर्ण करके ही छोड़ेंगे। आप वीरता के गुणों से सम्पन्न रहेंगे।

बहुधनजनभोगी स्त्रीसु सौभाग्ययुक्तः।
पिथुनयति मनस्वी राजसेवानुरक्तः।।
अभिलषति परार्थं नित्यमुद्योगयुक्तो।
दृढ़मतिरतिशूरो वृश्चिको यस्य राशिः।।
जातकदीपिका

यदा कदा आप मनोरंजन या समय व्यतीत करने के लिए जुआ या अन्य मनोरंजन खेलों को खेलेगे परन्तु इनमें आपको काफी आर्थिक हानि होगी। आप उग्र स्वभावी होने के कारण अन्य जनों से आपका विवाद भी होता रहेगा। कभी कभी आप अपने को मन से कमजोर महसूस करेंगे। साथ ही जीवन में आप को शान्ति की अनुभूति भी अल्प मात्रा में ही होगी अन्यथा अशान्त ही महसूस करेंगे।

शशधरे हि सरीसृपगे नरो नृपदुरोदरजातधनक्षयः।
कलिरूचिर्विबलः खलमानसः कृशमनाः शमनापहतो भवेत।।
जातकाभरणम्

आप बचपन से ही इधर उधर भ्रमण के शौकीन रहेंगे। आपकी प्रवृति अभिमानी भी होगी। अपने सम्बन्धियों तथा बन्धुजनों के प्रति आपके हृदय में स्नेह की भावना भी विद्यमान रहेगी। आप अपने साहसिक कार्यों के द्वारा पूर्ण रूप से धनार्जन करने में सफलता अर्जित करेंगे।

बालप्रवासी क्रूरात्मा शूरः पिंगल लोचनः।
परदाररतो मानी निष्ठुरः स्वजने भवेत।।
साहसप्राप्तलक्ष्मीको जनन्यामपि दुष्ट धीः।
धूर्तश्चौरकलारम्भी वृश्चिके जायते नरः।।
मानसागरी

देवगण में उत्पन्न होने के कारण आपकी वाणी अत्यन्त ही मधुर एवं प्रिय होगी जो श्रोता गणों को प्रसन्नता प्रदान करेगी। आपकी बुद्धि अत्यन्त ही सरल होगी। आप अपने विचारों को सरलतापूर्वक प्रस्तुत करेंगे तथा अन्य के विचारों को भी सरलतापूर्वक ग्रहण करने में समर्थ रहेंगे। आप थोड़ी मात्रा में शुद्ध तथा सात्विक भोजन करना पसन्द करेंगे। अन्य जनों के गुणों के विषय में आपको पूर्ण ज्ञान रहेगा तथा स्वयं भी आप महान विद्वानों द्वारा वर्णित उच्च एवं सद्गुणों

से सर्वथा सुशोभित रहेंगे। साथ ही अपने सम्पूर्ण जीवन में आप नाना प्रकार के धनैश्वर्य से सुसम्पन्न रहेंगे तथा सुखपूर्वक जीवन में उसका उपभोग करेंगे।

आप देखने में सुन्दर होंगे तथा दानशीलता की भावना से भी युक्त रहेंगे एवं समय समय पर समाज में अपनी इस प्रवृति का प्रदर्शन करते रहेंगे। आप एक बुद्धि मान पुरूष होंगे तथा सादगी पूर्ण ढंग से जीवन व्यतीत करना पसन्द करेंगे। आप अपने समाज में एक उच्चकोटि के विद्वान होंगे एवं समाज में पूर्ण सम्मानित तथा पूज्य समझे जाएंगे।

सुस्वरः सरलोक्तमतिः स्यादल्पभोजन करो हि नरश्च।
जायते सुरगणे ऽणज्ञः सुज्ञवर्णितगुणो द्रविणाढ्यः।।
जातकाभरणम्

अर्थात देवगण का जातक अच्छी वाणी वाला, सरल बद्धि से युक्त, अल्प मात्रा में भोजन करने वाला, अन्य जनों के गुणों का ज्ञाता, महान विद्वानों द्वारा वर्णित गुणों से युक्त तथा वैभवशाली होता है।

मृग योनि में उत्पन्न होने के कारण आप की प्रवृति स्वतंत्रताप्रिय रहेंगी तथा अपने समस्त कार्यों को अपने ही तरीके से करना पसन्द करेंगे बाहरी हस्तक्षेप आपको अच्छा नहीं लगेगा। आपकी प्रवृति शान्त रहेगी तथा चंचलता का उसमें अभाव रहेगा। आप की आजीविका शुद्ध साधनों से युक्त रहेगी तथा सद्कार्यों के द्वारा आप अपनी आजीविका का अर्जन करेंगे। सत्य एवं धर्म में आपकी पूर्ण आस्था रहेगी तथा नियमपूर्वक आप इसका पालन करने के लिए यत्नशील रहेंगे। आपका समीपस्थ संबंधियों तथा बन्धुवर्ग के प्रति हमेशा स्नेह शील व्यवहार रहेगा तथा उनको आप हमेशा कुछ न कुछ सहयोग अवश्य प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आप एक पराक्रमी एवं शूरवीर पुरूष होंगे तथा समाज में आपका पूर्ण प्रभाव रहेगा।

स्वच्छन्दः शान्तसद्वृतिः सत्यवान स्वजनप्रियः।
धार्मिको रणशूरश्च यो नरो मृगयोनिजः।।
मानसागरी

अर्थात मृग योनि का जातक स्वच्छन्द, शान्त प्रिय, अच्छी प्रकार की जीविका निर्वाह करने वाला एवं युद्ध क्षेत्र में शूरवीर होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी– प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

आपके लिए आश्विन मास, प्रतिपदा, एकादशी तिथियां, रेवती नक्षत्र, व्यधिपात योग, गरकरण, शुक्रवार प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा हमेशा अशुभ फल दायक रहेंगे। अतः आप 15 सितम्बर से 14 अक्टूबर के मध्य, रेवती नक्षत्र, 1,6,11 तिथियों, गरकरण तथा व्यतिपात योग में कोई भी शुभ कार्य व्यापार प्रारम्भ, नवगृहनिर्माण, क्रयविक्रयादि अन्य शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को प्रारम्भ न करें अन्यथा लाभ की अपेक्षा हानि ही होगी। साथ ही शुक्रवार, प्रथम प्रहर तथा वृष राशिस्थ चन्द्रमा को भी शुभ कार्यों में वर्जित रखे। इन दिनों तथा समय में शारीरिक सुरक्षा का भी ध्यान रखें।

यदि आपके लिए समय अशुभ चल रहा हो मानसिक तथा शारीरिक व्याकुलता, व्यापार में हानि, नौकरी या पदोन्नति में बाधा तथा महत्वपूर्ण कार्यों में असफलता प्राप्त हो रही हो तो ऐसे समय में आपको अपने इष्ट भगवान शिव की श्रद्धापूर्वक उपासना करनी चाहिए तथा नित्य

शिवालय जाकर विल्वपत्र अर्पण करने चाहिए। साथ ही मूंगा, सोना, रक्त वस्त्र, रक्त चन्दन, गेंहू आदि पदार्थो का श्रद्धापूर्वक दान करना चाहिए। इससे आपको मानसिक शान्ति प्राप्त होगी तथा अन्य अशुभ फलो में भी कमी होगी। साथ ही मंगल के तांत्रीय मंत्र के कम से कम 7000 जप किसी योग्य विद्वान से सम्पन्न करवाने चाहिये।

ऊँ क्रां क्रीं क्रों सः भौमाय नमः।
मंत्र– ऊं हुँ श्रीं भौमाय नमः।

ग्रह फल

सूर्य

ग्यारहवें भाव में सूर्य हो तो जातक धनी, बलवान्, सुखी, स्वाभिमानी, तपस्वी, मितभाषी, सदाचारी, योगी, अल्पसन्तति एवं उदररोगी होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवकवादी, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् –बुद्धिमान, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य एकादश भाव में स्थित है अतः आप पिता के हमेशा प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से वे शारीरिक व्याकुलता की अनुभूति भी करेंगे। धनैश्वर्य एवं सम्मान से वे हमेशा युक्त रहेंगे एवं जीवन में आपको सर्वप्रकार के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे। साथ ही आपके धनार्जन के साधनों की उन्नति में भी वे आपको प्रायः सहयोग तथा निर्देश प्रदान करते रहेंगे।

आपकी भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान की भावना रहेगी एवं उनकी आज्ञा का अनुपालन करने के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे तथा यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे। आप जीवन में उनको हमेशा वांछित सहयोग तथा सहायता प्रदान करते रहेंगे एवं अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार से कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

लग्न (प्रथम) में चन्द्रमा हो तो जातक बलवान्, सुखी, स्थूलशरीर, गान वाद्य प्रिय, ऐश्वर्यशाली, व्यवसायी, उदार, धनी एवं विद्वान होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता–पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्म काल में चन्द्रमा की स्थिति लग्न में विद्यमान है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य आपके ग्रहों के शुभप्रभाव से अच्छा रहेगा एवं वे लम्बी आयु प्राप्त करेंगी। धन सम्पत्ति की भी उनको प्राप्ति होगी तथा इससे वे प्रायः युक्त ही रहेंगी। आपके प्रति उनका पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में सभी शुभ तथा महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको यथोचित सहयोग तथा सहायता प्रदान करती रहेंगी। आपके परस्पर अच्छे संबंध रहेंगे एवं आपसी मतभेदों की अल्पता रहेगी।

आप भी उनके प्रति हार्दिक सम्मान तथा आदर की भावना रखेंगे तथा उनकी आज्ञा पालन के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। इससे आप लोगों के आपसी विश्वास में वृद्धि होगी जो भविष्य में उन्नति दायक रहेगी। इस प्रकार आप भी जीवन में उनको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे।

मंगल

लग्न (प्रथम) में मंगल हो तो जातक, चपल, क्रूर, महत्वाकांक्षी, विचार रहित, गुप्तरोगी, उतावला, लौहधातु एवं व्रणजन्य, कष्ट से युक्त, व्यवसायहानि, दुर्घटना की सम्भावना, दुःखी, निर्धन एवं साहसी होता है।

वृश्चिक राशि में मंगल हो तो जातक नीति–दक्ष, अच्छी स्मरण शक्ति ईर्ष्यालु स्वभाववाला, बहुतहठी, अभिमानी, चोरों का नेता, पातकी एवं दुराचारी होता है।

आपके जन्म काल में मंगल प्रथम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहिनों का स्वास्थ्य मध्यम रहेगा एवं यदा कदा शारीरिक अस्वस्थता उनमें परिलक्षित होगी। धन धान्य से वे प्रायः सुसम्पन्न ही दौरान आपकी– प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह भाव रहेगा एवं जीवन में आपको प्रायः अपना आर्थिक या अन्य प्रकार से सहयोग प्रदान करते रहेंगे।

आप भी उनको हृदय से चाहेंगे तथा उनकी वांछित सहायता एवं सहयोग करने के लिए हमेशा तत्पर रहेंगे। आपके परस्पर संबंध मधुर ही होंगे परन्तु यदा कदा मतभेद के कारण संबंधों में कटुता या तनाव भी उत्पन्न होगा लेकिन यह अल्प समय के लिए ही रहेगा उसके बाद सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इस प्रकार मध्यम रूप से आप एक दूसरे का परस्पर सहयोग करते रहेंगे।

बुध

ग्यारहवें भाव में बुध हो तो जातक ईमानदार, सुन्दर, पुत्रवान्, सरदार, गायनप्रिय, विद्वान्, प्रसिद्ध, धनवान्, सदाचारी, योगी, दीर्घायु, शत्रुनाशक एवं विचारवान् होता है।

कन्या राशि में बुध हो तो जातक वक्ता, कवि, साहित्यिक, लेखक, सम्पादक, ज्योतिषी, खगोलशास्त्री, गणितज्ञ, अध्यापक, उदार, सुखी एवं अच्छा चरित्र वाला होता है।

गुरु

चतुर्थभाव में गुरु हो तो जातक शौकीन मिजाज, सुन्दरदेही, आरामतलब, परिश्रमी, ज्योतिषी, उच्चशिक्षा प्राप्त, कमसन्तान, सरकार द्वारा सम्मानित, माँ से स्नेह करने वाला, कार्यरत, उद्योगी, लोकमान्य, यशस्वी एवं व्यवहारज्ञ होता है।

कुम्भ राशि में गुरु होतो जातक विद्वान परन्तु धनहीन, लोकप्रिय, मिलनसार, स्वप्नों के जगत में विचार करने वाला डरपोक प्रवासी, कपटी एवं रोगी होता है।

शुक्र

दशम भाव में शुक्र हो तो जातक गुणवान्, दायालु, विलासी, ऐश्वर्यवान्, भाग्यवान्, न्यायवान् विजयी, गानप्रिय, धार्मिक ज्योतिषी एवं लोभी होता है।

सिंह राशि में शुक्र हो तो जातक, अल्पसुखी उपकारी, चिन्तातुर, शिल्पज्ञ, स्त्रियों के द्वारा धन अर्जित करने वाला, कामुक, आवेशपूर्ण एवं अपने को दूसरों से ऊँचा समझने वाला होता है।

शनि

दशम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान, ज्योतिषी, राजयोगी ,न्यायी, नेता, धनवान्, राजमान्य, उदरविकारी, अधिकारी, चतुर, भाग्यवान् परिश्रमी, निरुद्पयोगी एवं महत्त्वाकांक्षी होता है।

सिंह राशि में शनि हो तो जातक लेखक, अध्यापक, कार्यदक्ष, हठी, कमसन्तान, अभागा एवं ईर्ष्यालु स्वभाव वाला होता है।

राहु

पंचम भाव में राहु हो तो जातक शास्त्रप्रिय, कार्यकर्ता, भाग्यवान्, उदररोगी, मतिमन्द, कुल धननाशक, धनहीन, नीतिदक्ष एवं सन्तान के लिए अशुभ होता है।

मीन राशि में राहु हो तो जातक आस्तिक, कुलीन, शान्त, कलाप्रिय और दक्ष होता है।

केतु

ग्यारहवें भाव में केतु हो तो जातक बुद्धिहीन, निजका हानिकर्त्ता, अरिष्टनाशक एवं वातरोगी होता है।

कन्या राशि में केतु हो तो जातक सदारोगी, मूर्ख, मन्दाग्निरोग एवं व्यर्थवादी होता है।

लग्न फल

आपका जन्म विशाखा नक्षत्र के चतुर्थ चरण में वृश्चिक लग्नोदय काल में हुआ था। साथ–साथ वृश्चिक लग्न के उदित काल कर्क नवमांश एवं वृश्चिक द्रेष्काण भी उदित हुआ था। फलस्वरूप आपके जन्म आकृति से यह सूचित हो रहा है कि आपको समृद्धि एवं सफलता हेतु तीनों ओर से वाधित पथ में से कोई एक पथ का चयन करना होगा। आप अपने प्रतिपक्षी को बिना किसी भी प्रकार की अगुआई के आक्रमण कर उसे पराजित कर सकते हैं।

आप अपने लक्ष्य के प्रति समर्पित प्राणी हैं। अच्छा समय आने पर आप धन संचय करने की महत्वकांक्षा की पूर्ति करने में सफल हो सकते हैं तथा आपकी वासनात्मक आकांक्षा की भी पूर्ति हो सकती है। यदि आपके साथ कोई डींग मारकर भ्रमित करता है तो आप अपने मस्तिष्क को झाड़पोछ कर एक ओर कर के उसके माप दण्ड को स्वीकार कर अपनी उन्नति के लिए द्विपक्ष में से उस पक्ष को अपने सहयोगी बना लेंगे जो आपके लिए उपयुक्त होगा। आप सदैव धनी अर्थात् समृद्धशाली व्यक्ति से इर्ष्या रखते हैं तथा आप चरम सीमा तक उसके साथ चलना ठीक समझते हैं। आपका सौभाग्य साथ दिया तो आप भविष्य में सफलता प्राप्त करने में अग्रसर होंगे। परंतु आप अधिकतर अहंकारिक भावना से अति असत्यता हेतु कठिन साध्य से ऊपर उठकर युद्धकारी प्रवृति कर लेंगे। परंतु आपको सर्वथा संयमित होना चाहिए। परिणामस्वरूप आप अपने शत्रु समुदाय की वृद्धि कर लेंगे। लेकिन आगे आप विषाक्त जलन उत्पन्न करते रहे तो आपकी पूंछ को कतर देंगे अर्थात् आपको वे शत्रु पराजित कर देंगे।

आप अपने घरेलू जीवन में जो शासनपूर्ण व्यवहार करते हैं उस प्रवृति के प्रति झुकाव लाना होगा। इसके स्थान पर आपको सामंजस्यता की प्रवृति को स्वीकार करना उत्तम होगा। आप घर में तानाशाही प्रवृति जैसा व्यवहार करना चाहते है। आपकी इस प्रकार की प्रवृति रही अर्थात् इस प्रवृति का त्याग नहीं किया गया तो इस कारण वश अतिरिक्त लाभ करना एक जालसाजी सिद्ध होगा। जो अपनी पत्नी के साथ अच्छा संबंध नहीं रह सकेगा और दूसरा अन्य कारण आपकी वासनात्मक प्रवृति से स्वार्थ साधना प्रमाणित होगा। यद्यपि आप अपनी पत्नी के साथ स्नेहयुक्त संबंध रखेंगे। परंतु आप सदैव ज्वार भाटा के समान दूसरों के साथ वासनात्मक संबंध रखेंगे। यदि आप इन दो प्रमुख विशेषताओं का सुधार नहीं करते हैं तो आपका परिवारिक जीवन सुखी नहीं रहेगा। अतः आप अपनी आगामी कार्य योजना में वैवाहिक जीवन के समक्ष सार्थकता नहीं रह जाएगी। आप अपने विवाह हेतु अर्थात् जीवन संगिनी हेतु उस साथी का चयन करें जिसका जन्म कर्क, मीन, वृश्चिक, वृष, कन्या एवं मकर राशि में हुआ हो अर्थात् उपरोक्त राशियों की लड़की आपके वैवाहिक आनन्द हेतु उपयुक्त होगी।

यद्यपि आप बहुत अधिक धन का उपार्जन करेंगे। आप अपने बैंक के कोष की सुदृढ़ता चाहते हैं जबकि आप धन का अपव्यय भी किया करते हैं। आप बिना जरूरत धन का व्यय करने पर नियंत्रण रखें।

वृश्चिक राशि के प्राणी वृश्चिक स्वाभावात्मक प्राणी को पसंद नहीं करते। ये सामान्यतः समानुपातिक शारीरिक ढ़ाँचे के होते है। इनका व्यक्तित्व सुंदर लगता है। यद्यपि इनकी आकृति औसतन उपयुक्त होती है। ये अपनी योजना को अधिकारपूर्ण ढंग से सम्मिलित करते हैं क्योंकि इनकी विस्तृत मुखाकृति स्थिर एवं घुंघराले बालों से युक्त होते हैं। ये अपनी मनोवृति के प्रति सतर्क रहते हैं। आप मध्यम अवस्था में मोटे हो जाएंगे। जिसकी वजह से इनकी आकृति बिगड़ सकती है, अन्यथा ये प्रतिभा संपन्न आकृति के होंगे।

आप शारीरिक दृष्टिकोण से पूर्णतः बलिष्ठ होंगे। परंतु आपको कतिपय रोगों के प्रति सतर्क रहना आवश्यक है, अन्यथा वृद्धावस्था में कुछ गलत प्रभाव से अति निर्बलता, ग्रन्थि रोग, एवं मस्तिष्क रोग से संबंधित मस्तिष्क ज्वर से आक्रांत हो सकते हैं।

आपको अपनी प्रगति हेतु निम्नांकित व्यवसायों में से उत्तम व्यवसाय का चयन करना चाहिए। यथा–केमेस्ट्री, अनुसंधान कार्य, मेडिकल एवं मातृत्व चिकित्सा इन्सयोरेंस, आपराधिक छानबीन, लौह एवं स्टील के कार्य अथवा प्रतिरक्षा सेवा अथवा कलाकारिता आदि। आप संगीत कला का भी कुछ समय अभ्यास कर सकते हैं।

साप्ताहिक दिनों में आपका भाग्यशाली दिन रविवार, सोमवार, एवं मंगलवार, है। आपके लिए वास्तव में शुक्रवार, बुधवार एवं शनिवार का दिन अनुकूल नही है।

आपके लिए अंकों में अनुकूल 1, 2, 3, 4 एवं 9 अंक है। इसे अतिरिक्त 5, 6 एवं 8 अंक आपके लिए प्रतिकूल है।

आपके लिए रंग पीला, लाल, नारंगी एवं क्रीम रंग अनुकूल है। इसके अतिरिक्त रंग सफेद, ब्लू एवं हरा रंग सर्वथा त्याज्यनीय है।

शारीरिक गठन, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्मसमय में लग्न में वृश्चिक राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यता वृश्चिक लग्न में उत्पन्न जातक स्वस्थ एवं हृट पुष्ट होते हैं। इनमें शारीरिक बल की प्रचुरता रहती है अतः परिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ये अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सम्पन्न करके उनमें सफलता अर्जित करते हैं। स्वभाव से ये निर्भीक होते हैं तथा विभिन्न शास्त्रों का ज्ञानार्जन करके एक विद्वान के रूप में इनकी छवि रहती है। परिवार में ये श्रेष्ठ होते हैंतथा मित्र एवं बन्धुवर्ग में सम्माननीय समझे जाते हैं। ये अत्यधिक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होते हैं तथा आत्मिक शक्ति की भी इनमें प्रबलता रहती है।

धन संग्रह के प्रति भी इनकी रूचि रहती है तथा धर्नाजन में नैतिक सीमा का अनुपालन कम ही करते हैं। इसके अतिरिक्त विज्ञान या गणित में इनकी विशेष रूचि रहती है तथा इस क्षेत्र में उनको सफलता एवं यश की प्राप्ति होती है।

अतः इसके प्रभाव से आप स्वस्थ एवं हृष्ट पुष्ट व्यक्ति होंगे तथा स्वपराक्रम एवं परिश्रम से सांसारिक कार्यों में सफलता अर्जित करेंगे इससे आपके उन्नति मार्ग प्रशस्त होंगे तथा जीवन में धनैश्वर्य वैभव एवं सुख संसाधनों को अर्जित करके सुख पूर्वक उनका उपभोग करने में समर्थ रहेंगे। निर्भीकता तथा लगनशीलता का भी भाव आप में विद्यमान होगा। अतः कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। विज्ञान गणित या मेडिकल के क्षेत्र में आप विशिष्ट उन्नति या सफलता अर्जित कर सकते हैं।

आप एक महत्वाकांक्षी व्यक्ति होंगे तथा अपनी महत्वाकांक्षाओं को पूर्ण करने के लिए सर्वदा यत्नशील रहेंगे। धनसंग्रह में भी आपकी रूचि होगी परन्तु इससे आपके समीपस्थ लोग असुविधा महसूस करेंगे। आपके महत्वपूर्ण कार्य भावना से नहीं बल्कि बुद्धि द्वारा संचालित होंगे। अतः सामान्य रूप से आप प्रसन्नतापूर्वक आप अपना समय व्यतीत करेंगे।

लग्न में मंगल की स्थिति के प्रभाव से आप स्वस्थ एवं बलवान होंगे मानसिक शांति भी बनी रहेगी। पराक्रम एवं तेजस्विता का भाव प्रारम्भ से ही आप में विद्यमान होगा तथा इन गुणों से आप अपने सांसारिक महत्व के कार्य कलापों को सम्पन्न करके उनमें सफलता प्राप्त करेंगे। इससे आप धनैश्वर्य अर्जित करेंगे तथा अन्य भौतिक सुख संसाधनों की भी प्राप्ति होगी जिनका आप आनंदपूर्वक उपभोग करेंगे परन्तु यदा कदा तेजस्विता के स्थान पर उग्रता या क्रोध का असमय प्रदर्शन करेंगे। इससे आपको अनावश्यक समस्याएं एवं परेशानियां उत्पन्न होगी।

धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव अवश्य रहेगा परन्तु धार्मिक कार्यकलापों एवं अनुष्ठानों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे। मित्र वर्ग में आप लोकप्रिय एवं आदरणीय होंगे तथा उनसे आपको वांछित सहयोग एवं लाभ समय समय पर मिलता रहेगा इस प्रकार आप स्वस्थ बलवान पराक्रमी तेजस्वी धनसंग्रह कर्ता एवं परिश्रमी पुरूष होंगे तथा स्वपुरूषार्थ से जीवन में इच्छित सुख संसाधनों को अर्जित करके प्रसन्नता पूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में धनु राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है। अतः इसके प्रभाव से आप एक आत्मविश्वासी पुरूष होंगे तथा अपने विचारों को बिना किसी हिचकिचाहट के प्रदर्शन करते हुए अन्य जनों के समक्ष प्रस्तुत करेंगे इससे सभी लोग आपसे प्रभावित रहेंगे। जीवन में व्यवधानों तथा समस्याओं का आप दृढ़ता पूर्वक सामना तथा समाधान करने में समर्थ रहेंगे। सत्य के प्रति आपकी पूर्ण निष्ठा रहेगी तथा इसका अनुपालन करने के लिए तत्पर रहेंगे। आपको जो भी रूचिकर लगेगा वही आप अन्य जनों के समक्ष कहेंगे तथा इस बात की कोई चिन्ता नहीं करेंगे कि अन्य जनों पर इसका क्या प्रभाव पड़ेगा या वे किस रूप में उसे ग्रहण करेंगे। आप अपने समीपस्थ संबंधियों से औपचारिक संबंध रहेंगे परन्तु अवसरानुकूल उनसे घनिष्ठ संबंध स्थापित करने के भी उत्सुक रहेंगे।

आपका पारिवारिक जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा। साथ ही वाणी अत्यंत ही मधुर एवं ओजस्वी रहेगी तथा अन्य जनों को वाणी द्वारा प्रभावित करने में समर्थ रहेंगे। सांसारिक धनऐश्वर्य एवं भौतिक सुख संसाधनों से आप युक्त रहेंगे तथा प्रसन्नता पूर्वक इसका उपभोग करेंगे। आपकी प्रवृति धार्मिक रहेगी तथा समय समय पर आप धार्मिक कार्य कलापों तथा उत्सव का भी आयोजन करते रहेंगे। इसके अतिरिक्त आप स्थिर धन के स्वामी वाहन आदि से युक्त तथा यशस्वी पुरूष होंगे। रस युक्त पदार्थ आपको प्रिय लगेंगे तथा धर्म की उन्नति के लिए सर्वदा अपना योगदान प्रदान करते रहेंगे।

पराक्रम, सहोदर, प्रकाशन, लघुयात्राएं

आपके जन्म समय में तृतीय भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिजीवी प्राणी होंगे तथा आपकी स्मरण शक्ति भी अच्छी रहेगी एवं किसी भी विषय का ज्ञान आसानी से प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। भाई बहिनों से आप युक्त रहेंगे तथा उनका आपको पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही आपके लिए वे कर्तव्य परायण तथा आज्ञाकारी होंगे तथा आपका भी उनके प्रति गहरा लगाव रहेगा। पारिवारिक शान्ति एवं खुशहाली के लिए आप एक दूसरे की कमियों की उपेक्षा करेंगे।

आप एक पराक्रमी तथा साहसी पुरूष होंगे तथा परिश्रमशील कार्यो को करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही आप नीति के भी ज्ञाता होंगे एवं मंत्रणा या सलाह संबंधी कार्य आसानी से सम्पन्न करेंगे। सांसारिक परेशानियों एवं समस्याओं का समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे तथा किसी भी कार्य को तब तक सम्पन्न करेंगे जब तक कि उसमें सफलता प्राप्त न कर लें। जीवन में संचार साधनों यथा दूरभाष, दूरदर्शन या वाहन संबंधी सुविधाएं अर्जित करेंगे तथा इनका उपभोग करते समय स्वयं को अन्य जनों से श्रेष्ठ अनुभूति करेंगे। संगीत के प्रति भी आपकी गहरी रूचि रहेगी। समस्त भौतिक सुखों का भी उपभोग करेंगे। आपकी समय समय पर दूर समीप की यात्राएं सम्पन्न होती रहेंगी तथा इनसे आप इच्छित लाभ एवं धन अर्जित करेंगे। साथ ही इनसे आपको ख्याति प्राप्त होगी तथा सामाजिक सम्मान में भी वृद्धि होगी। समाचार पत्र तथा अन्य सूचना संबंधी लेखों को आप चाव से पढ़ेंगे तथा रिक्त समय में आप इसका पूर्ण सदुपयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त आप बातचीत एवं विचार से शांत प्रकृति, पुत्र.पौत्र से युक्त, गुरू तथा मित्र प्रेमी, धनवान तथा अपने क्षेत्र में प्रसिद्ध रहेंगे।

माता, वाहन, भौतिक ऐश्वर्य, जायदाद एवं शिक्षा

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कुम्भराशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है तथा बृहस्पति भी चतुर्थ भाव में ही स्थित है। अतः इसके प्रभाव से जीवन में आपको समस्त सांसारिक सुख एवं वैभव की प्राप्ति होगी तथा आधुनिक सुख–संसाधनों एवं भौतिक उपकरणों से युक्त होकर आनन्दपूर्वक इनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। समाज में भी आपका उच्चस्तर बना रहेगा एवं सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करके यथोचित मान–सम्मान प्रदान करेंगे।

आप एक भाग्यशाली व्यक्ति होंगे तथा जीवन में चल एवं अचल सम्पत्ति से युक्त होकर उसका स्वामित्व प्राप्त करेंगे। किसी श्रेष्ठ एवं वृद्ध व्यक्ति भी से आपको न्यूनाधिक मात्रा में चल या अचल सम्पत्ति की प्राप्ति हो सकती है। आप अपनी बुद्धिमता, योग्यता एवं परिश्रम से भी वांछित धन–सम्पत्ति अर्जित करने में समर्थ होंगे। आपके अचल सम्पत्ति की अपेक्षा चल सम्पत्ति से शीघ्र एवं अधिक लाभ के भी योग बनते हैं।

आपका आवास सुन्दर, विस्तृत एवं आधुनिक सुख–सुविधाओं से युक्त होगा तथा भौतिक उपकरणों की इसमें अधिकता होगी। साथ ही इसका आकर्षण एवं सुन्दरता बनाए रखने के लिए आप तत्पर रहेंगे। आपका घर किसी अच्छी कालोनी में होगा तथा आपके पड़ोसी भी शिक्षित एवं बुद्धिमान होंगे तथा संबंधों में भी अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त युवावस्था से ही आप उत्तम वाहन की प्राप्ति करके इसका उपभोग करेंगे।

आपकी माताजी बुद्धिमती, तेजस्वी, शिक्षित एवं सरल स्वभाव की महिला होंगी तथा अपनी कर्तव्य परायणता से सभी जनों को प्रसन्न तथा सन्तुष्ट रखेंगी। वह व्यवहार कुशल महिला भी होंगी एवं परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण होगा। आपके प्रति उनके मन में विशेष स्नेह का भाव होगा एवं समय समय पर वांछित नैतिक तथा आर्थिक सहयोग प्रदान करेंगी। इसके अतिरिक्त आपकी उन्नति में उनका प्रमुख योगदान रहेगा। आप भी माताजी के आज्ञाकारी होंगे तथा उनकी सलाह एवं सहयोग से ही अधिकांश कार्यो को सम्पन्न करेंगे। आपके संबंधों में भी मधुरता रहेगी तथा सुख–दुख में एक दूसरे का पूर्ण ध्यान रखेंगे।

विद्याध्ययन में प्रारंभ से ही आप रूचिशील रहेंगे तथा अपनी बुद्धिमता एवं योग्यता से छोटी कक्षाओं से ही अच्छे अंको से परीक्षाएं उतीर्ण करेंगे। इसी परिपेक्ष्य में स्नातक परीक्षा आप ससम्मान उतीर्ण करेंगे तथा इससे आपके आत्म विश्वास के भाव में वृद्धि होगी तथा समाज में भी प्रभाव बढ़ेगा। जिससे स्वजन एवं मित्र वर्ग आपको पूर्ण प्रोत्साहन देंगे।

शनि की राशि में चतुर्थ भाव में बृहस्पति के प्रभाव से वृद्धावस्था में आप न्यूनाधिक मात्रा में रक्तचाप या हृदय संबंधी परेशानी प्राप्त कर सकते है। अतः यदि युवावस्था से ही खान–पान पर विशेष ध्यान दिया जाय तो ऐसी समस्याओं में कमी आएगी तथा आपका सामान्य समय प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

बुद्धि, सन्तान एवं प्रणय सम्बन्ध

आपके जन्म समय में पंचमभाव में मीन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बृहस्पति है तथा राहु भी पंचम भाव में ही स्थित है। राहु की बृहस्पति की राशि में स्थिति के फलस्रूप आप बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा आपके सभी कार्य कलाप बुद्धिमता पूर्वक सम्पन्न होंगे लेकिन शीघ्र एवं सही निर्णय लेने की शक्ति का आप में अभाव होगा जिससे यदा–कदा असुविधा की अनुभूति हो सकती है। आप उपस्थित समस्या का समाधान भी शीघ्र करेने में स्वयं को असमर्थ समझेंगे इससे आपकी कार्य सिद्वि में विलम्ब हो सकता है। वैदिक, साहित्य दर्शन एवं धर्म के प्रति आपकी विशेष रूचि नहीं होगी परन्तु आधुनिक विषय पाश्चात्य भाषा साहित्य एवं संस्कृति के प्रति पूर्ण लगाव होगा तथा परिश्रम पूर्वक उनके ज्ञानार्जन में रूचि रखेंगे। पाश्चात्य भाषा या साहित्य का आपको अच्छा ज्ञा होगा जिससे समाज में आप प्रतिष्ठा एवं आदर प्राप्त कर सकते है।

पंचम भावास्थ राहु के प्रभाव से प्रेम–प्रसंगों में आपकी काफी रूचि होगी तथा इन्हें स्थापित करके आप अपना मनोरंजन एवं दिल–बहलाने का कार्य करेंगे। भावुकता एवं भावनात्मक आकर्षण की भी इसमें कमी होगी। यदि आप इस क्षेत्र में मर्यादा एवं नैतिकता का पालन नहीं तो इससे आपको अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। अतः ऐसी स्थिति की यत्न पूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

संतति भाव में राहु की स्थिति के प्रभाव से आपको संतति प्राप्ति में विलम्ब का सामना करना पड़ सकता है लेकिन संतति की प्राप्ति अवश्य होगी। आपकी संतति पराक्रमी, तेजस्वी एवं उग्र स्वभाव की होगी तथा माता–पिता के प्रति उनका काफी उपेक्षा का भाव होगा तथा स्वेच्छा से ही वे समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य–कलापों को सम्पन्न करेंगे तथा इसमें किसी का भी वांछित सहयोग या सलाह नहीं लेंगे। यद्यपि इससे आपको मानसिक कष्ट होगा लेकिन इसकी आपको उपेक्षा ही करनी चाहिऐ तथा उन्हें स्वतन्त्र कार्य करने के लिए प्रेरित करना चाहिए। इससे परस्पर विश्वास सदभाव एवं सम्बंधों में अनुकूलता रहेगी। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था के लिए यथोचित मात्रा में धन संचित करके रखना चाहिए क्योंकि बच्चे आपको वांछित सहयोग एवं सेवा कम ही प्रदान करेंगे।

अध्ययन के क्षेत्र में आपकी संतति अत्यधिक परिश्रम से ही वांछित सफलता अर्जित करने में समर्थ होगी यद्यपि आप अपनी ओर से उन्हें अच्छी शिक्षा दिलाने का पूर्ण प्रयास करेंगे परन्तु शिक्षा के अतिरिक्त अन्य क्षेत्र में अपनी व्यवहार कुशलता से वांछित आजीविका अर्जित करने में समर्थ हो सकते है। अतः बच्चों की आपको विशेष चिन्ता नहीं करनी चाहिए। इसके अतिरिक्त तेजस्वी एवं उग्रस्वभाव होने के कारण समय–समय अन्य सामाजिक जनों से उनका वाद–विवाद भी होता रहेगा जिससे आपको काफी परेशानी होगी परन्तु अपने सद्व्यवहार से आप स्थिति अनुकूल बनाने में समर्थ होंगे। अतः बच्चों का सुख आपको सामान्य रूप से प्राप्त होगा।

रोग, शत्रु, सेवक एवं मामा

आपके जन्म समय में षष्ठ भाव में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। अतः इसके प्रभाव से आपके विरोधी या शत्रु कोई उच्चाधिकारी या उच्च व्यक्ति होंगे। साथ ही आपके शत्रुओं की संख्या भी अधिक रहेगी तथा समाज में प्रत्येक क्षेत्र में आपके विरोधी उत्पन्न होंगे। यद्यपि आपके सेवक सभी अच्छे एवं ईमानदार होंगे परन्तु यदा कदा उनकी चोरी की आदत से आप किंचित परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं। साथ ही आपके गुप्त रहस्यों के बारे में भी वे जानकारी रखेंगे तथा अवसरानुकूल अन्य जनों के समक्ष आपके रहस्यों को उजागर करेंगे जिससे मान सम्मान में न्यूनता आएगी। आप अत्यधिक व्ययशील प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा उन्मुक्त रूप से धन व्यय करेंगे इससे यदा कदा आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा तथा कर्ज आदि भी लेना पड़ेगा। साथ ही ऋणदाता आप पर कोई मुकद्दमा भी दायर कर सकते है क्योंकि आप आसानी से ऋण वापस नहीं कर पाएंगे। अतः ऋृण लेने की प्रवृति की यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए। साथ ही अन्य फौजदारी मामलों में भी आपको आर्थिक नुकसान हो सकता है लेकिन अत्यधिक परिश्रम एवं समय के बाद आपको इसमें सफलता अवश्य मिलेगी।

आपके मामा और मामियों का स्वभाव अच्छा रहेगा तथा समाज में वे सम्मानीय रहेंगे। लेकिन वे अल्पमात्रा में कंजूस प्रवृत्ति के होंगे अतः जितना अपनत्व या लगाव प्रदर्शित करेंगे उसके विपरीत अल्प मात्रा में ही सहयोग प्रदान करेंगे। इसके अतिरिक्त कार्य प्रारंभ में सहयोग न करके अन्त में सहयोग करेंगे। साथ ही आपके मुकद्दमे भी सामान्य रूप से चलते रहेंगे। इस प्रकार न्यूनधिक रूप से आप मुकद्दमे से संबध रखेंगे तथा अन्त में आपको इनमें सफलता प्राप्त होगी तथा मान सम्मान में भी वृद्धि होगी। इसके अतिरिक्त खान पान में भी आपको यथोचित परहेज र खना चाहिए अन्यथा रक्त विकार संबन्धी परेशानियां हो सकती है।

दम्पति, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है सामान्यतया सप्तम भाव में वृष राशि की स्थिति से जातक का सहयोगी सुशील परिश्रमी धनाढ्य एवं बुद्धिमान होता है। वह पराक्रमी साहसी तथा व्यावहारिक होता है।

अतः इसके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील स्वभाव की होंगी परन्तु तेजस्विता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा। सांसारिक कार्य कलापों को वह व्यावहारिकता एवं बुद्धिमता से सम्पन्न करेंगी। नैतिकता के प्रति भी उनकी रूचि होगी जिससे सुख संसाधनों के प्रति भी लालयित होगी। अपने महत्वपूर्ण कार्यो को बुद्धिमता एवं विधिपूर्वक सम्पन्न करेंगी। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान होगा तथा परिवार एवं समाज के प्रति अपने कर्तव्यों का ईमानदारी से पालन करेंगी।

आपकी पत्नी देखने में सुंदर एवं लालिमा लिए गौरवर्ण की होंगी तथा उनका कद भी मध्यम होगा शारीरिक संरचना की दृष्टि से उनका सौन्दर्य आकर्षण होगा एवं अन्य अंग प्रत्यंग भी पुष्टता एवं सुडौलता से युक्त होंगे जिससे उनके सौन्दर्य एवं व्यक्तित्व के आकर्षण में वृद्धि होगी। शारीरिक स्वस्थता बनाए रखने के लिए समयानुसार व्यायाम या योग क्रियाएं भी सम्पन्न करेंगी। वृष राशि के प्रभाव से संगीत एवं कला में भी रूचिशील होगी तथा सुंदर एवं कलात्मक वस्तुओं का संग्रह करेंगी।

सप्तम भाव में वृष राशि के प्रभाव से आपका विवाह यथोचित समय पर होगा। आपका विवाह बंधु या संबन्धियों के माध्यम से होगा। विवाह के बाद आपका दाम्पत्य जीवन सामान्यतया सुखी रहेगा तथा एक दूसरे के प्रति प्रेम एवं समर्पण का भाव रहेगा। साथ ही अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यो को एक दूसरे की सहयोग तथा सहमति से सम्पन्न करेंगे।

आपका विवाह किसी समृद्ध परिवार से होगा एवं आर्थिक एवं सामाजिक रूप से वे समृद्ध होंगे। विवाह में आपको प्रचुर मात्रा में दहेज के रूप में धन सम्पति की प्राप्ति होगी। विवाह के बाद सास ससुर से आपके सामान्य संबंध होंगे तथा भविष्य में भी उनसे नैतिक तथा आर्थिक सहयोग की प्राप्ति होती रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी का सेवा भाव रहेगा तथा सुख दुख में उनकी यथोचित सेवा करेंगी। देवर एवं ननद भी उनके सद्व्यवहार से प्रसन्न होंगे तथा उन्हें यथोचित मान सम्मान एवं सहयोग प्रदान करेंगे ।

व्यापार या अन्य महत्वपूर्ण कार्यो में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल होगी तथा इससे लाभ एवं उन्नति होगी।

दहेज, बीमा आयु एवं दुर्घटना

आपके जन्म समय में अष्टम भाव में मिथुन राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप अध्यात्म विज्ञान में अत्यधिक रूचिशील रहेंगे। साथ ही ज्यौतिष एवं तंत्र मंत्र आदि में भी श्रद्धा रहेगी तथा अवसरानुकूल इस क्षेत्र में कार्य करने के लिए तत्पर होंगे। आपकी पूर्वाभास शक्ति उत्तम रहेगी तथा अन्तर्प्रज्ञा के द्वारा भविष्यवाणी करने में समर्थ होंगे। वास्तव में संसार की असमान्य बातों में आपकी प्रगाढ़ रूचि रहेगी तथा इन विषयों पर समय समय पर कार्य करते रहेंगे। इसके साथ ही ज्यौतिष या आध्यात्मिक क्षेत्र में आपको विशिष्ट ख्याति तथा सम्मान भी मिल सकता है।

आपको अपने वृद्धजनों से पैतृक सम्पत्ति में जमीन जायदाद की प्राप्ति होगी तथा काफी चल एवं अचल सम्पत्ति आपके नाम रहेगी जिससे आप पूर्ण सन्तुष्ट एवं प्रसन्न रहेंगे। आपात्काल में बिना किसी कार्य को किए हुए अपनी जायदाद को बेचकर आर्थिक सुदृढ़ता भी प्राप्त कर सकते है। साथ ही आपका जीवन भी आराम से व्यतीत होगा तथा समस्त सुख सुविधाओं से युक्त रहेंगे। शादी आदि के अवसर पर आपको काफी मात्रा में आपकी मांग पर दहेज की प्राप्ति होगी। इसमें धन आभूषण वाहन तथा अन्य आधुनिक उपहार होंगे। बीमे आदि से भी आपको लाभ होगा तथा इसकी एजेंसी के द्वारा आप अतिरिक्त आय अर्जित कर सकते हैं। आपके जीवन में चोरी डकैती या अन्य दुर्घटनाएं अल्प मात्रा में होंगी तथा इससे आपको कोई विशेष हानि या परेशानी नहीं होगी। इसके अतिरिक्त आपकी आयु उत्तम रहेगी तथा जीवन को सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।

सौभाग्य, प्रसिद्धि, पूजा, उच्चशिक्षा एवं लम्बी यात्राएं

आपके जन्म समय में नवम भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक भाग्यवादी पुरूष होंगे। आप अपने को अन्य जनों के समक्ष आवश्यकता से अधिक धार्मिक प्रदर्शित करने की कोशिश करेंगे तथा पारिवारिक परम्परानुसार धर्म का अनुपालन करेंगे। साथ ही भगवान के प्रति आपके मन में श्रद्धा रहेगी तथा दैनिक पूजा या अन्य प्रकार से आत्मिक सन्तुष्टि प्राप्त कर सकते हैं लेकिन यदा कदा इसमें उदासीनता का भाव भी रखेंगे। अतः दैनिक पूजन कार्यक्रम में व्यवधान रहेगा।

आप उच्चशिक्षा प्राप्त करने के उत्सुक रहेंगे तथा इसी परिपेक्ष्य में आप अध्यात्मिक, तंत्र मंत्र एवं ज्यौतिष आदि का अध्ययन भी कर सकते हैं। साथ ही सन्तवाणी का भी ध्यान से श्रवण करेंगे। आपकी प्रवृति परिवर्तनीय होगी। अतः आप समयानुसार अपने शब्दों या वादों को परिवर्तन करेंगे। आप कई तीर्थ स्थानों की यात्राएं भी सम्पन्न कर सकते है तथा अपने धर्म के समस्त पवित्र ग्रंथों का श्रद्धा पूर्वक अध्ययन करेंगे। जीवन में समय समय पर लम्बी यात्राएं सम्पन्न करते रहेंगे तथा इनसे आपको इच्छित धनार्जन भी होगा परन्तु अपनी प्रवृति एवं आर्थिक मामलों में संकीर्णता के कारण यदा कदा आपके मान सम्मान में न्यूनता भी आएगी।

आप एक आदर्श तथा प्रसिद्धि व्यक्ति होंगे। यद्यपि आप कई बार धमार्थ कुछ दान देने की सोचेंगे परन्तु वास्तव में यह दिखावा होगा तथा आप किसी ऐसे कार्य को करना पसंद नहीं करेंगे जिसमें धन का व्यय होता हो परन्तु अपने पर आप आवश्यकताओं से अधिक व्यय करेंगे लेकिन अन्य जनों की सेवा या सहायता के लिए कुछ भी नहीं करेंगे। पौत्रों से आपको सुख एवं आनन्द प्राप्त होगा वास्तव में आप पूर्वजन्मों के पुण्यों से ही इस जीवन में सुख ऐश्वर्य की अनुभूति कर रहें है लेकिन अगले जीवन के लिए भी आपको कुछ करने की ओर प्रवृत होना चाहिए। इसके अतिरिक्त आप धार्मिक प्रवृति से युक्त उपवासकर्ता, तीर्थ स्थलों की यात्रा करने वाले तथा धर्म के प्रति श्रद्धालु रहेंगे।

पिता, व्यवसाय एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है। साथ ही शुक्र भी दशम भाव में ही स्थित है। सिंह राशि अग्नितत्व एवं शुक्र जलतत्व प्रधान ग्रह है। अतः इसके प्रभाव से आपका कार्यक्षेत्र बौद्धिक एवं मानसिक क्रिया प्रधान होगा तथा श्रमसाध्य के भाव की न्यूनता रहेगी। साथ ही आप समय समय पर इसमें परिवर्तन करने के भी इच्छुक होंगे लेकिन ऐसे तात्कालिक परिवर्तनों से आपको अवसरानुकूल लाभ भी होता रहेगा लेकिन ऐसी प्रवृति पर आपको नियंत्रण रखना चाहिए।

दशमभाव में द्वादशेश एवं सप्तमेश शुक्र की सिंह राशि में स्थिति के प्रभाव से आजीविका संबंधी क्षेत्र कला, संगीत, सिनेमा, नाटक, दूरदर्शन, इलैक्ट्रोनिक्स विभाग, न्याय विभाग, न्यायाधीश, सलाहकार, सचिव एवं फिल्म निर्देशन के क्षेत्र में इच्छित उन्नति एवं सफलता की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही सरकारी कर्मचारी, मंत्रालयों एवं महिला अधिकारी के सहायक के रूप में आप कार्य कर सकते हैं। अतः इच्छित उन्नति एवं सफलता के लिए आपको उपरोक्त क्षेत्रों एवं विभागों में ही अपने कार्य क्षेत्र का चयन करना चाहिए जिससे उन्नति में अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना न करना पड़े।

व्यापारिक दृष्टि से आपके लिए फिल्म निर्माण क्षेत्र या वितरण, इलैक्ट्रोनिक्स उपकरणों का व्यापार, कला या संगीत केन्द्र के स्वामित्व या संचालन से, चांदी सोना आदि धातु कार्य, वाहन संबंधी व्यापार, एयर ट्रैवल एजेंसी, सौन्दर्य एवं आलंकारिक प्रसाधन सामग्री का व्यापार विलासपूर्ण सामग्री रेशमी या चित्रकारी किए गये वस्त्रों का आयात निर्यात तथा मूल्यवान मदिरा के व्यापार से इच्छित लाभ एवं धन अर्जित होगा तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। अतः आपको उपरोक्त क्षेत्रों में ही व्यापार का चयन करना चाहिए।

दशमभाव में शुक्र के प्रभाव से आपके पिता आकर्षक व्यक्तित्व के स्वामी होंगे तथा वे शिक्षित बुद्धिमान एवं मिलनसार प्रवृति के व्यक्ति होंगे जिससे समाज में उनका पूर्ण सम्मान तथा प्रभाव रहेगा आपके प्रति वे पूर्ण चिन्तित रहेंगे एवं उच्चशिक्षा का यथोचित प्रबंध करेंगे। साथ ही आपके कार्यक्षेत्र में भी उनका पूर्ण सहयोग तथा प्रभाव होगा जिससे आपके उन्नति मार्ग सुगमता पूर्वक प्रशस्त होंगे। आप भी अपने कार्य कलापों से पिता के सम्मान एवं प्रतिष्ठा में वृद्धि करेंगे। लेकिन शुक्र की स्थिति शत्रुराशि में होने के कारण आपसी संबंधों में मधुरता कम ही होगी तथा सैद्धान्तिक एवं वैचारिक मतभेद बने रहेंगे साथ ही शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यो में एक दूसरे का सहयोग अल्प मात्रा में ही लेंगे अतः ऐसी स्थितियों की आपको यत्नपूर्वक उपेक्षा करनी चाहिए।

लाभ, मित्र, समाज, ज्येष्ठ भ्राता एवं आकांक्षाएं

आपके जन्म समय में एकादश भाव में कन्या राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी बुध है। अतः इसके प्रभाव से आप एक महत्वाकांक्षी पुरूष होंगे तथा मन में विभिन्न प्रकार की इच्छाएं तथा उमंगें विद्यमान रहेंगी। चूंकि आप एक पराक्रमी तथा परिश्रमी पुरूष होंगे अतः जीवन में आपकी अधिकाशं आकांक्षाएं पूर्ण हो जाएंगी। आपकी कुंडली में आर्थिक महत्वाकांक्षा की प्रबलता रहेगी साथ ही विभिन्न प्रकार से धन अर्जित करने में भी समर्थ रहेंगे अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेंगी। आप लेखन कार्य, ज्यौतिष, कमीशन एजेंट, गणित या शिक्षा के क्षेत्र में कार्यरत हो सकते है अथवा इनसे आपको प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही व्यापार के द्वारा भी आपके आय स्रोतों में वृद्धि होगी।

आपको बड़े भाइयों की अपेक्षा बहिनों से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा साथ ही उनकी आपके प्रति स्नेह एवं पूर्ण अपनत्व का भाव रहेगा एवं आपको सुख दुख में अपना पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगी तथा अवसरनुकूल माता की तरह आपका पालन पोषण तथा मार्ग निर्देशन करेंगी।

आप मित्र मंडली के मध्य अत्यन्त ही प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे तथा आपके सभी मित्र चतुर चालाक एवं शिक्षित होंगे। अवस्था के साथ साथ मित्रों के आप पथ प्रदर्शन भी करेंगे तथा वे आपसे हमेशा सलाह लेते रहेंगे। आपका सामाजिक स्तर भी सामान्यतया उच्च रहेगा तथा अपने समाज के मध्य प्रतिष्ठित एवं आदरणीय समझे जाएंगे। साथ ही अन्य जनों की सेवा एवं परोपकार संबंधी कार्यो को भी समय समय पर सम्पन्न करेंगे। इसके अतिरिक्त आप अन्य क्षेत्रों में भी उन्नतिशील रहेंगे तथा धन ऐश्वर्य से सुसम्पन्न रहकर अपना समय व्यतीत करेंगे।

हानि, बन्धन, कर्ज, आवास परिवर्तन एवं मोक्ष

आपके जन्म समय में द्वादश भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। अतः इसके प्रभाव से आप आर्थिक क्षेत्र में सुदृढ़, धन ,वाहन एवं व्यापार आदि से उच्च स्थिति में रहेंगे। साथ ही आप एक अधिकारी स्तर के व्यक्ति होंगे तथा सुदंर घर से भी युक्त रहेंगे आपकी आय निरन्तर होती रहेगी क्योंकि आपको धनार्जन करना अच्छी तरह आता है। आपके सरकारी या अर्धसरकारी बांडो या संस्थाओं में पूंजीनिवेश रहेगा जिससे समय समय पर पूर्ण लाभ होगा। साथ ही आप एक ईमानदार उद्योगपति भी हो सकते है। आप आजीवन आर्थिक रूप से सुरक्षित रहेंगे तथा प्रचुर मात्रा में आय स्रोत भी प्रशस्त होंगे। आपकी बचत उत्तम रहेगी तथा अपने कुशलता से धनार्जन करके बचत भी करेंगे।

आपका रहन सहन तथा खान पान उच्च स्तर का रहेगा तथा इसी स्तर को हमेशा बनाएं रखेंगे लेकिन आपको इसमें अत्यधिक व्यय करना पड़ेगा। आपको स्वादिष्ट एवं महंगा भोजन करना भी पसन्द रहेगा जिसके लिए आप अच्छे होटलों में भी जा सकते हैं। इसके अतिरिक्त मित्रों आदि पर भी आप मुक्त भाव से व्यय करेंगे।

आपकी यात्राएं भी सामान्यतया होती रहेंगी तथा इनसे आपको लाभ एवं सम्मान प्राप्त होगा। आपकी देश के साथ साथ विदेश संबंधी यात्राएं भी होगी ये यात्राएं कार्य वश या भ्रमण के लिए होंगी क्योंकि आपको अच्छे स्थानों की सैर करना तथा अच्छे दृश्य देखना अच्छा लगता है। इस प्रकार आप प्रसन्नता पूर्वक धनार्जन करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे।

फलादेश - 2017

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति एकादश भाव में संक्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त शुभ एवं सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय आपके नवीन आय साधनों में वृद्धि होगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। अतः आपकी आर्थिक स्थिति सुदृढ़ रहेगी। व्यापार या कार्यक्षेत्र में भी आपको वांछित उन्नति तथा सफलता मिलेगी। नौकरी या राजनीति आदि में पदोन्नति की भी संभावना रहेगी। ज्योतिष शास्त्र में आप इस समय पूर्ण श्रद्धा व्यक्त करेंगे तथा व्यस्तता के उपरान्त भी मानसिक प्रसन्नता एवं संतुष्टि से युक्त रहेंगे। सामाजिक क्षेत्र में भी इस वर्ष आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा दूर दूर तक आपकी प्रसिद्धि फैलेगी। जिससे सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे तथा आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। साथ ही आय गोचर तथा दशाफल भी इस समय शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आप का अत्यन्त ही सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि का परिभ्रमण द्वितीय भाव में रहेगा अतः इसके प्रभाव से आपकी पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि अच्छी रहेंगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। साथ ही परिवार की भौतिक तथा आर्थिक स्थिति भी अनुकूल रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। शत्रु या विरोधी पक्ष इस समय आपसे पराजित तथा भयभीत रहेगा फलतः नौकरी या व्यापार के क्षेत्र में कमजोर विपक्ष के कारण आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। इसके अतिरिक्त आपकी मानसिक स्थिति भी अच्छी रहेगी तथा सभी सांसारिक कार्य कलाप शान्ति पूर्वक सम्पन्न होंगे।

इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशाफल भी आपके लिए शुभ एवं अनुकूल रहेंगे अतः सर्वत्र सफलता अर्जित करने में आप समर्थ होंगे साथ ही उत्साह एवं पराक्रम का भाव मन में बना रहेगा परन्तु शनि की साढ़े साती की अन्तिम दशा होने के कारण यदा कदा न्यूनाधिक परेशानियां भी हो सकती हैं लेकिन इसका कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा तथा इसके प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए। साथ ही शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे आपको सर्वत्र शुभ परिणाम प्राप्त होंगे।

इस वर्ष में गोचरवश राहु दशम तथा केतु चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी इस समय आपको वांछित सफलता मिलेगी तथा लाभ मार्ग भी प्रशस्त होंगे। नौकरी या राजनीति में भी इस समय आप किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति कर सकते हैं। इस समय राजनैतिक व्यक्तियों से भी आपके सम्पर्क बनेंगे तथा उनसे आप इच्छित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। सामाजिक रूप से इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपका यथोचित सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। माता पिता के स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष अच्छा रहेगा।

शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। साथ ही आय गोचरफल तथा दशा फल की अनुकूलता के कारण इस वर्ष में आपको शुभ फल ही अधिक मात्रा में प्राप्त करेंगे।

चन्द्र की महादशा में शनि का अंतर 28/09/2017 को समाप्त होगा। उसके बाद बुध का अंतर प्रारंभ होगा। शनि दशम् भाव में सिंह राशि में स्थित हैं जबकि बुध एकादश भाव में कन्या राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। इस समय सक्रियता एवं सृजनात्मक प्रवृति के अभाव में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। व्यापार में भी समय अच्छा नहीं रहेगा तथा हानि के योग बनेंगे। नौकरी में भी परेशानी की अनुभूति करेंगे तथा अधिकारी वर्ग से भी सम्बंधों में तनाव रहेगा। परिवार में भी सुख शान्ति की अल्पता रहेगी तथा सदस्यों का आपस में प्रेम एवं सहयोग की न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी। अतः ऐसे समय में आपको धैर्यपूर्वक समय व्यतीत करना चाहिएं।

यह समय आपके विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में कठिनाई का सामना करना पडेगा साथ ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली लोगों के सम्पर्को में अल्पता रहेगी। आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी एवं लाभ मार्ग अवरुद्ध रहेंगे फलतः यदा कदा आर्थिक परेशानी का सामना करना पडसकता है व्यापार में भी समस्याएं उत्पन्न होगी। इस समय व्यापार में विस्तार या नवीन योजनाओं के प्रारंभ की संभावना नहीं बनेगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति में विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधों में तनाव रहेगा जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होगी यात्राएं भी अनिच्छित तथा व्यर्थ की होंगी तथा मान प्रतिष्ठा में भी कमी आएगी इसके अतिरिक्त परिवार में अशांति रहेगी तथा सदस्यों से सहयोग अल्प ही मिलेगा अतः धैर्य पूर्वक समय व्यतीत करें।

फलादेश - 2018

इस वर्ष में गोचरीय परिभ्रमण से बृहस्पति की स्थिति द्वादश भाव में रहेगी। अतः आपका शारीरिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा परन्तु मानसिक रूप से यदा कदा आप अशान्ति की अनुभूति करेंगे। आर्थिक स्थिति भी आपकी सामान्य रहेगी तथा व्यय अधिक होगा जिससे आप अल्प मात्रा में परेशानी की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आप किसी शुभ एवं मांगलिक कार्य पर व्यय भी कर सकते हैं। कार्य क्षेत्र की उन्नति के लिए आपको अधिक पराक्रम एवं परिश्रम करना पड़ेगा तभी न्यूनाधिक सफलता प्राप्त हो सकती है। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की कोई यात्रा सम्पन्न होगी साथ ही इसमें व्यय की भी अधिकता रहेगी जिससे आर्थिक विषमता उत्पन्न होगी परन्तु भविष्य में आपकी लाभ की संभावनाएं बन सकती हैं।

इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पराक्रम एवं परिश्रम से ही लाभ एवं सुख की प्राप्ति होगी। साथ ही यत्न पूर्वक आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति का पूजन व्रत तथा दानादि करना चाहिए।

इस वर्ष में शनि गोचर वश द्वितीय भाव में स्थित रहेगा। अतः इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी परन्तु पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। भौतिक एवं आर्थिक स्थिति भी इस समय आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। मानसिक रूप से भी आप शान्त रहेंगे एवं शान्ति पूर्वक सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। इस समय विरोधी के निर्बल होने के कारण व्यापार या नौकरी आदि में आप इच्छित उन्नति एवं सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा सामान्य रहेगी। साथ ही शनि की साढ़ेसाती का अन्तिम दशा का भी प्रभाव रहेगा जिससे यदा कदा आपको उन्नति में व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु इनका आप पराक्रम एवं परिश्रम से समाधान करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही शनि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन करना चाहिए तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए इससे आपके शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचरीय भ्रमण के अनुसार इस वर्ष में राहु की स्थिति नवम एवं केतु की स्थिति तृतीय भाव में रहेगी इसके प्रभाव से यह वर्ष अधिकांशतया शुभ ही रहेगा। धर्म के प्रति आपके मन में इस समय श्रद्धा में न्यूनता आएगी तथा महत्वपूर्ण कार्यों में समस्याओं एवं व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु स्वपराक्रम एवं परिश्रम से आप इनमें सफलता प्राप्त करेंगे साथ ही भाग्य बल में अल्पता होने से मानसिक रूप से आप चिन्तित रहेंगे। परिवारिक वातावरण में भी इस समय शान्ति तथा सदभावना कम ही दृष्टिगोचर होगी। लेकिन केतु के प्रभाव से आपके पराक्रम में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे। जिससे सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

आर्थिक स्थिति आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इस समय कार्यक्षेत्र में भी आपकी उन्नति होगी। इसके साथ ही इस समय गोचरफल अशुभ एवं दशा फल शुभ रहेगा। अतः इस वर्ष में अशुभ फलों के साथ सामान्यतया शुभ फलों की भी आपको प्राप्ति होगी।

इस वर्ष चन्द्र की महादशा में बुध का अंतर रहेगा। बुध एकादश भाव में कन्या राशि में स्थित हैं जबकि चन्द्र प्रथम भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में कठिनाई का सामना करना पडेगा साथ ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली लोगों के सम्पर्को में अल्पता रहेगी। आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी एवं लाभ मार्ग अवरुद्ध रहेंगे फलतः यदा कदा आर्थिक परेशानी का सामना करना पडसकता है व्यापार में भी समस्याएं उत्पन्न होगी। इस समय व्यापार में विस्तार या नवीन योजनाओं के प्रारंभ की संभावना नहीं बनेगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति में विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधों में तनाव रहेगा जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होगी यात्राएं भी अनिच्छित तथा व्यर्थ की होंगी तथा मान प्रतिष्ठा में भी कमी आएगी इसके अतिरिक्त परिवार में अशांति रहेगी तथा सदस्यों से सहयोग अल्प ही मिलेगा अतः धैर्य पूर्वक समय व्यतीत करें।

फलादेश - 2019

बृहस्पति इस वर्ष में गोचरवश प्रथम भाव में भ्रमण करेगा। इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा सामाजिक क्षेत्र में भी आपको किचिंत मान सम्मान एवं प्रतिष्ठा की प्राप्ति होगी। इस वर्ष व्यापार या अन्य कार्य क्षेत्र में आप उन्नति एवं सफलता प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इस समय अविवाहितों के विवाह की भी संभावना बढ़ेगी। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा का भाव उत्पन्न होगा। एवं यत्नपूर्वक आर्थिक कार्यों को सम्पन्न करने में आप तत्पर रहेंगे। इस वर्ष में आपके आय स्रोतों में भी वृद्वि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप सफल रहेंगे। जिससे आर्थिक स्थिति सुदृढ होगी। साथ ही विगत रुके हुए कार्यों को पूर्ण करने में भी आपको सफलता मिलेगी। आप स्वतन्त्र प्रवृति का अनुपालन करेंगे एवं अपने को अत्यन्त ही अनुभवी समझने लगेंगे। अतः यह समय आपके लिए महत्वपूर्ण परन्तु विश्रामरहित रहेगा। इसके अतिरिक्त अन्य गोचरफल अशुभ होने से परन्तु दशा फल अनुकूल रहने से उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा आपको न्यूनता का आभास होगा। परन्तु परिश्रम करने के उपरान्त आप सकरात्मक फल प्राप्त करने में सफल होंगे।

इस वर्ष में शनि गोचर वश द्वितीय भाव में स्थित रहेगा। अतः इसके प्रभाव से पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि मध्यम रहेगी परन्तु पारिवारिक जन परस्पर मिल जुलकर रहेंगे। भौतिक एवं आर्थिक स्थिति भी इस समय आपकी अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। मानसिक रूप से भी आप शान्त रहेंगे एवं शान्ति पूर्वक सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। इस समय विरोधी के निर्बल होने के कारण व्यापार या नौकरी आदि में आप इच्छित उन्नति एवं सफलता भी प्राप्त कर सकते हैं।

इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा सामान्य रहेगी। साथ ही शनि की साढ़ेसाती का अन्तिम दशा का भी प्रभाव रहेगा जिससे यदा कदा आपको उन्नति में व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु इनका आप पराक्रम एवं परिश्रम से समाधान करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही शनि के दुष्प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन करना चाहिए तथा शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए इससे आपके शुभ प्रभावों में वृद्धि होगी।

गोचर वश इस वर्ष राहु की स्थिति अष्टम तथा केतु की द्वितीय भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा तथा मानसिक रूप से भी यदा कदा आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि इस समय मध्यम ही रहेगी तथा यदा कदा पारिवारिक जनों के मध्य परस्पर मतभेद एवं तनाव रहेगा लेकिन यह अल्पकालीन होगा। आर्थिक स्थिति इस समय आपकी सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करेंगे। साथ ही व्यय भी अधिक होगा। इस वर्ष आप कोई विशिष्ट या अचानक लाभ भी प्राप्त कर सकते हैं। लाटरी जुए या सट्टे आदि से भी किंचित लाभ की संभावना रहेगी। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र के लिए वर्ष अनुकूल रहेगा तथा सामान्यतया परिश्रम एवं पराक्रम से

सफलताएं मिलती रहेंगी।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के कार्यों को सम्पन्न करने में आपको समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा तथा आय स्रोतों की वृद्धि में भी विलम्ब होगा। अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको राहु केतु की नियमित पूजा जप तथा दानादि कार्य सम्पन्न करने चाहिए।

इस वर्ष चन्द्र की महादशा में तीन ग्रहों की अंतर्दशा रहेगी। इस वर्ष बुध का अंतर 28/02/2019 को समाप्त होगा। उसके बाद केतु अंतर्दशा प्रारंभ होगी तथा 29/09/2019 तक चलेगी। इस वर्ष का अंत शुक्र की अंतर्दशा में होगा। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी प्रथम भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में कठिनाई का सामना करना पडेगा साथ ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली लोगों के सम्पर्को में अल्पता रहेगी। आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी एवं लाभ मार्ग अवरुद्ध रहेंगे फलतः यदा कदा आर्थिक परेशानी का सामना करना पडसकता है व्यापार में भी समस्याएं उत्पन्न होगी। इस समय व्यापार में विस्तार या नवीन योजनाओं के प्रारंभ की संभावना नहीं बनेगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति में विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधों में तनाव रहेगा जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होगी यात्राएं भी अनिच्छित तथा व्यर्थ की होंगी तथा मान प्रतिष्ठा में भी कमी आएगी इसके अतिरिक्त परिवार में अशांति रहेगी तथा सदस्यों से सहयोग अल्प ही मिलेगा अतः धैर्य पूर्वक समय व्यतीत करें।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा आपकी कोई भी इच्छा पूर्ण नहीं होंगी साथ ही योजनाओं में भी व्यवधान आएंगे व्यापार में भी अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा एवं हानि की भी सम्भावना रहेगी यदि नौकरी में है तो अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेगा जिससे वे आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त ऐसे समय में प्रभावशाली व्यक्तियों से भी सम्पर्को में न्यूनता आएगी तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी आवश्यक बाधाएं उत्पन्न करेंगे अतः इनसे सावधान रहना चाहिए।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपमें सक्रियता के भाव का अभाव रहेगा तथा जल्दबाजी से कार्यों को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको वांछित परिणामों की प्राप्ति नहीं होगी। व्यापार के लिए भी समय अनुकूल नहीं रहेगा तथा अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। यदि नौकरी में हैं तो पदोन्नति सम्बंधी विलम्ब एवं व्यवधान होंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव के कारण भी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय अच्छा नहीं रहेगा तथा आय स्रोतों में कमी के कारण आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। परिवार के सदस्यों का भी विशेष सहयोग नहीं मिलेगा तथा आपस में मतभेद के कारण पारिवारिक अशान्ति रहेगी। लेकिन मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी अतः धैर्य पूर्वक

अपना समय व्यतीत करें।

फलादेश - 2020

इस वर्ष में बृहस्पति तृतीय भाव में गोचरवश भ्रमण करेगा अतः इसके प्रभाव से आपकी दूर समीप की लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी। इससे आपको प्रचुर मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस समय साहित्य और दर्शन की ओर आपकी रुचि उत्पन्न होगी। पुराने मित्रों से इस वर्ष में आपको पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा तथा नवीन मित्रों की भी प्राप्ति होगी। साथ ही मित्रवर्ग के द्वारा भविष्य में लाभ के मार्ग भी प्रशस्त होंगे। स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष सामान्यतया अच्छा रहेगा एवं कार्यक्षेत्र में भी उन्नति करते रहेंगे। साथ ही इस समय मानसिक संकीर्णता को छोड़कर आप विशालहृदयी के रूप में अन्य जनों के सम्मुख अपने आप को प्रस्तुत करेंगे। अतःसमाज से आप को इच्छित आदर एवं सम्मान की प्राप्ति होगी। इस समय आय गोचर तथा दशा फल भी अनुकूल रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए उत्तम एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में शनि तृतीय भाव में परिभ्रमण करेगा अतः यह समय आपके लिए अत्यन्त ही शुभ रहेगा। इस समय आपको समस्त रूके हुए कार्यों में सफलता प्राप्त होगी तथा व्यापारिक एवं आर्थिक क्षेत्र में उन्नति कारक परिवर्तन होगा। इस वर्ष में आपकी लम्बी दूरी के शुभ एवं महत्वपूर्ण यात्रा भी सम्पन्न होगी। जिससे आपको वर्तमान तथा भविष्य में आशातीत लाभ तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। कार्यक्षेत्र में इस समय आप उन्नति पथ पर अग्रसर होंगे एवं किसी महत्वपूर्ण पद को प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। इसके साथ ही इस समय अन्य गोचर तथा दशा फल भी आपके लिए शुभ फल प्रदान करेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए अत्यन्त ही महत्वपूर्ण एवं सौभाग्यशाली सिद्ध होगा तथा धन ऐश्वर्य एवं समृद्धि को प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे।

इस वर्ष गोचर वश राहु की स्थिति अष्टम भाव तथा केतु की द्वितीय भाव में रहेगी। इसके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। इस समय शारीरिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे तथा मन में शान्ति तथा सन्तुष्टि बनी रहेगी। पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि भी समयानुकूल शुभ रहेगी तथा सभी पारिवारिक जन परस्पर स्नेह एवं सहयोग का भाव रखेंगे। आर्थिक स्थिति इस समय अच्छी रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित होता रहेगा। इस वर्ष आपको विशिष्ट या आकस्मिक धन लाभ भी हो सकता है। लाटरी सट्टे या जुए आदि से भी आप लाभान्वित हो सकते हैं। व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र के लिए समय उन्नतिशील रहेगा तथा परिश्रम पूर्वक आपके लाभ तथा सफलता के मार्ग प्रशस्त रहेंगे।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर फल तथा दशा भी शुभ रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को समय पर सम्पन्न करेंगे तथा आय स्रोतों की वृद्धि करने में भी समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक ही अधिक रहेगा।

इस वर्ष चन्द्र की महादशा में शुक्र का अंतर रहेगा। शुक्र दशम् भाव में सिंह राशि में स्थित हैं जबकि चन्द्र प्रथम भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपमें सक्रियता के भाव का

अभाव रहेगा तथा जल्दबाजी से कार्यों को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको वांछित परिणामों की प्राप्ति नहीं होगी। व्यापार के लिए भी समय अनुकूल नहीं रहेगा तथा अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। यदि नौकरी में हैं तो पदोन्नति सम्बंधी विलम्ब एवं व्यवधान होंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव के कारण भी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय अच्छा नहीं रहेगा तथा आय स्रोतों में कमी के कारण आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। परिवार के सदस्यों का भी विशेष सहयोग नहीं मिलेगा तथा आपस में मतभेद के कारण पारिवारिक अशान्ति रहेगी। लेकिन मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी अतः धैर्य पूर्वक अपना समय व्यतीत करें।

फलादेश - 2021

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया अच्छा रहेगा। शारीरिक रूप से इस समय आप स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे तथा पारिवारिक सुख शान्ति तथा समृद्धि में भी वृद्धि होगी। एवं सभी लोग परस्पर मिलजुल कर रहेंगे। इस समय आपकी योजनाएं भी पूर्ण होंगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति एवं सफलता के लिए यह वर्ष शुभ एवं अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी वर्ष मध्यम रहेगा तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। सम्पर्क के लोगो से इस समय आपको प्रसंशा मिलेगी तथा उनके मध्य आपकी मान प्रतिष्ठा की वृद्धि होगी। इस वर्ष में जायदाद या आवास सम्बन्धी सुख एवं लाभ की भी प्राप्ति के योग बनेंगे। साथ ही माता एवं ससुराल पक्ष से सहयोग तथा लाभ भी प्राप्त हो सकता है। लेकिन गोचरफल इस समय अशुभ फल प्रदान करेंगे परन्तु दशा शुभ फलदायक रहेगी। अतः उपर्युक्त फलों में यदा कदा विलम्ब या न्यूनता रहेगी परन्तु परिश्रमपूर्वक सफलता मिल सकेगी।

इस वर्ष में तृतीय भाव में गोचर वश शनि भ्रमण करेगा। यह समय आपके लिए शुभ फल दायक समझा जाएगा। इस समय आपके लिए सभी रुके हुए महत्वपूर्ण कार्य पूर्ण करेंगे। साथ ही आर्थिक एवं व्यापारिक स्थिति में भी उन्नति होगी जिससे आप उचित मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। इसवर्ष में आपकी लम्बी दूरी की लाभदायक यात्राएं सम्पन्न होंगी तथा उनसे आप मनोवांछित लाभ एवं सम्मान प्राप्त करेंगे। कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिए भी समय शुभ रहेगा तथा इस समय आपकी पदोन्नति की प्रबल संभावनाएँ बनेंगी। साथ ही इस वर्ष गोचरफल की भी प्रतिकूलता रहेगी परन्तु दशा फल शुभ रहेगा अतः यदा कदा उपर्युक्त शुभ फलों में आपको न्यूनता का आभास होगा तथापि आपका सामान्य समय इस वर्ष अच्छा ही व्यतीत होगा एवं सुखपूर्वक आप अपने कार्यकलापों को सम्पन्न करेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश राहु सप्तम तथा केतु की स्थिति प्रथम पर रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा यदा कदा आपको मानसिक अशान्ति एवं असन्तुष्टि का सामना करना पड़ेगा। शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अत्यधिक परिश्रम एवं पराक्रम से ही सफलता प्राप्त होगी। साथ ही कार्य क्षेत्र की उन्नति में भी व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा परन्तु इनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय पत्नी का स्वास्थ्य भी विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं परस्पर संबंध भी मध्यम रहेंगे। साथ ही व्यापार या कार्य क्षेत्र में साझेदार या सहयोगियों से भी कोई समस्या हो सकती है। अतः सतर्क रहना चाहिए। इस समय सामाजिक मान प्रतिष्ठा भी सामान्य रहेगी तथा आर्थिक दृष्टि से भी आपका अत्यधिक परिश्रम के उपरांत ही आवश्यक धनार्जन होगा लेकिन व्यय की भी अधिकता रहेगी। फलतः वर्ष सामान्य रहेगा।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ एवं दशा मध्यम रहेगी। अतः सांसारिक महत्व के कार्यों में परिश्रम पूर्वक सफलता मिलेगी तथा अन्यत्र भी समस्याएं उत्पन्न होगी। अतः शुभ फलों

की वृद्धि तथा अशुभ फलों में कमी करने के लिए आपको नियमित रूप से राहु केतु का पूजन जप तथा दानादि कार्य करने चाहिए।

इस वर्ष मंगल की महादशा प्रारंभ हो रही है। इससे विदित होता है इस समय आपकी जीवन शैली तथा कार्य क्षेत्र में परिवर्तन होगा। इस वर्ष का प्रारंभ चन्द्र की महादशा में शुक्र के अंतिम अंतर से हो रहा है और वर्ष की समाप्ति मंगल की महादशा में मंगल के प्रथम अंतर से होगी। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी प्रथम भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपमें सक्रियता के भाव का अभाव रहेगा तथा जल्दबाजी से कार्यों को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको वांछित परिणामों की प्राप्ति नहीं होगी। व्यापार के लिए भी समय अनुकूल नहीं रहेगा तथा अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। यदि नौकरी में हैं तो पदोन्नति सम्बंधी विलम्ब एवं व्यवधान होंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव के कारण भी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय अच्छा नहीं रहेगा तथा आय स्रोतों में कमी के कारण आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। परिवार के सदस्यों का भी विशेष सहयोग नहीं मिलेगा तथा आपस में मतभेद के कारण पारिवारिक अशान्ति रहेगी। लेकिन मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी अतः धैर्य पूर्वक अपना समय व्यतीत करें।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न नहीं होंगे साथ ही आत्मविश्वास एवं साहस के भाव की भी न्यूनता रहेगी। इस समय विगत रुके हुए कार्यों में सफलता अल्प ही प्राप्त होगी। आर्थिक दृष्टि से स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा लाभ मार्ग अवरुद्ध रहेंगे जिससे यदा कदा आर्थिक परेशानी हो सकती है। व्यापारिक क्षेत्र में भी उन्नति सामान्य रहेगी तथा नौकरी में पदोन्नति संबधी विलम्ब होगा। सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी न्यूनता आएगी तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे पारिवारिक शांति भी मध्यम रहेगी तथा किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। लेकिन कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा अतः संयम एवं बुद्धिमत्ता पूर्वक कार्य कलापों को सम्पन्न करें तथा जोखिम के कार्यों से दूर रहें।

फलादेश - 2022

गोचरवश इस वर्ष बृहस्पति का भ्रमण पंचम भाव में होगा। अतः यह समय आपके लिए भाग्यशाली रहेगा। इस समय ज्योतिष साहित्य एवं संगीत आदि के प्रति आपके मन में रुचि उत्पन्न होगी तथा परिश्रम पूर्वक आप इनका ज्ञान अर्जित करने में तत्पर रहेंगे। आर्थिक स्थिति भी इस समय सन्तोषजनक रहेगी तथा प्रचुर मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा। इस वर्ष में आपको पुत्र संतति की प्राप्ति भी हो सकती है। यदि अविवाहित हैं तो किसी प्रेम प्रसंग का शुभारम्भ होगा। व्यापारिक या कार्यक्षेत्र में उन्नति तथा सफलता के लिए भी यह वर्ष आपके लिए उन्नतिकारक रहेगा एवं आवश्यक मात्रा में धनार्जन भी होगा। इस वर्ष महत्वपूर्ण राजनेताओं तथा उच्चाधिकारी वर्ग से आपके सम्पर्क बनेंगे एवं आपको उनसे मनोवांछित सहयोग तथा लाभ मिलेगा। संतति पक्ष से भी आप पूर्ण रूप से सन्तुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको सहयोग मिलता रहेगा। परन्तु अन्यगोचर फल इस समय शुभ फल प्रदान नहीं करेंगे लेकिन दशा अनुकूल फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भाव दृष्टिगोचर होगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से समय मध्यम रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही सम्पन्न करेंगे। बन्धु एवं परिवार से इस समय न्यूनाधिक सहयोग प्राप्त होगा तथा माता का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। आर्थिक स्थिति इस समय सामान्य रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ व्यय भी होता रहेगा लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति होगी तथा ऋण लेकर आपका कोई आवास या जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ हो सकता है जिसमें वर्तमान में समस्याएं परन्तु भविष्य में इच्छित लाभ की संभावनाएं बनेंगी।

इस समय यद्यपि अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी तथा शनि की दशा का भी प्रभाव रहेगा फलतः यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक समस्याएं तथा मानसिक तनाव हो सकता है अतः इन अशुभ फलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

गोचरवश इस वर्ष में राहु षष्ठ तथा केतु द्वादश भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपके पराक्रम तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष तथा प्रतिद्वन्दियों पर भी आप विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। अतः इस वर्ष आप कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगी परीक्षा में या मुकदद्में आदि में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्वि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक सुदृढता बनी रहेगी। परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह

समय अच्छा नहीं रहेगा तथा उदर सम्बन्धी कष्ट अथवा कब्ज या गैस आदि से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इस समय आपके मन में इच्छाओं की भी वृद्धि होगी जिनमें आप यदा कदा व्यय अधिक करेंगे। इस वर्ष में आय गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी परन्तु शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

मंगल की महादशा में मंगल का अंतर 26/04/2022 को समाप्त होगा। उसके बाद राहु का अंतर प्रारंभ होगा। मंगल प्रथम भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं जबकि राहु पंचम् भाव में मीन राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपके शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्य यथा समय सम्पन्न नहीं होंगे साथ ही आत्मविश्वास एवं साहस के भाव की भी न्यूनता रहेगी। इस समय विगत रुके हुए कार्यों में सफलता अल्प ही प्राप्त होगी। आर्थिक दृष्टि से स्थिति अच्छी नहीं रहेगी तथा लाभ मार्ग अवरुद्ध रहेंगे जिससे यदा कदा आर्थिक परेशानी हो सकती है। व्यापारिक क्षेत्र में भी उन्नति सामान्य रहेगी तथा नौकरी में पदोन्नति संबधी विलम्ब होगा। सामाजिक मान प्रतिष्ठा में भी न्यूनता आएगी तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी आपके लिए अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न करेंगे पारिवारिक शांति भी मध्यम रहेगी तथा किसी सदस्य का स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। लेकिन कोई दुष्प्रभाव नहीं होगा अतः संयम एवं बुद्धिमत्ता पूर्वक कार्य कलापों को सम्पन्न करें तथा जोखिम के कार्यों से दूर रहें।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आपमें दूर दृष्टि तथा व्यवहारिकता का अभाव रहेगा जिससे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी एवं अन्यत्र भी कोई योजना या कार्य सिद्ध नहीं होगा। व्यापार में भी आपको समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा जिससे लाभ एवं उन्नति के मार्ग अवरुद्ध रहेंगे यदि नौकरी में है तो कार्यस्तर में न्यूनता आएगी तथा अधिकारी वर्ग से मधुर सम्बंध न होने के कारण वे आपसे अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। सामाजिक मानप्रतिष्ठा में भी न्यूनता रहेगी तथा मित्रवर्ग से भी उपेक्षा मिलेगी इसके अतिरिक्त वातावरण में भी अशान्ति रहेगी परन्तु दूर समीप की यात्राओं से लाभ होने की पूर्ण सम्भावना रहेगी।

फलादेश - 2023

गोचरवश बृहस्पति की स्थिति इस वर्ष षष्ठ भाव में रहेंगी अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। इस समय शारीरिक स्वास्थ्य विशेष अच्छा नहीं रहेगा एवं मानसिक रूप से भी यदा कदा असन्तुष्टि बनी रहेंगी। अतः सांसारिक कार्य में परिश्रम पूर्वक ही आप उन्नति या सफलता अर्जित कर सकेंगे। व्यापार या नौकरी आदि में भी उन्नति के लिए अधिक पराक्रम एवं संघर्ष करना पड़ेगा तभी सफलता प्राप्त हो सकेंगी। साथ ही समय समय पर शत्रु या विरोधी भी आपके लिए समस्याएं उत्पन्न करेंगे लेकिन उनका सामना करने में आप समर्थ होंगे। इस समय आपका यदा कदा व्यय भी अधिक मात्रा में होगा लेकिन धन एवं लाभ की प्राप्ति आवश्यकतानुसार होती रहेगी। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएं बढ़ेगी।

इसके साथ ही अन्य गोचर शुभ परन्तु दशा अच्छी नहीं रहेंगी अतः शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में प्रारंभ में व्यवधान होंगे लेकिन बाद में स्वपराक्रम परिश्रम एवं बुद्धि से आप उनको सिद्ध करने में समर्थ रहेंगे। अतः यह वर्ष आपके लिए मध्यम रहेगा परन्तु परिश्रम एवं पराक्रम से आपको शुभ फलों की प्राप्ति भी होती रहेंगी अतः अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको बृहस्पति का उपवाश, पूजन तथा दान नियमित रूप से करना चाहिए।

इस वर्ष में गोचर वश शनि चतुर्थ भाव में भ्रमण करेगा। अतः इसके प्रभाव से समय मध्यम रहेगा तथा शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्यों को आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही सम्पन्न करेंगे। बन्धु एवं परिवार से इस समय न्यूनाधिक सहयोग प्राप्त होगा तथा माता का स्वास्थ्य भी मध्यम रहेगा। आर्थिक स्थिति इस समय सामान्य रहेगी तथा धनार्जन के साथ साथ व्यय भी होता रहेगा लेकिन आर्थिक स्थिति पर इसका कोई विशेष प्रभाव नहीं व्यापारिक तथा कार्य क्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति होगी तथा ऋण लेकर आपका कोई आवास या जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ हो सकता है जिसमें वर्तमान में समस्याएं परन्तु भविष्य में इच्छित लाभ की संभावनाएं बनेंगी।

इस समय यद्यपि अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशाफल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी तथा शनि की दशा का भी प्रभाव रहेगा फलतः यदा कदा शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अनावश्यक समस्याएं तथा मानसिक तनाव हो सकता है अतः इन अशुभ फलों को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे अशुभ प्रभाव कम होंगे तथा शुभ फलों में वृद्धि होगी।

गोचरवश इस वर्ष में राहु षष्ठ तथा केतु द्वादश भाव में रहेगा। अतः यह वर्ष आपके लिए मिश्रित फल प्रदान करने वाला होगा। इस समय आपके पराक्रम तथा प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा समाज में सभी लोग आपका यथोचित सम्मान करेंगे। साथ ही शत्रुपक्ष तथा प्रतिद्वन्दियों पर भी आप विजय प्राप्त करने में आप सफल रहेंगे। अतः इस वर्ष आप कोई महत्वपूर्ण प्रतियोगी परी

क्षा में या मुकदद्में आदि में आपको सफलता प्राप्त हो सकती हैं। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष आपके लिए अच्छा रहेगा तथा आय स्रोतों में भी वृद्वि होगी फलतः आवश्यक मात्रा में लाभ एवं धनार्जन होता रहेगा जिससे आर्थिक सुदृढता बनी रहेगी। परन्तु शारीरिक स्वास्थ्य की दृष्टि से यह समय अच्छा नहीं रहेगा तथा उदर सम्बन्धी कष्ट अथवा कब्ज या गैस आदि से आप परेशानी की अनुभूति करेंगे। साथ ही इस समय आपके मन में इच्छाओं की भी वृद्धि होगी जिनमें आप यदा कदा व्यय अधिक करेंगे। इस वर्ष में आय गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा परन्तु दशा शुभ फल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता आएगी परन्तु शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

मंगल की महादशा में राहु का अंतर 15/05/2023 को समाप्त होगा। उसके बाद गुरु का अंतर प्रारंभ होगा। राहु पंचम् भाव में मीन राशि में स्थित हैं जबकि गुरु चतुर्थ भाव में कुम्भ राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष अच्छा नहीं रहेगा। इस समय आपमें दूर दृष्टि तथा व्यवहारिकता का अभाव रहेगा जिससे शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में सफलता नहीं मिलेगी एवं अन्यत्र भी कोई योजना या कार्य सिद्ध नहीं होगा। व्यापार में भी आपको समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ेगा जिससे लाभ एवं उन्नति के मार्ग अवरुद्ध रहेंगे यदि नौकरी में है तो कार्यस्तर में न्यूनता आएगी तथा अधिकारी वर्ग से मधुर सम्बंध न होने के कारण वे आपसे अप्रसन्न तथा असन्तुष्ट रहेंगे। सामाजिक मानप्रतिष्ठा में भी न्यूनता रहेगी तथा मित्रवर्ग से भी उपेक्षा मिलेगी इसके अतिरिक्त वातावरण में भी अशान्ति रहेगी परन्तु दूर समीप की यात्राओं से लाभ होने की पूर्ण सम्भावना रहेगी।

यह समय आपके लिए विशेष शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगा। व्यापार में इस समय लाभ एवं उन्नति मार्ग अवरुद्ध होंगे तथा हानि की भी संभावना रहेगी। परिवार के सदस्यों से भी वांछित सहयोग नहीं मिलेगा तथा परस्पर मतभेदों के कारण परिवार में अशांति का वातावरण रहेगा यदि नौकरी में है तो वरिष्ठ सहयोगी तथा अधिकारियों से अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा पदोन्नति में व्यवधान तथा विलम्ब होगा बेरोजगारों को परिश्रम से भी रोजगार की प्राप्ति नहीं होगी साथ ही मित्रवर्ग से इच्छित लाभ एवं सहयोग नहीं मिलेगा इसके अतिरिक्त अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होगी जिनसे कोई लाभ नहीं होगा परन्तु शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में समर्थ रहेंगे अतः संयम पूर्वक समय व्यतीत करना चाहिए।

फलादेश - 2024

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति की स्थिति सप्तम भाव में रहेगी। अतः यह वर्ष आपके लिए शुभ फलदायक रहेगा। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में इस समय आपकी उन्नति के मार्ग प्रशस्त होंगे तथा कोई अचानक सफलता भी प्राप्त होगी। साथ ही बेरोजगारों को रोजगार मिलने की भी प्रबल संभावनाएँ बनेंगी। इस वर्ष अविवाहितों का विवाह भी हो सकता है। दाम्पत्य सुख इस वर्ष आपका उत्तम रहेगा तथा स्त्री से पूर्ण सुख एवं सहयोग प्राप्त करेंगे तथा परस्पर संबन्धों में भी मधुरता रहेगी। समाज में इस समय आपकी मान प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा सभी लोग आपके प्रभाव को स्वीकार करेंगे एवं आपका हार्दिक सम्मान करेंगे। आर्थिक दृष्टि से भी समय शुभ रहेगा एवं प्रचुर मात्रा में धनार्जन होगा एवं अतिरिक्त आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। लेकिन व्यय भी यदा कदा अधिक ही होगा। इसके साथ ही अन्य गोचरफल तथा दशाफल भी उत्तम रहेंगे अतः यह वर्ष आपके लिए महत्वपूर्ण तथा भाग्यशाली रहेगा।

इस वर्ष में शनि का संक्रमण चतुर्थ भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपका समय सामान्यतया अच्छा रहेगा तथा व्यापारिक एवं कार्य क्षेत्र में विस्तार तथा उन्नति की संभावना रहेगी। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आप सन्तुष्टि की अनुभूति करेंगे। बन्धु एवं पारिवारिक जनों से आपको सहयोग मिलता रहेगा तथा माता का स्वास्थ्य भी अनुकूल रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष अच्छा रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में आप समर्थ रहेंगे। इस समय आप नवीन कार्य अथवा आवास या जमीन जायदाद संबंधी कार्य भी प्रारंभ कर सकते हैं। यद्यपि प्रारंभ में किंचित समस्याएं उत्पन्न होंगी परन्तु भविष्य में इससे लाभ होगा।

इसके साथ ही इस वर्ष में अन्य गोचर तथा दशाफल भी अनुकूल रहेंगे अतः आपको सफलताएं समय समय पर मिलती रहेंगी। परन्तु शनि की दशा के प्रभाव से यदा कदा मानसिक तनाव उत्पन्न हो सकता है एवं महत्वपूर्ण कार्यों में व्यवधान या विलम्ब की संभावना बनेंगी। अतः इसके प्रभाव को कम करने के लिए आपको नियमित रूप से शनि का पूजन तथा दान करना चाहिए एवं शनिवार को बाएं हाथ की मध्यम अंगुली में नीलम या लोहे की अंगूठी धारण करनी चाहिए। इससे समस्त बाधाएं दूर होगी एवं आप मानसिक रूप से सन्तुष्टि तथा प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे।

इस वर्ष में गोचरवश राहु पंचम तथा केतु एकादश भाव में भ्रमण करेगा। इनके प्रभाव से इस वर्ष आपको शुभ फलों की प्राप्ति होगी। इस समय आपकी मानसिक स्थिति अच्छी रहेगी तथा मन में अनावश्यक चिन्ता तथा परेशानियों का अभाव रहेगा। इस समय आपके प्रेम प्रसंग स्थापित होने की संभावना रहेगी। साथ ही सन्तति पक्ष से आपको संतुष्टि मिलेगी तथा उनका स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन तथा लाभ की प्राप्ति होती रहेगी। साथ ही अनायास ही धन या लाभ प्राप्ति के योग भी बनेंगे। कार्यक्षेत्र में इस समय उन्नति होती रहेगी एवं किसी राजनैतिक महत्व के व्यक्ति या उच्चाधिकारी वर्ग से आपका सम्बन्ध होगा जिससे भविष्य में आपको इचिछत लाभ एवं सहयोग प्राप्त होगा। साथ ही

आय गोचरफल तथा दशाफल भी शुभ ही रहेंगे। अतः वर्ष अच्छा व्यतीत होगा।

मंगल की महादशा में गुरु का अंतर 20/04/2024 को समाप्त होगा। उसके बाद शनि का अंतर प्रारंभ होगा। गुरु चतुर्थ भाव में कुम्भ राशि में स्थित हैं जबकि शनि दशम् भाव में सिंह राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए विशेष शुभ एवं अनुकूल नहीं रहेगा। व्यापार में इस समय लाभ एवं उन्नति मार्ग अवरुद्ध होंगे तथा हानि की भी संभावना रहेगी। परिवार के सदस्यों से भी वांछित सहयोग नहीं मिलेगा तथा परस्पर मतभेदों के कारण परिवार में अशांति का वातावरण रहेगा यदि नौकरी में है तो वरिष्ठ सहयोगी तथा अधिकारियों से अच्छे संबध नहीं रहेंगे तथा पदोन्नति में व्यवधान तथा विलम्ब होगा बेरोजगारों को परिश्रम से भी रोजगार की प्राप्ति नहीं होगी साथ ही मित्रवर्ग से इच्छित लाभ एवं सहयोग नहीं मिलेगा इसके अतिरिक्त अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होगी जिनसे कोई लाभ नहीं होगा परन्तु शत्रु एवं प्रतिद्वन्दियों को पराजित करने में समर्थ रहेंगे अतः संयम पूर्वक समय व्यतीत करना चाहिए।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। इस समय सक्रियता एवं सृजनात्मक प्रवृति के अभाव में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। व्यापार में भी समय अच्छा नहीं रहेगा तथा हानि के योग बनेंगे। नौकरी में भी परेशानी की अनुभूति करेंगे तथा अधिकारी वर्ग से भी सम्बंधों में तनाव रहेगा। परिवार में भी सुख शान्ति की अल्पता रहेगी तथा सदस्यों का आपस में प्रेम एवं सहयोग की न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी। अतः ऐसे समय में आपको धैर्यपूर्वक समय व्यतीत करना चाहिएं।

फलादेश - 2025

इस वर्ष में बृहस्पति का गोचरीय भ्रमण अष्टम भाव में रहेगा। अतः यह समय आपके लिए मध्यम रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ रहेंगे परन्तु यदा कदा मानसिक तनाव से आपको किंचित मात्रा में परेशानी हो सकती है। इस समय सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आप परिश्रम एवं पराक्रम से ही इच्छित सफलता अर्जित करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही नौकरी राजनीति या व्यापारिक क्षेत्र में शत्रु तथा विरोधी पक्ष के द्वारा समस्याएं भी उत्पन्न हो सकती हैं जिससे उन्नति मार्ग में बाधाएं आएंगी लेकिन आप परिश्रम पूर्वक इनका समाधान करेंगे। इस वर्ष में आपका कोई मुकद्दमा भी प्रारंभ हो सकता है। आर्थिक स्थिति इस समय मध्यम रहेगी तथा आय के साथ साथ व्यय की भी अधिकता होगी परन्तु लाभमार्ग प्रशस्त करने के लिए आप यत्नशील रहेंगे। इस समय आपको किसी विशिष्ट लाभ की प्राप्ति की संभावना रहेगी साथ ही ज्योतिष या तंत्र मंत्र आदि में आपकी श्रद्धा उत्पन्न होगी एवं न्यूनाधिक ज्ञान भी अर्जित कर सकते है।

इसके साथ ही अन्य गोचर फल शुभ परन्तु दशा मध्यम रहेगी अतः सर्वत्र आप अतिरिक्त परिश्रम एवं पराक्रम से ही सफलता अर्जित कर सकेंगे। साथ ही अधिक शुभ फलों की प्राप्ति के लिए आपको नियमित रूप से बृहस्पति के व्रत, पूजा तथा दानादि कार्य करना चाहिए।

गोचर वश शनि का भ्रमण इस वर्ष में पंचम भाव में रहेगा। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य मध्यम रहेगा तथा मानसिकता में भी परिवर्तन होगा। साथ ही आप अपने सांसारिक महत्व के कार्यों को परिश्रम एवं उत्साह से सम्पन्न करने में तत्पर रहेंगे तथा इनमें न्यूनाधिक सफलता भी मिलती रहेगी। समाज में अन्य जनों से आपके संबंध सामान्य रहेंगे तथा उनसे आदर भी प्राप्त होगा। आर्थिक स्थिति इस समय अच्छी रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धनार्जन होगा। साथ ही परिश्रम पूर्वक आपके आय स्रोतों में भी वृद्धि होगी। संतति पक्ष से सुख सहयोग मध्यम रहेगा तथा अपने कार्य क्षेत्र में वे परिश्रम पूर्वक उन्नति एवं सफलता अर्जित कर सकेंगे। साथ ही दाम्पत्य सुख भी मध्यम रहेगा तथा यदा कदा पत्नी का स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है।

इस समय अन्य गोचर फल शुभ रहेंगे परन्तु दशा फल विशेष अनुकूल नहीं रहेगी फलतः सांसारिक महत्व के कार्यों में यदा कदा व्यवधान एवं समस्याएं उत्पन्न होगी लेकिन परिश्रम एवं पराक्रम से आप इनका समाधान करने में समर्थ रहेंगे। इस वर्ष राजनैतिक लोगों से भी आपके सम्पर्क स्थापित होंगे परन्तु उनसे विशेष लाभ एवं सहयोग अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा। अतः परिश्रम पूर्वक कार्यों को सम्पन्न करने में तत्पर रहें।

गोचरवश इस वर्ष में आपकी कुळँली में राहु की स्थिति चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से यह वर्ष आपके लिए सामान्यतया शुभ रहेगा। शारीरिक तथा मानसिक रूप से इस समय आप प्रसन्न तथा स्वस्थ रहेंगे तथा आनन्दपूर्वक अपने समय को

व्यतीत करेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद सम्बन्धी कोई क्रय विक्रय कर सकते हैं या वाहन आदि के भी क्रय विक्रय की भी संभावना रहेगी। आर्थिक दृष्टि से आपकी स्थिति सामान्य रहेगी तथा आवश्यक मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में परिश्रमपूर्वक सफल रहेंगे। आपके आय स्रोतों में भी इस समय वृद्धि होगी। व्यापारिक तथा कार्यक्षेत्र में भी आप सामान्यतया उन्नतिशील रहेंगे एवं सफलता के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। परन्तु माता पिता के लिए यह वर्ष मध्यम रहेगा तथा यदा कदा वे शारीरिक या मानसिक रूप से कष्ट की अनुभूति कर सकते हैं। इस वर्ष में आपकी दूर समीप की यात्राएँ समय समय पर हो सकती हैं। लेकिन गोचरफल आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथापि दशा शुभ फल प्रदान करेगी । अतः उपर्युक्त शुभ फलों में यदा कदा न्यूनता का भी आभास होगा परन्तु अन्ततोगत्वा शुभ फल ही अधिक मात्रा में घटित होंगे।

मंगल की महादशा में शनि का अंतर 30/05/2025 को समाप्त होगा। उसके बाद बुध का अंतर प्रारंभ होगा। शनि दशम् भाव में सिंह राशि में स्थित हैं जबकि बुध एकादश भाव में कन्या राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा। इस समय सक्रियता एवं सृजनात्मक प्रवृति के अभाव में आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। व्यापार में भी समय अच्छा नहीं रहेगा तथा हानि के योग बनेंगे। नौकरी में भी परेशानी की अनुभूति करेंगे तथा अधिकारी वर्ग से भी सम्बंधों में तनाव रहेगा। परिवार में भी सुख शान्ति की अल्पता रहेगी तथा सदस्यों का आपस में प्रेम एवं सहयोग की न्यूनता रहेगी। इसके अतिरिक्त अनिच्छित तथा व्यर्थ की यात्राएं भी सम्पन्न होंगी। अतः ऐसे समय में आपको धैर्यपूर्वक समय व्यतीत करना चाहिएं।

यह समय आपके विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में कठिनाई का सामना करना पडेगा साथ ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली लोगों के सम्पर्को में अल्पता रहेगी। आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी एवं लाभ मार्ग अवरुद्ध रहेंगे फलतः यदा कदा आर्थिक परेशानी का सामना करना पडसकता है व्यापार में भी समस्याएं उत्पन्न होगी। इस समय व्यापार में विस्तार या नवीन योजनाओं के प्रारंभ की संभावना नहीं बनेगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति में विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधों में तनाव रहेगा जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होगी यात्राएं भी अनिच्छित तथा व्यर्थ की होंगी तथा मान प्रतिष्ठा में भी कमी आएगी इसके अतिरिक्त परिवार में अशांति रहेगी तथा सदस्यों से सहयोग अल्प ही मिलेगा अतः धैर्य पूर्वक समय व्यतीत करें।

फलादेश - 2026

इस वर्ष में गोचरवश बृहस्पति की स्थिति नवम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से यह समय आपके लिए अत्यन्त सौभाग्यशाली रहेगा। इस समय धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा उत्पन्न होगी तथा परोपकार संबन्धी कार्यों को भी आप सम्पन्न करेंगे। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप स्वस्थ एवं प्रसन्न रहेंगे। इस समय आपके विगत सभी रुके हुए कार्य पूर्ण होंगे। तथा नवीन व्यापारिक या अन्य लाभदायी योजनाएँ भी बनेंगी साथ ही कार्य क्षेत्र में आप इच्छित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। नौकरी या राजनीति के क्षेत्र में आपको किसी महत्वपूर्ण पद की प्राप्ति हो सकती है। साथ ही समाज में आपकी प्रतिष्ठा तथा मान सम्मान की वृद्धि होगी तथा प्रसिद्धि भी दूर दूर तक फैलेगी। आर्थिक दृष्टि से भी यह वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में आप धन तथा लाभ प्राप्त करने में समर्थ रहेंगे। साथ ही कोई भाग्योदय संबन्धी कार्य भी सम्पन्न होगा। इसके अतिरिक्त आय दशाफल तथा गोचरफल भी आपके लिए अनुकूल रहेंगे। अतः वर्ष अत्यन्त ही शुभ एवं महत्वपूर्ण रहेगा।

इस वर्ष में गोचर वश शनि की स्थिति पंचम भाव में रहेगी। अतः इसके प्रभाव से आपका शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को आप उत्साह एवं परिश्रम से सम्पन्न करेंगे। इस समय आपकी मानसिकता में परिवर्तन की संभावना रहेगी। सामाजिक जनों से आपके संबंध अच्छे रहेंगे तथा उनसे मान सम्मान प्राप्त होता रहेगा। आर्थिक दृष्टि से वर्ष उत्तम रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ की प्राप्ति होगी। साथ ही आय स्रोतों में वृद्धि होगी। संतति पक्ष से आपको सन्तुष्टि रहेगी तथा अपने क्षेत्र में वे उन्नतिशील रहेंगे। इस समय स्त्री का स्वास्थ्य भी अच्छा रहेगा एवं परस्पर संबंधों में मधुरता रहेगी तथा उनसे सुख एवं सहयोग प्राप्त होगा।

इस वर्ष अन्य गोचर तथा दशाफल भी शुभ एवं अनुकूल रहेंगे। अतः आपको प्रत्येक क्षेत्र में सफलता की प्राप्ति होगी। साथ ही राजनैतिक व्यक्तियों से भी आप संबंध स्थापित करेंगे एवं उनसे उचित लाभ एवं सहयोग प्राप्त करेंगे। इस वर्ष में आपको किसी विशिष्ट लाभ की भी प्राप्ति हो सकती है अतः अपने शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को सिद्ध करने में तत्पर रहेंगे तथा समय का सदुपयोग करें।

इस वर्ष में गोचरवश आपकी कुडँली में राहु की स्थिति। चतुर्थ तथा केतु की दशम भाव में रहेगी। इनके प्रभाव से आपके लिए यह वर्ष सामान्यतया शुभ ही रहेगा। शारीरिक एवं मानसिक रूप से आप इस समय स्वस्थ तथा प्रसन्न रहेंगे। इस वर्ष में जमीन जायदाद संबन्धी कोई क्रय विक्रय करेंगे या वाहन आदि पर व्यय करेंगे। आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा तथा प्रचुर मात्रा में धन एवं लाभ अर्जित करने में सफल रहेंगे। साथ ही आय स्रोतों में भी वृद्धि की संभावनाएँ बनेंगी। कार्यक्षेत्र में भी इस समय आपकी स्थिति सन्तोषप्रद रहेगी तथा उन्नति के मार्ग पर अग्रसर रहेंगे। माता पिता की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा तथा शारीरिक एवं मानसिक रूप से वे स्वस्थ एवं प्रसन्नता की अनुभूति करेंगे। इस वर्ष में आपकी दूर समीप

की यात्राएँ भी अधिक मात्रा में होंगी। अन्य गोचरफल तथा दशा शुभफल प्रदान करेगी। अतः उपर्युक्त शुभ फलों में वृद्धि होगी तथा आपका समय सामान्यतया सुखपूर्वक व्यतीत होगा।

इस वर्ष मंगल की महादशा में तीन ग्रहों की अंतर्दशा रहेगी। इस वर्ष बुध का अंतर 27/05/2026 को समाप्त होगा। उसके बाद केतु अंतर्दशा प्रारंभ होगी तथा 23/10/2026 तक चलेगी। इस वर्ष का अंत शुक्र की अंतर्दशा में होगा। आपकी जन्मकुंडली में महादशा का स्वामी प्रथम भाव में वृश्चिक राशि में स्थित हैं।

यह समय आपके विशेष अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपको सभी शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में कठिनाई का सामना करना पडेगा साथ ही महत्वपूर्ण एवं प्रभावशाली लोगों के सम्पर्को में अल्पता रहेगी। आर्थिक स्थिति में भी अस्थिरता रहेगी एवं लाभ मार्ग अवरुद्ध रहेंगे फलतः यदा कदा आर्थिक परेशानी का सामना करना पडसकता है व्यापार में भी समस्याएं उत्पन्न होगी। इस समय व्यापार में विस्तार या नवीन योजनाओं के प्रारंभ की संभावना नहीं बनेगी यदि नौकरी में है तो पदोन्नति में विलम्ब होगा तथा अधिकारी वर्ग से संबधों में तनाव रहेगा जिससे अनावश्यक समस्याएं उत्पन्न होगी यात्राएं भी अनिच्छित तथा व्यर्थ की होंगी तथा मान प्रतिष्ठा में भी कमी आएगी इसके अतिरिक्त परिवार में अशांति रहेगी तथा सदस्यों से सहयोग अल्प ही मिलेगा अतः धैर्य पूर्वक समय व्यतीत करें।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा तथा आपकी कोई भी इच्छा पूर्ण नहीं होंगी साथ ही योजनाओं में भी व्यवधान आएंगे व्यापार में भी अनावश्यक समस्याओं तथा परेशानियों का सामना करना पड़ेगा एवं हानि की भी सम्भावना रहेगी यदि नौकरी में है तो अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव रहेगा जिससे वे आपसे सन्तुष्ट रहेंगे। इसके अतिरिक्त ऐसे समय में प्रभावशाली व्यक्तियों से भी सम्पर्को में न्यूनता आएगी तथा शत्रु एवं प्रतिद्वन्दी भी आवश्यक बाधाएं उत्पन्न करेंगे अतः इनसे सावधान रहना चाहिए।

यह समय आपके लिए अच्छा नहीं रहेगा इस समय आपमें सक्रियता के भाव का अभाव रहेगा तथा जल्दबाजी से कार्यों को सम्पन्न करेंगे जिससे आपको वांछित परिणामों की प्राप्ति नहीं होगी। व्यापार के लिए भी समय अनुकूल नहीं रहेगा तथा अनावश्यक समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। यदि नौकरी में हैं तो पदोन्नति सम्बंधी विलम्ब एवं व्यवधान होंगे तथा अधिकारी वर्ग से सम्बंधों में तनाव के कारण भी समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। आर्थिक दृष्टि से भी समय अच्छा नहीं रहेगा तथा आय स्रोतों में कमी के कारण आपको आर्थिक परेशानी का सामना करना पड़ेगा। परिवार के सदस्यों का भी विशेष सहयोग नहीं मिलेगा तथा आपस में मतभेद के कारण पारिवारिक अशान्ति रहेगी। लेकिन मान प्रतिष्ठा बनी रहेगी अतः धैर्य पूर्वक अपना समय व्यतीत करें।